राष्ट्रीय दैनिक

# प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 मुझे नहीं लगता की हम...

न्यू हैंपशर में रिपब्लिकन... 12

वर्ष : 14 | अंक : 253 | नई दिल्ली, गुरुवार, 25 जनवरी, 2024 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

अधिकतम तापमान 15°C
न्यूनतम तापमान 10°C

**बाजार**

सोना 64,410

चांदी 78,900

सेंसेक्स 71,360

निफ्टी 21,453

# भारत, फ्रांस, यूएई ने अरब सागर के ऊपर किया विशाल हवाई युद्धाभ्यास

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेसी। भारत, फ्रांस और संयुक्त अरब अमीरात ने अरब सागर के ऊपर एक विशाल हवाई युद्धाभ्यास किया। यह युद्धाभ्यास क्षेत्र से गुजरते रणनीतिक जलमार्गों पर कई वाणिज्यिक जहाजों को हुती आतंकवादियों द्वारा निशाना बनाए जाने को लेकर बढ़ रही वैश्विक चिंताओं की पृष्ठभूमि में हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि मंगलवार को आयोजित युद्धाभ्यास डेजर्ट नाइट में तीन देशों की वायु सेनाओं की कई अग्रिम पंक्ति के विमान और लड़ाकू विमान शामिल हुए।

उन्होंने बताया कि युद्धाभ्यास में भारतीय वायु सेना के सुखोई-30 एमकेआई, मिग-29 और जगुआर लड़ाकू विमान के अलावा एडब्ल्यूएसीएस (हवाई प्रारंभिक चेतावनी और नियंत्रण विमान), सी-130-जे परिवहन विमान और हवा में ही विमानों में ईंधन भरने वाले विमान शामिल हुए। भारतीय वायुसेना ने बताया, डेजर्ट नाइट नाम से आयोजित युद्धाभ्यास के दौरान मुख्य रूप से तीनों वायु सेनाओं के बीच तालमेल और पारस्परिकता को मजबूत करने पर जोर था। यह युद्धाभ्यास भारतीय एफआईआर (उड़ान सूचना क्षेत्र) में हुआ और भारतीय वायुसेना के विमानों ने देश के कई ठिकानों से उड़ान भरी। दुनिया भर में सभी हवाई क्षेत्र को एफआईआर में विभाजित किया गया है और उनमें से प्रत्येक को एक नियंत्रक प्राधिकरण द्वारा प्रबंधित किया जाता है जो यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है कि इसके भीतर उड़ान भरने वाले विमानों को हवाई यातायात सेवाएं प्रदान की जाएं। यह युद्धाभ्यास लाल सागर में वाणिज्यिक जहाजों पर हुती आतंकवादियों के बढ़ते हमलों के बीच हुआ। भारतीय वायुसेना ने बताया, 23 जनवरी को, भारतीय वायु सेना ने फ्रांसीसी हवाई व अंतरिक्ष बल और संयुक्त अरब अमीरात की वायु सेना के साथ डेजर्ट नाइट युद्धाभ्यास का आयोजन किया। बयान के मुताबिक, फ्रांस की ओर से राफेल लड़ाकू विमान और एक बहु भूमिका टैंकर परिवहन विमान शामिल हुए जबकि यूएई की वायु सेना की ओर से एफ -16 लड़ाकू विमान युद्धाभ्यास में शामिल हुए। फ्रांस और यूएई वायुसेना के विमानों ने संयुक्त अरब अमीरात में अल धफरा हवाई अड्डे से उड़ान भरी। भारतीय वायुसेना ने कहा, युद्धाभ्यास के दौरान हुए संवाद से प्रतिभागियों को परिचालन ज्ञान, अनुभव और सर्वोत्तम तरीकों के आदान-प्रदान का अवसर मिला।

## संक्षिप्त खबरें

### मुर्मु, मोदी और खड़गे ने उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस पर शुभकामनाएं दी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस पर राज्य के लोगों शुभकामनाएं दी हैं। राष्ट्रपति ने सोशल मीडिया पर अपने संदेश में कहा, उत्तर प्रदेश दिवस पर राज्य के सभी निवासियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। देश में सबसे अधिक आबादी वाला यह राज्य भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। मैं उत्तर प्रदेश के कौशलयुक्त, परिश्रमी और निष्ठावान लोगों के सुख-समृद्धि की मंगल कामना करती हूं। मुझे विश्वास है कि यह राज्य और यहां के निवासी सदा विकास के पथ पर अग्रसर रहेंगे। श्री मोदी ने कहा, अध्यात्म, ज्ञान और शिक्षा की तपोभूमि उत्तर प्रदेश के अपने सभी परिवारजनों को राज्य के स्थापना दिवस की अनेकानेक शुभकामनाएं। बीते सात वर्षों में प्रदेश ने प्रगति की एक नई गाथा लिखी है, जिसमें राज्य सरकार के साथ जनता-जनार्दन ने भी बढ़-चढ़कर भागीदारी की है। मुझे विश्वास है कि विकसित भारत की संकल्प यात्रा में उत्तर प्रदेश अग्रणी भूमिका निभाएगा। श्री खड़गे ने कहा, अपने आध्यात्मिक गौरवशाली इतिहास से परिपूर्ण, जहाँ भगवान श्री राम हों, भगवान श्रीकृष्ण हों, बाबा विश्वनाथ हों, कबीर हों, या गुरु रैदास सभी के पावन चरण समाएँ हैं – उस अनूठी गंगा-जमुनी संस्कृति के महासंगम, उत्तर प्रदेश के सभी नागरिकों को स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। अनेकों संतो, महान विभूतियों और स्वतंत्रता सेनानियों की पावन जन्मभूमि व कर्मभूमि है, ये महान प्रदेश। आप सभी की खुशहाली व तरक़्क़ी की हम कामना करते हैं।

### मीनाक्षी लेखी ने किया सहज गीता का विमोचन

नई दिल्ली। विदेश एवं संस्कृति राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को अनूठा बताया है और कहा है कि आनंदमय और सरल जीवन के लिये गीता के मूल सिद्धांत को अपनाया जा सकता है। श्रीमती लेखी ने यहां एक समारोह में श्री भगवद्गीता के सरल अनुवाद की पुस्तक सहज गीता का विमोचन करते हुये कहा कि आम जनमानस में गीता को उसको वास्तविक अर्थो में पहुंचाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक इस उद्देश्य की पूर्ति करती है। इस अवसर पर राज्य सभा के उप सभापति हरिवंश और पुस्तक के लेखक अविनाश कुमार उपस्थित रहे। पुस्तक का विमोचन कल देर शाम किया गया। श्रीमती लेखी ने कहा कि गीता भारतीय जनमानस में रची बसी है और आनंदमय और सरल जीवन के लिये गीता के मूल सिद्धांत को अपनाया जा सकता है। ह्लसहज गीताह्व में संपूर्ण भगवद्गीता को सरल हिंदी काव्यात्मक शैली में लिखा गया है, जिसके रचनाकार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर और भारतीय प्रबंधन संस्थान, बेंगलुरु के पूर्व छात्र अविनाश कुमार हैं। यह पुस्तक भगवद्गीता का हिंदी काव्यात्मक शैली में सरल अनुवाद और लयबद्ध लिपि होने के अलावा, रोजमर्रा के जीवन के उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक का प्रकाशन प्रभात प्रकाशन ने किया है।

# कर्पूरी ठाकुर से प्रेरणा लेते हुए काम कर रही केंद्र सरकार : मोदी

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को जननायक कपूर्री ठाकुर की 100वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और कहा कि उनके नेतृत्व में केन्द्र सरकार निरंतर कपूर्री ठाकुर से प्रेरणा लेते हुए काम कर रही है जो सरकार की उन नीतियों में भी परिलक्षित होती हैं, जिनसे देशभर में सकारात्मक बदलाव भी आया है। भारत सरकार ने बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर को मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित करने का फैसला किया। राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में मंगलवार इसकी घोषणा हुई। यह घोषणा कपूर्री ठाकुर की 100वीं जयंती से एक दिन पहले की गई।

प्रधानमंत्री ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, देशभर के मेरे परिवारजनों की ओर से जननायक कपूर्री ठाकुर जी को उनकी जन्म-शताब्दी पर मेरी आदरपूर्ण श्रद्धांजलि। इस विशेष अवसर पर हमारी सरकार को उन्हें भारत रत्न से सम्मानित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ठाकुर ने भारतीय समाज और राजनीति पर जो अविस्मरणीय छाप छोड़ी है, उसे लेकर प्रधानमंत्री ने अपनी भावनाओं और विचारों को नमो ऐप पर लिखे अपने एक लेख के माध्यम से एक्स पर साझा किया। उन्होंने कहा, हमारी सरकार निरंतर जननायक कपूर्री ठाकुर जी से प्रेरणा लेते हुए काम कर रही है। यह हमारी नीतियों और योजनाओं में भी दिखाई देता है, जिससे देशभर में सकारात्मक बदलाव आया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीय राजनीति की सबसे बड़ी त्रासदी यह रही थी कि कपूर्री ठाकुर जैसे कुछ नेताओं को छोड़कर सामाजिक न्याय की बात बस एक राजनीतिक नारा बनकर रह

गई थी। उन्होंने कहा, कपूर्री ठाकुर की दृष्टि से प्रेरित होकर हमने इसे शासन के एक प्रभावी मॉडल के रूप में लागू किया। मैं विश्वास और गर्व के साथ कह सकता हूं कि भारत के 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालने की उपलब्धि पर आज वह जरूर गौरवान्वित होते। उन्होंने कहा कि गरीबी से बाहर निकलने वालों में समाज के सबसे पिछड़े तबके के लोग सबसे ज्यादा हैं, जो आजादी के 70 साल बाद भी बुनियादी सुविधाओं से वंचित थे। उन्होंने कहा कि पिछड़े वर्ग से ताल्लुक रखने वाले एक व्यक्ति के रूप में उन्हें कपूर्री ठाकुर के जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिला है। उन्होंने कहा, मेरे जैसे कई लोगों के जीवन में कपूर्री बाबू का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष योगदान रहा है। इसके लिए मैं उनका सदैव आभारी रहूंगा। उन्होंने कहा, दुर्भाग्यवश, हमने कपूर्री ठाकुर को 64 वर्ष की आयु में ही खो दिया। हमने उन्हें तब खोया, जब देश को उनकी सबसे अधिक जरूरत थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि भले ही वह आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन जन-कल्याण के अपने कार्यों की वजह से करोड़ों देशवासियों के दिल और दिमाग में जीवित हैं। उन्होंने कहा, वह एक सच्चे जननायक थे।

## जाति जनगणना ही कर्पूरी ठाकुर को सच्ची श्रद्धांजलि होगी : राहुल

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने महान नेता कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न दिए जाने का स्वागत करते हुए उन्हें सामाजिक न्याय का महान योद्धा बताया और जन्म शताब्दी पर आज नमन किया। श्री गांधी ने कहा, सामाजिक न्याय के अप्रतिम योद्धा जननायक कपूर्री ठाकुर जी को उनकी जन्म शताब्दी पर सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। वह निश्चित ही भारत के अनमोल रत्न हैं और उन्हें मरणोपरांत भारत रत्न दिए जाने के फैसले का स्वागत है। उन्होंने भाजपा सरकार पर भी हमला किया और कहा कि 2011 में हुई सामाजिक और आर्थिक जातीय जनगणना के नतीजों को भाजपा सरकार द्वारा छिपाना और राष्ट्रव्यापी जनगणना के प्रति उनकी उदासीनता सामाजिक न्याय के आंदोलन को कमजोर करने का प्रयास है। भागीदारी न्याय भारत जोड़ो न्याय यात्रा के पांच न्यायों में से एक प्रमुख न्याय और सामाजिक समानता का केंद्र बिंदु है जिसकी शुरूआत सिर्फ जातिगत जनगणना के बाद ही हो सकती है। श्री गांधी ने कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न दिए जाने को सही कदम बताया और कहा सही मायने में यह कदम जननायक कपूर्री ठाकुर जी और पिछड़ों एवं वंचितों के अधिकारों के लिए उनके संघर्षों को सच्ची श्रद्धांजलि भी होगा। देश को अब सांकेतिक राजनीति नहीं वास्तविक न्याय चाहिए। कांग्रेस संचार विभाग की प्रभारी जयराम रमेश ने कहा, जननायक कपूर्री ठाकुर जी को भारत रत्न दिया जाना भले ही मोदी सरकार की हताशा और पाखंड को दशार्ता है फिर भी कांग्रेस उनको मरणोपरांत भारत रत्न दिए जाने का स्वागत करती है। सभी वर्गों को भागीदारी देने के लिए जातिगत जनगणना कराना ही सही मायनों में जननायक कपूर्री ठाकुर जी को सबसे उचित श्रद्धांजलि होती मगर मोदी सरकार इससे भाग रही है।

# ममता के बिना इंडिया गठबंधन की कल्पना नहीं : कांग्रेस

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली/गुवाहटी। कांग्रेस ने बुधवार को कहा कि तृणमूल कांग्रेस की नेता ममता बनर्जी इंडिया गठबंधन का अहम हिस्सा हैं और उनके बिना इस गठबंधन का कोई महत्व नहीं है।

कांग्रेस संचार विभाग के प्रभारी जयराम रमेश ने असम के गुवाहाटी में आज संवाददाता सम्मेलन में एक सवाल के जवाब में कहा, ममता ने कहा कि हम भाजपा को हराना चाहते हैं। भाजपा को हराने के लिए कोई कदम पीछे नहीं छोड़ेगे और उनकी इसी भावना के साथ राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा पश्चिम बंगाल में प्रवेश कर रही है। सुश्री ममता के भारत जोड़ो न्याय यात्रा संबंध एक बयान पर उन्होंने कहा, कुछ अवरोध आते रहते हैं उनको पार किया जा रहा है। तृणमूल कांग्रेस और ममता बनर्जी इंडिया गठबंधन की बहुत बड़ी नेता हैं और उनके बिना इंडिया गठबंधन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

उन्होंने कहा, सुश्री बनर्जी से बातचीत चल रही है और इसमें जो बाधाएं हैं उनका समाधान निकल आएगा। खुद सुश्री ममता ने कहा है कि भाजपा को हराना उनका कर्तव्य है, प्राथमिकता है और इसके लिए जो कुछ भी करना पड़े उसे करेंगे। इसी भावना के साथ भारत जोड़ो न्याय यात्रा बंगाल में प्रवेश कर रही है। गठबंधन में जो भी अड़चनें हैं उनको बातचीत से दूर किया जाएगा और इंडिया गठबंधन पूरे देश में मिलकर काम करेगा। श्री रमेश ने कहा, हम विचारधारा की लड़ाई लड़ रहे हैं और आने वाले आम चुनाव में कांग्रेस का उद्देश्य सिर्फ भाजपा को हराना है। हिमंत बिस्व सरमा उस विचारधारा के प्रतीक हैं जिसने समाज

के विभिन्न वर्गों के साथ अन्याय किया है। यहां बिस्व सरमा के नेतृत्व में भ्रष्टाचार चरम पर है इसलिए मुख्यमंत्री के खिलाफ श्री गांधी बोल रहे हैं। मैं असम के मुख्यमंत्री का धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने हमारी यात्रा को अपनी धमकियों से पब्लिसिटी दी। हम डरने वाले नहीं हैं। हम पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने कहा, कल 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' पश्चिम बंगाल पहुंचेगी और 26-27 जनवरी को आराम करने के बाद 28 जनवरी को पश्चिम बंगाल में यात्रा शुरू होगी।

'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' 20 मार्च तक समाप्त होने की संभावना है और 20 से 23 मार्च के बीच 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' मुंबई पहुंचेगी और उसके बाद हमारा संगठन चुनावी प्रक्रिया में लग जाएगा। कल राहुल गांधी जी ने चुनाव का शंखनाद बजा दिया है, जो 5 न्याय पर आधारित है। इस बीच कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने नई दिल्ली में पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि देश में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय स्थापित करने के लिए ही 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' हो रही है। देश को मौजूदा हालात में युवा न्याय, भागीदारी न्याय, नारी न्याय, किसान न्याय और श्रमिक न्याय की जरूरत है।

# ठंड का कहर : कोहरे व शीतलहर के साथ कनकनी बनी आफत

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। राजधानी सहित सूबे के अधिकांश जिलों में कड़ाके की ठंड पड़ रही है। कंपकंपाती ठंड व शीतलर से पूरा जन जीवन अस्त व्यस्त है। घर से निकलना दुभर हो गया है। कोहरे व शीतलहर के साथ कनकनी आफत बन गई है। बच्चों व बुजुर्गों के लिए यह ठंड किसी श्राप से कम नहीं। बेजुबान पशु पक्षियों का भी बुरा हाल है। मौसम विभाग की माने तो अगले कुछ दिन और राहत मिलने की संभावना नहीं है। मौसम विभाग के मुताबिक 25 से 29 जनवरी के बीच बिहार में अति शीत लहर पड़ने की संभावना है। जिसे देखते हुए मौसम विभाग ने सभी जिलों को रेड जोन घोषित कर दिया है। साथ ही मौसम विभाग ने चेतावनी जारी की है कि इस दौरान बिना जरुरत घरों से बाहर नहीं निकले। मौसम विभाग के द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार राज्य के अधिकांश भागों के निचले क्षोभमंडल में बफीर्ली ठंडी पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी हवा का प्रवाह जारी है, जिसके कारण 12 जनवरी से राज्य में शीत दिवस, अति शीत दिवस जैसी परिस्थिति बनी हुई है। आज के विश्लेषण के अनुसार एक ताजा पश्चिमी विक्षोभ 25 जनवरी से और दूसरा 27 जनवरी 2024 से पश्चिमी हिमालय क्षेत्र को प्रभावित करने की संभावना है। जिसके प्रभाव से राज्य के अधिकांश भागो में 25 जनवरी से 29 जनवरी के दौरान अतिशीत दिवस, शीत दिवस जैसी स्थिति जारी रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने बताया है कि इसके साथ ही अगले 5 दिनों के दौरान राज्य के कुछ जगहों में घने कोहरे का भी पूवानुर्मान है। मौसम विभाग ने शीतलहर से बचाव को लेकर चेतावनी भी जारी की है। साथ ही बच्चे एवं बुजुर्गो को ठण्ड से बचने की सलाह दी जाती है गर्म कपडे धारण करे तथा गर्म पेय पदार्थ का सेवन करे।

# पीएम ने मंत्रियों को फरवरी में अयोध्या नहीं जाने की दी सलाह

प्रात : किरण/एजेंसी

पीएम ने सुझाव दिया कि, भारी भीड़ और प्रोटोकॉल वाले वीआईपी के कारण जनता को होने वाली असुविधा को रोकने के लिए, केंद्रीय मंत्रियों को मार्च में अयोध्या की अपनी यात्रा की योजना बनानी चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को अपने कैबिनेट सहयोगियों से अयोध्या में भक्तों की भारी भीड़ के कारण फिलहाल राम मंदिर जाने से परहेज करने को कहा। सूत्रों ने इस बात की जानकारी दी। बताया गया कि आज की कैबिनेट बैठक में पीएम नरेंद्र मोदी ने अपने सभी कैबिनेट

सहयोगियों को फिलहाल अयोध्या राम मंदिर जाने से परहेज करने की सलाह दी। पीएम ने सुझाव दिया कि, भारी भीड़ और प्रोटोकॉल वाले वीआईपी के कारण जनता को होने वाली असुविधा को रोकने के लिए, केंद्रीय मंत्रियों को मार्च में अयोध्या की अपनी यात्रा की योजना बनानी चाहिए। बुधवार को हुई कैबिनेट बैठक में पीएम मोदी ने मंत्रियों से अयोध्या में बहुप्रतीक्षित राम मंदिर के उद्घाटन के बाद जनता से मिले फीडबैक के बारे में भी पूछा। वहीं, बैठक के बाद केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि आज पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक हुई। बैठक की शुरूआत में ही रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कैबिनेट की ओर से सफल प्राणप्रतिष्ठा समारोह के लिए पीएम का आभार व्यक्त किया। सोमवार को अयोध्या मंदिर में नए राम लला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई, इस कार्यक्रम की अगुवाई पीएम मोदी ने की। समारोह का पूरे देश में सीधा प्रसारण किया गया। अभिषेक समारोह में शीर्ष राजनेताओं, व्यापारियों, खिलाड़ियों और मशहूर हस्तियों सहित कई हजार लोगों को आमंत्रित किया गया था। अभिषेक समारोह समाप्त होने के तुरंत बाद आमंत्रित लोगों ने देवता के 'दर्शन' किए। आम जनता के लिए मंदिर के दरवाजे मंगलवार सुबह खुल गए, पहले दिन करीब पांच लाख श्रद्धालुओं ने मंदिर में दर्शन किए। मंगलवार की सुबह तीन बजे से ही श्रद्धालु कतार में लग गये। मंगलवार को श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के कारण दर्शन को कुछ देर के लिए रोकना पड़ा।

# राम दीपावली पर 1 लाख 25 हजार करोड़ का हुआ व्यापार

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। रामलला के विग्रह के प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक अनुष्ठान के जरिए देश की अर्थव्यवस्था में सनातन अध्याय भी जुड़ गया है। कारोबारी संगठनों के सभी अनुमान ध्वस्त हुए और इस दौरान देशभर के बाजारों ने लगभग एक लाख 25 हजार करोड़ रुपये से अधिक का व्यापार किया। बड़ा योगदान राम ध्वज, पटके, पोस्टर, बैनर, शोभायात्रा, बैंड बाजे, मंदिर के माडल, दीये, पटाखे और मिठाइयों की बिक्री के साथ भंडारे, राम उत्सव व एलईडी स्क्रीन से लाइव प्रसारण के आयोजन का रहा है। इसलिए भी 22 जनवरी को महा दीपावली कहा गया है। इसे इस तरह से भी देखा जा सकता है कि इतिहास में पहली बार दिल्ली के दिल कनॉट प्लेस में सवा लाख दीयों का प्रज्वलन तथा भव्य राम उत्सव का आयोजन हुआ। यहां के व्यापारियों ने करीब 500 किलो लड्डू प्रसाद के रूप में बांटे। लाइटिंग और लाइव प्रसारण समेत अन्य आयोजन में यहां के व्यापारियों ने एक-दो दिन में ही तकरीबन 25 लाख रुपये खर्च किए। यही हाल चांदनी चौक, खान मार्केट व सदर बाजार समेत अन्य का था। वैसे, बाजार इस राम लहर के लिए पहले से बिल्कुल तैयार नहीं थे। इसलिए देशभर में एलईडी स्क्रीन, हलवाई व बैंड बाजे वालों की किल्लत के साथ रेस्तरां से मिठाईयों की अप्रत्याशित मांग दिखाई पड़ी। अन्य उत्पाद बंद कर निमार्ता राम मंदिर के माडल और लड्डुओं के निर्माण में टूट पड़े। देश के नाभि केंद्र के अवतरण से आगे भी देश में व्यापार के नई संभावनाएं बलवति हुई हैं, जिससे बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा होने का अनुमान है।

**राजनीति** असम में वह 'फर्जी मुकदमों' से डरने वाली नहीं है। पार्टी नेता कन्हैया ने यह दावा भी किया कि भाजपा अन्याय के साथ खड़ी हुई है।

# कांग्रेस ने भाजपा पर 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' रोकने का प्रयास करने का लगाया आरोप

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस ने बुधवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर उसकी 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' को रोकने के प्रयास करने का आरोप लगाया और कहा कि असम में वह 'फर्जी मुकदमों' से डरने वाली नहीं है। पार्टी नेता कन्हैया कुमार ने यह दावा भी किया कि भाजपा अन्याय के साथ खड़ी हुई है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, "भारत जोड़ो न्याय यात्रा को बार-बार रोकने का प्रयास किया जा रहा है। हमारी न्याय यात्रा के गुजरने से कानून-व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, लेकिन भाजपा के नेता को उसी मार्ग पर यात्रा की अनुमति मिलती है, यह कौन सा न्याय है।" कुमार ने राहुल गांधी और कुछ

अन्य नेताओं के खिलाफ असम में मामला दर्ज किए जाने का हवाला देते हुए कहा, "हमारे नेताओं पर फर्जी मुकदमे किए गए हैं। आपके फर्जी मुकदमों से हम डरने वाले नहीं है।" असम पुलिस ने हिंसा में शामिल होने के आरोप में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और पार्टी के अन्य नेताओं के खिलाफ स्वतः संज्ञान लेते हुए मंगलवार को प्राथमिकी दर्ज की।

राहुल गांधी के नेतृत्व वाली 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' इस समय असम में है। हिंसा की कथित घटनाएं उस समय हुईं, जब पार्टी समर्थकों और नेताओं ने गुवाहाटी में प्रवेश करने की कोशिश में अवरोधक तोड़ दिए और पुलिसकर्मियों के साथ झड़प की। कुमार ने दावा किया, "जो लोग इस यात्रा में अवरोध पैदा करने की कोशिश कर रही है वो न्यायद्रोही हैंह्व भाजपा अन्याय के साथ खड़ी है।"राहुल गांधी द्वारा घोषित 'पांच न्याय' का उल्लेख करते हुए उनका कहना था, "हमारे देश की बहुसंख्यक आबादी आज भी न्याय की संपूर्ण स्थापना से बाहर है। 'पांच न्याय' के उद्देश्य हैं। युवा न्याय- देश में 45 वर्ष में आज सबसे ज्यादा बेरोजगारी है, इसलिए युवा न्याय का मतलब है युवाओं को रोजगार मिले। भागीदारी न्याय- हमें लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करनी है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र से हो।" उन्होंने कहा, "नारी न्याय- महिलाओं के लिए एक सुरक्षित और स्वतंत्र समाज का निर्माण। किसान न्याय- किसानों को उनकी फसल के उचित दाम मिलें। श्रमिक न्याय- श्रमिकों को उचित मूल्य नहीं मिल रहा है, कांग्रेस सरकार उनको उचित मूल्य दिलाएगी।"

## संक्षिप्त समाचार

### श्मशान घाट में अंतिम संस्कार का विरोध, हंगामा

**काशीपुर, एजेंसी।** जसपुर खुर्द में आबादी के पास श्मशान घाट में अंतिम संस्कार करने पर आसपास के लोगों ने विरोध जताया। मौके पर भीड़ जमा हो गई। सूचना पर पहुंचे तहसीलदार ने दोनों पक्ष को समझाया और अंतिम संस्कार कराया। इसके बाद मामला शांत हो गया। ग्रामीणों ने कहा कि पहले यहां अंतिम संस्कार किया जाता था, लेकिन अब आसपास बड़ी संख्या में लोग रहते हैं। इसलिए यहां अब अंतिम संस्कार नहीं करना चाहिए। वहीं जो लोग शव लेकर आए थे, उन्होंने कहा कि श्मशान घाट पहले से ही यहीं हैं, इसलिए अंतिम संस्कार यहीं किया जाएगा। सूचना पर पहुंचे तहसीलदार पंकज चंदोला ने समझाया कि कागजों में यहां श्मशान घाट दर्ज है। नई व्यवस्था होने तक इसे श्मशान घाट ही माना जाएगा। बाद में दोनों पक्षों को समझाने पर शव का अंतिम संस्कार कर दिया गया। इसके बाद मामला शांत हो गया। तहसीलदार ने बताया कि दोनों पक्षों को उच्चाधिकारियों से मिलकर अपना-अपना पक्ष रखने के लिए कहा गया है।

### सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक वीडियो वायरल करने वाला आरोपी गिरफ्तार

**ऊधम सिंह नगर, एजेंसी।** खटीमा में पुलिस ने सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक वीडियो शेयर करने वाले एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। पुलिस मामले में आगे की कार्रवाई कर रही है। सोशल मीडिया पर भावनाओं को आहत करने वाला आपत्तिजनक वीडियो शेयर करने पर पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। कोतवली क्षेत्र के बानूसी निवासी हिमांशु कन्याल ने पुलिस को तहरीर दी। बताया कि ग्राम उल्धन, झनकट निवासी फरयाद रजा ने भगवान राम के गीत के साथ जन भावनाओं को आहत करने वाली भाषा में एक आपत्तिजनक वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है। इससे गांव के साथ ही क्षेत्र में फरयाद रजा के खिलाफ लोगों में आक्रोश है। बताया कि जब गांव के लोगों ने उससे इस संबंध में जानकारी ली तो आरोप है कि उसने लोगों को जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने आरोपी फरयाद रजा के खिलाफ धारा 153 ए, 295 ए और 506 के तहत केस दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया। बाद में उसे कोर्ट में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया। इस संबंध में जानकारी लेने पर एएसपी वीर सिंह का मोबाइल स्वीच ऑफ आया है। युवक ने पहले से ही सोशल मीडिया में चल रहे वीडियो को शेयर कर कमेंट किया था। माहौल बिगड़ने की आशंका को देखते हुए उसके खिलाफ केस दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है। कोर्ट ने आरोपी युवक को जेल भेज दिया है।

### अगले दो दिन बंद रहेगा सुरकंडा देवी रोपवे का संचालन

**हरिद्वार, एजेंसी।** उत्तराखंड में सिद्धपीठ सुरकंडा देवी रोपवे का संचालन अगले दो दिन 23 और 24 जनवरी को बंद रहेगा। इस दौरान रोपवे का मरम्मत कार्य किया जाएगा। रोपवे बंद रहने के दौरान सुरकंडा मंदिर में पूजा-अर्चना और दर्शन करने वाले वाले श्रद्धालुओं को कद्दूखाल से मंदिर तक डेढ़ किमी की खड़ी चढ़ाई पार कर पहुंचना होगा।

### नुक्कड़ नाटक के माध्यम से वनाग्नि के प्रति किया जागरूक

**चंपावत, एजेंसी।** धूनाघाट क्षेत्र में वन विभाग की ओर से नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को वनाग्नि को लेकर जागरूक किया गया। सभी लोगों से वनों में फायर सीजन के दौरान आग न लगाने की अपील की गई। सोमवार को वन क्षेत्राधिकारी कैलाश गुणवंत के दिशा निर्देश पर धूनाघाट बाजार में वन्य जीव सुरक्षा अभियान के तहत नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। नंदा देवी लोककला मंच गोली की टीम ने लोगों को जागरूक करते हुए वनों में आग न लगाने, आग से होने वाले नुकसान के बारे जानकारी दी। इस मौके पर रमेश राम, सुनीता देवी, पुष्पा देवी, सोनाक्षी, कविता देवी, पार्वती देवी, इंद्रा देवी, अर्जुन सिंह रहे।

### ट्रैक्टर से नष्ट की गेहूं की फसल, विरोध पर दंपती से मारपीट

**रूड़की, एजेंसी।** विवादित जमीन को लेकर एक ने दूसरे पक्ष की खेत में खड़ी गेहूं की फसल को ट्रैक्टर से जुताई कर नष्ट कर दिया। विरोध करने पर दंपती को पीटकर घायल कर दिया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर छह लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। कोतवाली क्षेत्र के सौपरी गांव में कुछ जमीन को लेकर बहालपुरी निवासी जॉनी का गांव के ही अशोक के बीच विवाद चल रहा है। दोनों जमीन को अपनी बताते आ रहे हैं। जमीन पर जॉनी ने गेहूं की फसल उगा रखी थी। आरोप है कि अशोक ने ट्रैक्टर से गेहूं की फसल नष्ट कर दिया। जानकारी मिलने पर वह अपनी पत्नी रूपा के साथ खेत पर पहुंचा। दोनों ने फसल नष्ट करने का विरोध किया तो अशोक ने परिवार के साथ मिलकर मारपीट कर दी।

# मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राष्ट्रीय बालिका दिवस पर मेधावी बालिकाओं को किया सम्मानित

## मेधावी बालिका शिक्षा प्रोत्साहन के तहत वर्ष 2022 और 2023 की टॉपर 318 बालिकाओं को किया पुरस्कृत

- मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग के परिवर्तन पोर्टल को किया लॉन्च

प्रात: किरण, संवाददाता

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री आवास स्थित मुख्य सेवक सदन में ह्यमेधावी बालिका शिक्षा प्रोत्साहनह्न कार्यक्रम के तहत मेधावी बालिकाओं को सम्मानित किया। जनपद स्तर पर इंटरमीडिएट और हाईस्कूल में प्रत्येक जनपद से प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाली बालिकाओं और विकासखण्ड स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिकाओं को प्रशस्ति पत्र और स्मार्ट फोन देकर पुरस्कृत किया गया। राष्ट्रीय बालिका दिवस पर वर्ष 2022 और 2023 की टॉपर 318 बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग का ह्यपरिवर्तन पोर्टलह्न लॉन्च किया और बालिका निकेतन, देहरादून की बालिकाओं को चन्द्रयान की अनुकृति भी भेंट की। मुख्यमंत्री ने प्रदेश की सभी बेटियों को राष्ट्रीय बालिका दिवस की शुभकामना देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। प्रदेश की अपनी सभी बेटियों की सुरक्षा के लिए सरकार पूरी तरह से कटिबद्ध हैं। हमारी बेटियों के साथ अन्याय करने वालों की उत्तराखण्ड और हमारे समाज में कोई जगह नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रदेश का मुख्य सेवक होने के नाते प्रदेश की किसी भी बेटी का अपमान उनका अपमान है। ऐसा करने वालों के खिलाफ वे कठोरतम कार्रवाई करने से कभी पीछे नहीं हटेंगे। उन्होंने कहा कि हमारी बेटियां हमारी शान, मान और अभिमान हैं। महान वीरांगना तीलू रौतेली से प्रारंभ होने वाली हमारे प्रदेश की वीर नारियों की सूची में टिंचरी माई, गौरा देवी, चन्द्रप्रभा ऐतवाल, गंगोत्री गर्ब्याल और बछेंद्री पाल जी तक ऐसे अनेकों नाम हैं, जिन्होंने हर चुनौती को छोटा साबित करते हुए कुप्रथाओं को तोड़ने और आत्म सम्मान से जीवन जीने की राह समाज को दिखाई है। उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आज हमारी बेटियों ने हर क्षेत्र में अपना एक अलग मुकाम बनाया है और प्रदेश का नाम रोशन किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा प्रारंभ की गई विभिन्न योजनाएं हमारी बेटियों को और अधिक आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने में सहयोग प्रदान कर रही हैं। राज्य सरकार ने हाल ही में सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 30 प्रतिशत आरक्षण देने का फैसला लिया है। पहले पहाड़ में बेटियों के जीवन का दूसरा नाम ही संघर्ष था, लेकिन अब दृश्य बदल रहा है और हमारे सीमान्त गांवों की बेटियां भी अपने सपनों को साकार कर रही हैं। आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ह्यबेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओह्न के मूलमंत्र को लेकर राज्य सरकार ने भी बेटियों के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा, स्वास्थ और कौशल विकास तक के लिए विभिन्न योजनाएं प्रारंभ की हैं जिनमें महालक्ष्मी किट योजना, खुशियों की सवारी योजना, नंदा गौरा योजना, मुख्यमंत्री आंचल अमृत योजना, मुख्यमंत्री महिला पोषण जैसी योजनाएं शामिल हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का प्रयास है कि उत्तराखंड की हर बेटी सशक्त हो, सबल हो और प्रदेश के समग्र विकास में बराबर की भागीदार हो। उन्होंने कहा कि वे एक अभिभावक की तरह हमेशा प्रदेश की बेटियों के साथ रहेंगे। महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने पुरस्कार प्राप्त करने वाली सभी बालिकाओं को शुभकामना देते हुए कहा कि आज बालिकाओं के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदल रहा है। आज बेटियां किसी भी क्षेत्र में लड़कों से कम नहीं हैं। उन्होंने कहा कि बेटियों को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हर क्षेत्र में बेटियां नये कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। उन्होंने कहा कि लोहाघाट में गर्ल्स स्पोर्ट्स कॉलेज खोला जा रहा है। इस अवसर पर सचिव महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास हरि चन्द्र सेमवाल, निदेशक महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास प्रशांत आर्य, मुख्य परिवीक्षा अधिकारी मोहित चौधरी एवं मेधावी बालिकाओं के अभिभावक उपस्थित थे।

## युवक पर बाइक सवारों ने की फायरिंग

**रूड़की, एजेंसी।**
बहन की शादी का सामान लेकर घर लौट रहे युवक पर बाइक सवार कुछ युवकों ने लाठी-डंडों से हमला कर दिया। आरोप है कि इस बीच हवाई फायरिंग भी की गई। युवक को गंभीर हालत में हायर सेंटर रेफर किया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। आकाश निवासी गांव मुंडलाना सोमवार सुबह अपनी बहन की शादी के लिए समान लेने पुरकाजी गया था। दोपहर बाद वह ट्रैक्टर-ट्रॉली में सामान लेकर घर लौट रहा था। इस बीच वह मोहम्मदपुर जट्ट मार्ग के पास एक दुकान के बाहर रुककर साथियों के साथ चाय पीने लगा। इस बीच 25 से 30 युवक बाइक पर लाठी-डंडे लेकर मौके पर पहुंचे और आकाश पर हमला कर दिया। आकाश युवकों से बचने के लिए दुकान में घुस गया। इस पर युवकों ने दुकान के अंदर से उसे बाहर खींच लिया और बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। आसपास के लोगों की भीड़ जमा होने पर युवकों ने तमंचे से एक हवाई फायरिंग कर दी और मंगलौर की तरफ फरार हो गए। लोगों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल को नारसन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया व सूचना परिजनों को दी। सूचना पर परिजन भी अस्पताल पहुंचे और घटना की जानकारी ली। वहीं, डॉक्टरों ने आकाश की गंभीर हालत देखते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया। नारसन चौकी प्रभारी नवीन सिंह चौहान ने बताया कि अब तक तहरीर नहीं मिली है। तहरीर मिलने पर केस दर्ज किया जाएगा। साथ ही हमलावर युवकों को चिह्नित किया जा रहा है।

## धधक रहे हैं उत्तराखंड के जंगल, गढ़वाल से लेकर कुमाऊं तक आग

**नैनीताल, एजेंसी।**
कुमाऊं में कई दिन से जंगल धधक रहे हैं, लेकिन जंगलात के आंकड़ों में संख्या शून्य है। कुमाऊं में कहीं भी आग की घटना रिपोर्ट नहीं हुई है। अब वन मुख्यालय ने सभी डीएफओ को आग की घटनाओं को लेकर एक्शन टेकन रिपोर्ट देने को कहा है। कुमाऊं में कई दिन से जंगल धधक रहे हैं, लेकिन जंगलात के आंकड़ों में संख्या शून्य है। कुमाऊं में कहीं भी आग की घटना रिपोर्ट नहीं हुई है। अब वन मुख्यालय ने सभी डीएफओ को आग की घटनाओं को लेकर एक्शन टेकन रिपोर्ट देने को कहा है। इस बार बारिश और बर्फबारी नहीं हुई है, इससे शुष्कता बढ़ी है। पिछले साल अक्तूबर से बागेश्वर में 11 और नवंबर से अल्मोड़ा के जंगलों में 23 आग लगने की घटनाएं सामने आने लगी थी। पिथौरागढ़, चंपावत, नैनीताल जिले में भी जंगल में आग लगने की घटना हो चुकी है। वन विभाग के जंगल की आग की सूचना देने वाली वेबसाइट पर कुमाऊं में संख्या शून्य बताया जा रहा है। विभागीय सूचनाओं के अनुसार अभी तक प्रदेश में 12 जंगल में आग लगने की घटना हुई है। इसमें गढ़वाल मंडल के आरक्षित और सिविल वन क्षेत्र में चार और वाइल्ड लाइफ क्षेत्र में आठ घटनाएं शामिल हैं। कुमाऊं में कोई भी घटना रिपोर्ट नहीं हुई है। इस संबंध में मुख्य वन संरक्षक वनाग्नि नियंत्रण निशांत वर्मा कहते हैं कि अलर्ट आ रहे हैं, सभी डीएफओ को अलर्ट पर एक्शन टेकन रिपोर्ट मांगी गई है। सभी घटनाओं की सूचना दर्ज की जाएगी। वहीं, चार दिनों से केदारनाथ वन्य जीव प्रभाग के नागनाथ रेंज के जंगल धू-धू कर जल रहे हैं। जौरासी, मसोली बीट के जंगल में लगी अब विकराल होते हुए बागनाथ बीट तक पहुंच गई है।

## ठेकेदारों ने 50 लाख मुआवजा देने की मांग पर किया प्रदर्शन

**अल्मोड़ा, एजेंसी।**
माल रोड पर जाखनदेवी के पास सीवर लाइन बिछाने के दौरान ट्रैक्टर से कुचलने से ठेकेदार की मौत के मामले में संगठन मुखर हो गया है। पर्वतीय ठेकेदार संघ ने मृतक के परिजनों को 50 लाख रुपये मुआवजा देने की मांग पर प्रदर्शन किया। उन्होंने जल्द मुआवजा न देने पर जल निगम कार्यालय में तालाबंदी की चेतावनी दी है। माल रोड पर जाखनदेवी के पास सीवर लाइन बिछाने के दौरान बीते 18 जनवरी को पूर्व प्रधान और ठेकेदार हरीश बिष्ट को ट्रैक्टर ने कुचल दिया था जिससे उनकी मौत हो गई थी। मंगलवार को पर्वतीय ठेकेदार संघ से जुड़े लोगों ने मृतक के परिजनों को 50 लाख रुपये मुआवजा देने की मांग पर चौघानपाटा के गांधी पार्क में प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि ठेकेदार की मौत से परिवार पर आर्थिक संकट गहरा गया है। पत्नी के लिए छोटे बच्चों का पालन-पोषण करना मुश्किल है। संघ ने मृतक के परिजनों को शीघ्र मुआवजा देने की मांग की थी लेकिन कार्यदायी संस्था अब तक चुप है। इस संबंध में उन्होंने जल निगम के ईई को ज्ञापन भी भेजा। इस दौरान

संगठन के अध्यक्ष प्रयाग सिंह बिष्ट, पूरन पालीवाल, सुरेंद्र सिंह बेलवाल, जगदीश भट्ट, अकरम खान, राहुल सिंह बिष्ट, शंकर सिंह गैड़ा, देवेंद्र धौनी आदि मौजूद रहे।

## श्रीदेव सुमन विवि में अब छात्रों को पढ़ाया जाएगा रामचरितमानस, बोर्ड ऑफ स्टडीज से मिली स्वीकृति

**चंबा (टिहरी), एजेंसी।**
श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय में रामचरितमानस का पाठ्यक्रम बनकर तैयार है। व्यावहारिक दर्शन एवं व्यक्तित्व विकास में इसकी भूमिका नाम से स्नातक स्तर के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। नए शिक्षा सत्र से श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय में अब छात्रों को रामचरितमानस भी पढ़ाया जाएगा। इससे छात्रों को भगवान श्रीराम और उनके जीवन को नजदीक से जानकर आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। रामचरितमानस पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए विवि प्रशासन को बीओएस (बोर्ड आफ स्टडीज) से स्वीकृति मिल गई है। रामचरितमानस का पाठ्यक्रम बनकर तैयार है। विवि के कुलपति प्रो. एनके जोशी ने बताया, रामायण एवं रामचरितमानस का व्यावहारिक दर्शन एवं व्यक्तित्व विकास में इसकी भूमिका नाम से स्नातक स्तर के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। पाठ्यक्रम को तैयार करने के लिए पूर्व में विशेषज्ञों की कमेटी का गठन किया गया था। कमेटी की ओर से तैयार पाठ्यक्रम को बोर्ड ऑफ स्टडीज ने शुरू करने की अनुमति भी प्रदान कर दी है। आगामी सत्र से विवि के छात्र स्नातक स्तर पर इस पाठ्यक्रम को पढ़ सकेंगे। बताया, भारतीय संस्कृति के परिचायक सत्य, अहिंसा, धैर्य, क्षमा, त्याग, निष्ठा, मानवता, प्रेम, शांति, लोक संग्रह आदि भावों का रामचरितमानस में संग्रह है।

## बालिका दिवसः उत्तराखंड के इस जिले में हुए इतने बाल विवाह, खत्म नहीं हो पा रही यह कुप्रथा

**ऊधम सिंह नगर, एजेंसी।**
ऊधमसिंह नगर के रुद्रपुर में बाल विवाह रोकने के लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों की ओर से तमाम प्रयास किए गए लेकिन यह कुप्रथा खत्म नहीं हो पा रही है। रुद्रपुर में बाल विवाह रोकने के लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों की ओर से तमाम प्रयास किए गए लेकिन यह कुप्रथा खत्म नहीं हो पा रही है। रुद्रपुर में एक साल में बाल विवाह के तीन मामले सामने आए थे और एक मामले में माता-पिता सहित छह लोगों पर केस दर्ज हुआ था। इसके बावजूद संबंधित विभाग के पास बाल विवाह के आंकड़े नहीं हैं। दरअसल तराई में बाल विवाह के मामले में सामने आते रहते हैं। सरकारी स्तर पर चलाए जा रहे जागरूकता अभियानों के चलते इसमें काफी कमी आई है। लेकिन

गुपचुप तरीके से बाल विवाह किए जा रहे हैं। जनवरी 2023 में बाल विवाह के मामले में पीड़िता की शिकायत पर ट्रांजिट कैंप थाना पुलिस ने छह लोगों पर केस दर्ज किया था। वहीं रुद्रपुर में अप्रैल और जून 2023 में हो रहा बाल विवाह एनजीओ के दखल के बाद रोका गया था। मई 2021 में दिनेशपुर में 13 साल की नाबालिग का विवाह 40 साल के व्यक्ति से करने के मामले में मां-पिता समेत तीन के खिलाफ बाल विवाह अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। दिसंबर 2020 में किच्छा में 12 वर्षीय बच्ची की शादी कर दी गई थी। भाई की शिकायत पर सौतेली मां और पिता समेत छह लोगों पर केस दर्ज किया गया था। ये वह मामले हैं, जो सामने आए थे। लेकिन कई ऐसे मामले हैं, जिनमें बाल विवाह करा दिए गए। हालांकि महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास विभाग के पास बाल विवाह के आंकड़े ही नहीं हैं। वर्तमान में बाल विवाह के मामलों में कमी आई है। बाल विवाह को रोकने के लिए सरकारी स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाते हैं। एनजीओ के माध्यम से भी लोगों को जागरूक किया जाता है। विभाग के संज्ञान में एक ही मामला आया था।

## उपचार के दौरान फैक्टरी कर्मी की मौत, गेट पर शव रखकर हंगामा

**रूड़की, एजेंसी।**
भगवानपुर क्षेत्र के ग्राम जहाजगढ़ के पास एक सीमेंट फैक्टरी के कर्मचारी की एक सप्ताह पहले अचानक तबीयत खराब हो गई थी। उपचार के दौरान कर्मचारी की मौत हो गई है। परिवार और ग्रामीणों ने शव को फैक्टरी के गेट पर रखकर प्रदर्शन किया। पुलिस अधिकारी भी मौके पर पहुंचे। हालांकि फैक्टरी प्रबंधन से वार्ता के बाद मामला शांत हो गया। भगवानपुर क्षेत्र के ग्राम जहाजगढ़ निवासी संदीप कुमार गांव के पास स्थित एक सीमेंट फैक्टरी में काम करता था। एक सप्ताह पूर्व फैक्टरी में कार्य करने के दौरान अचानक श्रमिक की तबीयत बिगड़ गई थी। इसके बाद परिजनों ने उसे देहरादून के एक अस्पताल में भर्ती कराया था। इलाज के दौरान रविवार देर शाम उसकी मौत हो गई। परिजनों व ग्रामीणों ने श्रमिक के शव को अस्पताल से लाकर सोमवार सुबह ही फैक्टरी के गेट पर रखकर मुआवजे की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। सूचना पर सीओ बहारदुर सिंह, भगवानपुर विधायक ममता राकेश, भीम आर्मी के प्रदेश अध्यक्ष महक सिंह व आम आदमी पार्टी के नेता प्रेमसिंह भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने पीड़ित परिवार से वार्ता की। साथ ही फैक्टरी प्रबंधन से भी परिवार के सदस्यों को साथ लेकर बात की। सीओ बहादुर सिंह ने बताया कि मृतक के परिजनों की ओर से फैक्टरी प्रबंधन तंत्र से आर्थिक सहायता व मृतक के बेटे को बालिग होने के बाद नौकरी देने की मांग की बात कही गई। इस पर प्रबंधन तंत्र ने सकारात्मक आश्वासन दिया है।

# केजरीवाल सरकार के आईटीआई ने किया शानदार प्रदर्शन

**जानकारी**

- आईटीआई छात्रों की प्लेसमेंट में हुआ शानदार इजाफा इन संस्थानों के लिए केजरीवाल सरकार के फोकस्ड प्लेसमेंट स्ट्रेटेजी का परिणाम-तकनीकी आतिशी
- सरकार अपने आईटीआई में वर्ल्ड क्लास टेक्निकल एजुकेशन और शानदार प्लेसमेंट इकोसिस्टम के साथ छात्रों को रोजगार के बेहतरीन अवसरों के लिए तैयार कर रही- तकनीकी आतिशी

**नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता**

दिल्ली के इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट (आईटीआई) में छात्रों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए केजरीवाल सरकार द्वारा की गई प्रयासों के शानदार परिणाम देखने को मिले है। नई प्लेसमेंट रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली में सरकार द्वारा संचालित आईटीआई में इस साल 72.3% प्लेसमेंट दर्ज किया गया है।

बता दे कि दिल्ली सरकार द्वारा संचालित 19 आईटीआई में से, आईटीआई विवेक विहार और आईटीआई धीरपुर प्लेसमेंट में मामले में अव्वल साबित हुए है। दोनों में क्रमशः 97% व 94% छात्रों ने प्लेसमेंट हासिल किया है। धीरपुर आईटीआई में 1950 में 1800 से अधिक छात्रों ने भारत भर की प्रसिद्ध कंपनियों में प्लेसमेंट हासिल किया है। इनमें हीरो, एलजी, एलएनटी, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, टाटा ग्रुप आदि शामिल हैं। गौरतलब है कि दिल्ली सरकार द्वारा संचालित 19 आईटीआई में 13 को-एड और 6 महिला आईटीआई है।

आईटीआई छात्रों की इस सफलता पर खुशी जाहिर करते हुए, तकनीकी शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा, हमारे आईटीआई में छात्रों द्वारा इतनी बड़ी संख्या में प्लेसमेंट हासिल करना बेहद खुशी और गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि, केजरीवाल सरकार अपने आईटीआई में वर्ल्ड क्लास टेक्निकल एजुकेशन और शानदार प्लेसमेंट इकोसिस्टम के साथ छात्रों को रोजगार के बेहतरीन अवसरों के लिए तैयार कर रही है और आईटीआई की प्लेसमेंट में हुआ शानदार इजाफा इन संस्थानों के लिए केजरीवाल सरकार के फोकस्ड प्लेसमेंट स्ट्रेटेजी का परिणाम है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में दिल्ली सरकार टेक्निकल एजुकेशन को इंडस्ट्री की माँग के साथ जोड़कर एक स्किल्ड वर्कफोर्स तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है। और देश के भविष्य के लिए स्किल्ड वर्कफोर्स तैयार करने की दिशा में केजरीवाल सरकार इंडस्ट्री की माँग के अनुसार छात्रों को स्किल ट्रेनिंग दे रही है। हमारा लक्ष्य एक ऐसा इकोसिस्टम बनाना है जहां छात्र बिना किसी रुकावट के अपने स्किल के जरिए पढ़ाई पूरी होते ही करियर के अच्छे मौके हासिल कर सके।

तकनीकी शिक्षा मंत्री ने कहा कि, आईटीआई में सेंट्रलाइज्ड प्लेसमेंट एंड इंडस्ट्री आउटरीच सेल के जरिए केजरीवाल सरकार छात्रों के लिए प्लेसमेंट के बेहतरीन अवसर और इंडस्ट्री एक्सपोजर सुनिश्चित कर रही है। इस सेल ने प्लेसमेंट के लिए एक शानदार रणनीति अपनाई है, जिसका लक्ष्य शिक्षा-इंडस्ट्री कोलाबोरेशन, कैरियर सर्विसेज, सीखने के मौके, एंत्रप्रेन्योरशिप सपोर्ट के साथ छात्रों को प्लेसमेंट के लिए तैयार करना है।

आईटीआई के लिए दिल्ली सरकार की प्लेसमेंट स्ट्रेटेजी क्या है?

-> आईटीआई की प्लेसमेंट बढ़ाने की स्ट्रेटेजी एक मजबूत स्किल एजुकेशन बेस तैयार करने पर फोकस्ड है, जिसके लिए शिक्षकों को टीओटी कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जा रहा है।

-> इंडस्ट्री विजिट, इंटर्नशिप और नौकरी पर प्रशिक्षण के माध्यम से छात्रों को जरूरी अनुभव प्रदान करने के लिए स्थानीय इंडस्ट्री के साथ पार्टनरशिप को बेहतर बनाने पर फोकस किया गया है।

-> बायोडाटा बनाना, इंटरव्यू की तैयारी और सॉफ्ट स्किल्स ट्रेनिंग

-> बाजार की माँग के साथ तालमेल बिठाने के लिए सीखने के विभिन्न विकल्पों की सुविधा प्रदान करना।

-> एक सेंट्रलाइज्ड प्लेसमेंट एंड इंडस्ट्री आउटरीच सेल की स्थापना।

# एक निजी विद्यालय का प्रबंधन अपने हाथ में लेने से पहले उपराज्यपाल उसका भी पक्ष सुनें: अदालत

**नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता**

दिल्ली उच्च न्यायालय ने उपराज्यपाल वी. के. सक्सेना से कहा है कि कथित प्रशासकीय और वित्तीय अनियमितताओं के कारण एक गैर-वित्त पोषित निजी स्कूल का प्रबंधन अपने हाथ में लेने से पहले उसका (विद्यालय का) भी पक्ष जरूर सुनें।

न्यायमूर्ति सी. हरि शंकर ने कहा कि चूंकि कानून के तहत किसी स्कूल पर नियंत्रण की शक्ति प्रशासक के तौर पर उपराज्यपाल में निहित है, इसलिए स्कूल का पक्ष सुनने की अनुमति सक्सेना की ओर से ही दी जानी चाहिए, न कि शिक्षा निदेशालय द्वारा, जिसने स्कूल को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। अदालत ने इस सप्ताह पारित एक आदेश में कहा, कहने की आवश्यकता नहीं है कि व्यक्तिगत सुनवाई की अनुमति केवल उस प्राधिकारी द्वारा दी जा सकती है जिसे निर्णय लेना है।

आदेश में कहा गया है, इस अदालत की एक खंडपीठ ने व्यवस्था दी है कि किसी स्कूल के प्रबंधन को अपने नियंत्रण में लेने की शक्ति केवल प्रशासक के तौर पर उपराज्यपाल में निहित है, न कि शिक्षा निदेशालय (डीओई) में।अदालत ने कहा कि उपराज्यपाल की सुविधानुसार निजी विद्यालय का पक्ष सुनने की अनुमति दी जाए। अदालत ने कहा कि यह याचिकाकर्ता पर निर्भर करेगा कि वह हाजिर हो और किसी स्थगन की मांग न करे। याचिकाकर्ता विद्यालय को 13 सितंबर, 2021 को शिक्षा निदेशालय द्वारा कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। इसमें कहा गया था कि दिल्ली स्कूल शिक्षा अधिनियम के तहत स्कूल का प्रबंधन अपने हाथ में लेने की कार्रवाई क्यों न शुरू की जाए। अदालत ने अपने आदेश में कहा, तदनुसार, माननीय उपराज्यपाल से अनुरोध है कि 13 सितंबर 2021 के कारण बताओ नोटिस पर निर्णय लेने से पहले याचिकाकर्ता को व्यक्तिगत सुनवाई का अवसर दिया जाए।

# गणतंत्र दिवस परेड की सुरक्षा में तैनात होंगे 14,000 कर्मी: दिल्ली पुलिस

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में कर्तव्य पथ और उसके आसपास के इलाकों में करीब 14000 सुरक्षा कर्मियों को तैनात किया जाएगा जहां से 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस परेड शुरू होगी। दिल्ली पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि इस साल परेड देखने के लिए कर्तव्य पथ पर करीब 77,000 लोगों के आने की संभावना है जिसके मद्देनजर सुरक्षा के लिए व्यापक इंतजाम किए गए हैं। दिल्ली पुलिस मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन के दौरान विशेष पुलिस आयुक्त (सुरक्षा) दीपेंद्र पाठक ने कहा कि गणतंत्र दिवस के लिए दिल्ली के चारों ओर चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था की गई है। पुलिस ने यह सुनिश्चित किया है कि अयोध्या के राम मंदिर में सोमवार को हुए प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद दिल्ली के संवेदनशील इलाकों में शांति बनी रहे। उन्होंने कहा कि विभिन्न राज्यों के बीच आपसी सहयोग की मदद से सीमावर्ती इलाकों में शांति कायम रखी जा रही है। विशेष पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था, जोन दो) मधुप तिवारी ने कहा कि परेड में कम से कम 77,000 लोगों के आने की संभावना है। तिवारी ने कहा, सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हमने नई दिल्ली जिले को 28 जोन में बांटा है। इन जोन का नेतृत्व वरिष्ठ अधिकारी करेंगे। परेड नई दिल्ली जिले से शुरू होगी। उन्होंने कहा कि गुमशुदा व्यक्ति बूथ, हेल्पडेस्क, प्राथमिक चिकित्सा कियोस्क और सुविधा बूथ स्थापित किए गए हैं, जहां आगंतुक परेड स्थल पर जाने से पहले अपने वाहनों की चाबियां जमा कर सकते हैं। तिवारी ने लोगों से समय पर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने और गहन जांच के दौरान सुरक्षा कर्मियों के साथ सहयोग करने का भी अनुरोध किया।

# बंगाल में विपक्षी गठबंधन के घटकों के बीच सीट बंटवारा जटिल : सौरभ भारद्वाज

**नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता**

आम आदमी पार्टी (आप) के नेता सौरभ भारद्वाज ने बुधवार को कहा कि विपक्षी गठबंधन इंडिया के सदस्यों तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी), वाम दलों और कांग्रेस के बीच पश्चिम बंगाल में सीट बंटवारा जटिल होगा लेकिन उन्होंने उम्मीद जताई कि किसी भी मतभेद को जल्द ही हल कर लिया जाएगा। टीएमसी की प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा है कि उनकी पार्टी ने राज्य में आगामी लोकसभा चुनाव अकेले ही लड़ने का फैसला किया है। इसके बाद भारद्वाज ने उक्त टिप्पणी की।

आप 28 सदस्यों वाले इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इनक्लूसिव अलायंस (इंडिया) का हिस्सा है जिसमें कांग्रेस, टीएमसी और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) नीत वाम मोर्चा समेत अन्य दल शामिल हैं। भारद्वाज के मुताबिक, ह्यआपह्न भी कांग्रेस के साथ पांच राज्यों में सीट बंटवारे के मुद्दे पर चर्चा कर रही है।

बनर्जी के ऐलान के बाद एक समाचार एजेंसी से बातचीत में भारद्वाज ने कहा, ममता बनर्जी की टीएमसी पश्चिम बंगाल में सबसे बड़ी और सत्तारूढ़ पार्टी है। वाम दल और कांग्रेस टीएमसी के खिलाफ चुनाव लड़ते हैं। उन्होंने कहा, ये तीनों दल इंडिया गठबंधन में शामिल हैं तो यह जाहिर है कि सीट बंटवारा जटिल होगा। मुझे यकीन है कि इसे जल्द ही हल कर लिया जाएगा। इंडिया गठबंधन एकजुट होकर चुनाव लड़ेगा। बनर्जी ने बुधवार को कहा कि पार्टी का राज्य में कांग्रेस से कोई रिश्ता नहीं होगा। बनर्जी ने कहा, मैंने उन्हें (कांग्रेस को) सीट बंटवारे पर एक प्रस्ताव दिया था लेकिन उन्होंने शुरू में ही इसे नकार दिया। हमारी पार्टी ने अब बंगाल में अकेले चुनाव लड़ने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने राज्य में सीट बंटवारे पर कांग्रेस में किसी से बात नहीं की है। सूत्रों के अनुसार, टीएमसी ने 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के प्रदर्शन को देखते हुए उसे केवल दो सीट देने की पेशकश की है जिसे लेकर दोनों दलों के बीच खींचतान बढ़ गयी है। आप दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, गोवा और गुजरात में कांग्रेस के साथ सीट बंटवारे पर बातचीत कर रही है। भारद्वाज ने कहा कि दोनों दलों के बीच बातचीत अब तक सकारात्मक रही है।

उन्होंने कहा, (कांग्रेस की) कुछ राज्य इकाइयों से जानकारी की प्रतीक्षा है। जैसे ही जानकारी मिलेगी, बैठक आयोजित की जाएगी । कांग्रेस और आप के बीच सीट बंटवारे को लेकर अब तक दो बैठकें हो चुकी हैं।

# उप्र की झांकी में नमो भारत ट्रेन की झलक देखने को मिलेगी

- यह एक बहुत ही मोहक क्षण होगा जब दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए भारतीय इस झांकी के माध्यम से एनसीआरटीसी द्वारा लाई गई परिवहन क्रांति को देखेंगे।

**नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता**

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) की नमो भारत ट्रेन की प्रतिकृति इस गणतंत्र दिवस पर उत्तर प्रदेश की झांकी में दिखेगी। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि झांकी में साहिबाबाद स्टेशन से शुरू होने वाली क्षेत्रीय त्वरित पारगमन प्रणाली (आरआरटीएस) ट्रेन का प्रदर्शन किया जाएगा।

एनसीआरटीसी ने एक बयान में कहा, इस साल गणतंत्र दिवस समारोह में नमो भारत ट्रेन आकर्षण का केंद्र रहने वाली है। इसकी झलक उत्तर प्रदेश की झांकी में दिखेगी। इसमें साहिबाबाद स्टेशन से चलने वाली आरआरटीएस ट्रेन की लघुकृति प्रदर्शित की जाएगी। बयान में कहा गया है, यह एक बहुत ही मोहक क्षण होगा जब दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए भारतीय इस झांकी के माध्यम से एनसीआरटीसी द्वारा लाई गई परिवहन क्रांति को देखेंगे। समृद्ध विरासत की थीम पर बनी उत्तर प्रदेश की झांकी में राज्य की परियोजनाओं और उपलब्धियों को दशार्या जाएगा। पिछले साल अक्टूबर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के पहले आरआरटीएस का उद्घाटन किया था और एक नमो भारत त्वारित पारगमन ट्रेन को हरी झंडी दिखाई थी जो 180 किमी प्रति घंटे की गति से चल सकती है।

# आर्ट ऑफ इंडिया का तीसरा संस्करण 28 जनवरी से दिल्ली में

नई दिल्ली। आर्ट ऑफ इंडिया का तीसरा संस्करण 28 जनवरी से राष्ट्रीय राजधानी में शुरू होगा। ट्रेडीशन, ट्रांजिशन और मॉर्डर्निटी थीम पर आधारित इस कला महोत्सव में प्रख्यात चित्रकारों की पेंटिंग्स की प्रदर्शनी लगायी जाएगी। इंडिया हैबिटेट सेंटर (आईएचसी) में आयोजित होने वाले और कला समीक्षक अलका पांडे की ओर से पेश इस संस्करण में राजा रवि वर्मा, बी प्रभा, एम एफ हुसैन, गणेश हलोई, मनु पारेख और जयश्री बर्मन जैसे प्रख्यात कलाकारों की पेंटिंग लोगों के समक्ष रखी जाएंगी। पांडे ने एक बयान में कहा, इस वर्ष आर्ट ऑफ इंडिया में भारतीय कला की संपूर्ण गाथा को रागमलिका या बहुत सी कहानियों की एक माला के माध्यम से पेश किया जाएगा.। भारत की रचनात्मक विरासत का दस्तावेज कहे जाने वाले इस आठ दिवसीय महोत्सव में पेंटिंग, चित्रकारी, सिरेमिक, फोटोग्राफी, वीडियो आदि विभिन्न प्रकार के कलात्मक माध्यमों में रची गयी कृतियों को पेश किया जाएगा। प्रदर्शनी का समापन चार फरवरी को होगा और नौ से 15 मार्च तक यह प्रदर्शनी नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए), मुंबई में आयोजित की जाएगी।

# बलात्कार पीड़िता की पहचान का मामला: राहुल के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने संबंधी याचिका का निपटारा

**नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता**

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने बुधवार को उस याचिका का निपटारा कर दिया, जिसमें एक कथित बलात्कार पीड़िता की पहचान उजागर करने के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की गई थी।

अदालत ने राहुल गांधी, पुलिस और सोशल मीडिया मंच एक्स की दलीलों पर गौर करने के बाद इस याचिका का निपटारा कर दिया। किसी बलात्कार पीड़िता की पहचान उजागर करना भारतीय दंड संहिता की धारा 228ए के तहत अपराध है और इस अपराध के लिए दो साल तक की कैद और जुमार्ना हो सकता है।

दिल्ली पुलिस ने उच्च न्यायालय में कहा कि 2021 में कथित बलात्कार पीड़िता की पहचान उजागर करने वाले ट्वीट को लेकर राहुल गांधी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई थी और इस संबंध में जांच अभी जारी है। राहुल गांधी के वकील ने कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मनमीत पीएस अरोड़ा की पीठ को बताया कि उन्होंने उस ट्वीट को हटा लिया है, जिसमें उस नाबालिग दलित लड़की की पहचान का खुलासा होता था, जिसकी कथित तौर पर बलात्कार के बाद हत्या कर दी गई थी। सोशल मीडिया मंच एक्स (पहले ट्विटर) के वकील ने अदालत के समक्ष पुष्टि की कि राहुल गांधी ने ट्वीट खुद ही हटा लिया था। अदालत सामाजिक कार्यकर्ता मकरंद सुरेश म्हाडलेकर की 2021 की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। याचिकाकर्ता की मांग थी कि एक्स पर लड़की की उसके माता-पिता के साथ तस्वीर पोस्ट कर उसकी पहचान उजागर करने के लिए राहुल गांधी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की जाए। विभिन्न पक्षों की दलीलों पर गौर करने के बाद उच्च न्यायालय ने कहा कि याचिका में किए गए अनुरोध से वह संतुष्ट है और उसने याचिका का निपटारा कर दिया।

# गणतंत्र दिवस पर तड़के चार बजे से शुरू हो जाएगी दिल्ली मेट्रो की सेवा

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस परेड देखने कर्तव्य पथ जाने वाले लोगों की सहूलियत के लिए अपनी सेवाएं सभी मार्ग पर तड़के चार बजे से ही शुरू कर देगी। दिल्ली मेट्रो परिवहन निगम (डीएमआरसी) के अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि सुबह छह बजे तक प्रत्येक 30 मिनट पर मेट्रो रेल की सुविधा मिलेगी और इसके बाद पूरे दिन सामान्य सेवा रहेगी। डीएमआरसी ने एक बयान में कहा, जिन लोगों के पास गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लेने के लिए वास्तविक ई-निमंत्रण कार्ड या ई-टिकट होंगे, उन्हें स्टेशनों पर सरकार द्वारा जारी पहचान पत्र दिखाने पर कूपन जारी किए जाएंगे जो कर्तव्य पथ पर पहुंचने के लिए केवल केंद्रीय सचिवालय और उद्योग भवन स्टेशन से बाहर निकलने के लिए मान्य होंगे। बयान में कहा गया कि यही कूपन इन दोनों स्टेशन के रास्ते वापसी की यात्रा के लिए भी मान्य होंगे। अधिकारियों ने आगे कहा कि जिन यात्रियों को निमंत्रण कार्ड पर 1 से 9 और वी1 और वी2 संख्या के इन्क्लोजर में सीट चिह्नित की गई है उन्हें उद्योग भवन स्टेशन पर उतरना चाहिए। डीएमआरसी ने कहा, इसी प्रकार, 10 से 24 और वीएन इन्क्लोजर में चिह्नित (निमंत्रण कार्ड के साथ) सीट के लिए लोगों को केंद्रीय सचिवालय स्टेशन पर उतरने की सलाह दी जाती है। यात्रियों को इसके बारे में सूचित करने के लिए ट्रेन के अंदर नियमित घोषणाएं भी की जाएंगी ताकि वे अपने इनक्लोजर तक आसानी से पहुंचने के लिए निर्धारित स्टेशन पर उतरें।

# स्व. कपूर्री ठाकुर के 100वीं जन्म जयंती पर अर्पित की पुष्पांजलि

**नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता**

गरीबों व वंचितों की सशक्त आवाज, सामाजिक समरसता के प्रतीक एवं कुशल राजनीतिज्ञ, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जन नायक स्वर्गीय कपूर्री ठाकुर की 100वीं जन्म जयंती और उन्हें भारत रत्न मिलने के अवसर पर भाजपा दिल्ली प्रदेश ओबीसी मोर्चा द्वारा भाजपा प्रदेश कार्यालय में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गयी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और ओ.बी.सी. मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष सुनील यादव ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ओबीसी समाज की ओर से हार्दिक आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होने कहा कि स्व. कपूर्री ठाकुर जी भारत रत्न के हकदार थे और प्रधानमंत्री ने इस बात को स्वीकार कर उनकी 100 वीं जन्म जयंती पर भारत रत्न देकर सच्ची श्रद्धांजलि दी है। वीरेंदर सचदेवा ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक, राजनीतिज्ञ और बिहार राज्य के दो बार मुख्यमंत्री और एक बात उपमुख्यमंत्री रह चुके है। दशकों तक विधायक और विरोधी दल के नेता और समाजिक न्याय के पुरोधा महान जननायक कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न से सम्मानित करने का निर्णय के लिए प्रधानमंत्री जी का आभार प्रकट करता हूँ। उन्होंने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार द्वारा कपूर्री ठाकुर के जन्म शताब्दी वर्ष पर उन्हें भारत रत्न से सम्मानित करने का निर्णय उनके अथक संघर्षों को सच्ची श्रद्धांजलि है। श्री सचदेवा ने कहा कि इस निर्णय से युवा पीढ़ी भी कपूर्री ठाकुर जी के महान योगदान को जान पाएगी। पिछड़ों और वंचितों के उत्थान के लिए कपूर्री ठाकुर जी के दूरदर्शी नेतृत्व ने भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य पर अमिट छाप छोड़ी है। सुनील यादव ने कहा जननायक श्री कपूर्री ठाकुर ने अपने दो कार्यकाल में जिस तरह की छाप बिहार के समाज पर छोड़ी है, वैसा दूसरा उदाहरण नहीं दिखता। खास बात ये भी है कि वे बिहार के पहले गैर-कांग्रेसी मुख्यमंत्री थे। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय उन्होंने ढाई महीने जेल में बिताए थे। बेदाग छवि के श्री कपूर्री ठाकुर आजादी से पहले 2 बार और आजादी मिलने के बाद 18 बार जेल गए। श्री सुनील यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के इस निर्णय से देश के पूरे ओबीसी समाज में खुशी का माहौल है। उनकी कोशिशों के चलते ही मिशनरी स्कूलों ने हिंदी में पढ़ाना शुरू किया और आर्थिक तौर पर गरीब बच्चों की स्कूल फी को माफ करने का काम भी उन्होंने किया था। वो देश के पहले मुख्यमंत्री थे, जिन्होंने अपने राज्य में 10वीं तक मुफ्त पढ़ाई की घोषणा की थी। इस अवसर पर दिल्ली भाजपा ओबीसी मोर्चा के

# स्पर्श सीसीटीवी एआई-संचालित अत्याधुनिक सुरक्षा तकनीकों के साथ अयोध्या में सुरक्षा बढ़ाता है

**नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता**

नई दिल्ली सुरक्षा उपायों को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण छलांग में, स्पर्श सीसीटीवी उन्नत निगरानी में अग्रणी ने गर्व से अयोध्या में प्रतिष्ठित प्रमुख स्थानों पर साइबर सिक्योर्ड हाई-टेक सीसीटीवी कैमरों की सफल स्थापना की घोषणा की। मंदिर के प्रवेश द्वार, अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन, कार पार्किंग स्थलों और अयोध्या शहर के प्रमुख प्रवेश बिंदुओं पर रणनीतिक रूप से कई कैमरे लगाए गए हैं। सुरक्षा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के साथ, स्पर्श की तकनीक इस श्रद्धेय भक्ति स्थल की पवित्रता को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कैमरे पारंपरिक निगरानी से परे हैं, दक्षता के साथ अद्वितीय सटीकता प्रदान करते हैं। सुविधाओं में रीयल-टाइम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, चेहरे की पहचान, व्यवहार विश्लेषण, विसंगति का पता लगाने, स्वचालित अलर्ट और बेहतर सुरक्षा और निगरानी के लिए बदलते परिवेश को सीखने और अनुकूलित करने की क्षमता शामिल है। प्रवेश द्वार और महत्वपूर्ण क्षेत्रों में चेहरा पहचान सुरक्षा को बढ़ाती है और अत्याधुनिक तकनीक के साथ पहुंच को सुव्यवस्थित करती है। ये कैमरे परंपरा के साथ प्रौद्योगिकी को समेकित रूप से एकीकृत करके, सांस्कृतिक संरक्षण और आधुनिक सुरक्षा उपायों के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण को सुनिश्चित करके सुरक्षा में क्रांति लाने के लिए तैयार हैं।

अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन एक उल्लेखनीय तकनीकी परिवर्तन से गुजरता है, जिसमें साइबर-सुरक्षित स्पर्श सीसीटीवी कैमरे, उन्नत वीडियो प्रबंधन, एआई सॉफ्टवेयर और बढ़ी हुई सुरक्षा और दक्षता के लिए फेस रिकग्निशन है। अगले तीन महीनों में, इस प्रणाली को लाखों चेहरों का एक व्यापक डेटाबेस उत्पन्न करने का अनुमान है, जिससे इस प्रमुख परिवहन केंद्र में सुरक्षा बढ़ेगी और यात्री प्रबंधन को सुव्यवस्थित किया जाएगा।

अयोध्या रेलवे स्टेशन पर लगे कैमरों को नई दिल्ली के रेल भवन स्थित वॉर रूम में लाइव स्ट्रीम किया जा रहा है। शुभ अवसर से ठीक एक दिन पहले रेलवे बोर्ड के अधिकारियों से आवश्यकता प्राप्त करने के बाद वॉर रूम स्ट्रीमिंग को 6 घंटे से भी कम समय में सक्षम किया गया था।

नंबर प्लेट पहचान के साथ स्मार्ट पार्किंग समाधान - अयोध्या में बढ़ती पार्किंग चुनौतियों का समाधान करने के लिए, एक परिष्कृत पार्किंग सुविधा प्रबंधन प्रणाली लागू की गई है। यह अत्याधुनिक समाधान न केवल सुरक्षित पार्किंग की गारंटी देता है बल्कि पूरे शहर में कुशल यातायात प्रबंधन की सुविधा भी प्रदान करता है। केंद्रीकृत प्रबंधन प्रणाली स्थापित की गई है, जो वास्तविक समय की उपलब्धता अपडेट प्रदान करने के लिए सभी पार्किंग स्थलों को जोड़ती है। इसके अतिरिक्त, एकीकृत पीए प्रणाली प्रत्येक स्थान के साथ सहज वास्तविक समय संचार को सक्षम बनाती है। नंबर प्लेट पहचान के साथ सुरक्षित राजमार्ग प्रविष्टियां - नंबर प्लेट पहचान कैमरों की तैनाती के साथ अयोध्या के सात प्रमुख राजमार्ग प्रवेश बिंदुओं को मजबूत किया गया है। यह रणनीतिक उपाय नियंत्रित और निगरानी पहुंच सुनिश्चित करता है, सार्वजनिक सुरक्षा, यातायात विनियमन और कानून प्रवर्तन प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

4 जी-सक्षम पीए स्पीकर के माध्यम से वैश्विक घोषणाएं - 4 जी-सक्षम सार्वजनिक घोषणा (पीए) स्पीकर विभिन्न प्रमुख स्थानों पर स्थापित हैं। यह अभूतपूर्व पहल अधिकारियों को दुनिया में कहीं से भी दूरस्थ रूप से घोषणाएं करने में सक्षम बनाती है, नियमित संचालन के दौरान कुशल संचार सुनिश्चित करती है और आपात स्थिति के दौरान तेज प्रतिक्रिया क्षमता सुनिश्चित करती है। यह अनूठा उत्पाद एक दिन के समय में बनाया गया था, जब आवश्यकता आई कि पीए सिस्टम को राम मंदिर के पास केबल लगाने के लिए कोई समय नहीं होना चाहिए, इस प्रकार 4 जी सक्षम स्पीकर लगाने का विचार आया। इस विकास पर टिप्पणी करते हुए, श्री संजीव सहगल, संस्थापक और एमडी स्पर्श ने कहा, अयोध्या के लिए पसंदीदा सुरक्षा और निगरानी भागीदार के रूप में चुना जाना स्पर्श में हमारे लिए सम्मान की बात है। हमारे तकनीकी रूप से उन्नत एआई-संचालित उत्पादों के साथ, हम न केवल आज, बल्कि भविष्य में भी अयोध्या की सुरक्षा और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सटीक डेटा की सुरक्षा और सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम होंगे। यह हमें एक निगरानी समाधान के साथ उभरते खतरों से आगे रहने में सक्षम करेगा जो न केवल देखता है, बल्कि समझता भी है। स्पर्श पहला भारतीय सीसीटीवी ब्रांड है जो पिछले दो दशकों से चालू है और यह पीएम के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए समर्पित है।

# प्रगति मैदान में मार्च तक तीन बड़े आयोजन, हो रही तैयारी

नई दिल्ली। प्रगति मैदान में लगातार आयोजनों की संख्या बढ़ रही है। अगले दो महीनों के अंदर प्रगति मैदान में तीन बड़े कार्यक्रम होने जा रहे हैं। इनमें आहार मेला, दिल्ली वर्ल्ड पुस्तक मेला और नक्षत्र मेला शामिल है। आईटीपीओ से जुड़े अधिकारी कहते हैं कि भारत मंडपम के साथ ही आधुनिक एग्जीबिशन एवं कन्वेंशन सेंटर तैयार होने के बाद से कार्यक्रमों की संख्या बढ़ रही है। बीते वर्ष आहार मेला करीब 91 हजार वर्ग मीटर में आयोजित किया गया था लेकिन इस बार 1.10 लाख वर्ग मीटर का क्षेत्र आरक्षित किया गया है। साल 2023 में 1602 प्रदर्शनी आयोजक शामिल हुए थे। इस बार इनकी संख्या दो हजार के पार जाने की संभावना है। आहार मेले को अंतरराष्ट्रीय फूड और हॉस्पिटैलिटी फेयर के नाम से भी जाना जाता है। हॉल नंबर एक से लेकर 15 तक इसके लिए आरक्षित किया गया है। 7 से 11 मार्च के बीच होने वाले मेले के लिए 300 रुपये प्रति व्यक्ति का टिकट रखा गया है। वहीं, बुक फेयर का आयोजन 10-18 फरवरी के बीच होना है, जिसके लिए हॉल नंबर एक से पांच को आरक्षित किया गया है।

# सरकारी स्कूलों में वार्षिक परीक्षा 15 फरवरी से

नई दिल्ली। शिक्षा निदेशालय ने शैक्षणिक सत्र 2023-24 के लिए स्कूलों, सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों और एनडीएमसी स्कूलों में कक्षा तीसरी से लेकर 11वीं कक्षा तक की वार्षिक परीक्षा के आयोजन को लेकर कार्यक्रम जारी कर दिया है। सुबह/सामान्य पाली के स्कूलों मंक परीक्षाओं की शुरूआत 15 फरवरी से होगी और 18 मार्च को समापन हो जाएगा। जबकि शाम की पाली में संचालित होने वाले स्कूलों में परीक्षा 16 फरवरी से शुरू होकर 19 मार्च को समाप्त होगी। इस संबंध में निदेशालय की परीक्षा शाखा ने सर्कुलर जारी किया है। कक्षा नौवीं के छात्रों की 15 फरवरी को गणित विषय की और कक्षा 11 वीं के छात्रों की अर्थशास्त्र विषय की परीक्षा होगा। जबकि सुबह/सामान्य पाली के स्कूलों में कक्षा तीसरी, चौथी, छठी और आठवीं की परीक्षा एक मार्च से और पांचवीं और सातवीं कक्षा की परीक्षाएं चार मार्च से शुरू होंगी।

**उत्तर रेलवे**

आज़ादी का अमृत महोत्सव

**ई–निविदा सूचना**

भारत के राष्ट्रपति की ओर से प्रवर मण्डल अभियन्ता/समन्वय द्वारा ई टेन्डर जिनके बन्द होने की तिथि प्रत्येक निविदा के सामने अंकित है। निम्न टेन्डर संख्या के अर्न्तगत आंमत्रित किये जाते है जो उसी दिन 16:00 बजे तक प्राप्त किये जायेंगे। निविदा की कीमत तथा धरोहर राशि का भुगत

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण

# राजधानी किरण

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, गुरुवार 25 जनवरी, 2024

## गणतंत्र दिवस परेड में दिखा महिला शक्ति और शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन

- दिल्ली पुलिस, अर्धसैनिक बलों, आर्मी, नेवी, एनसीसी, कोस्ट गार्ड व एयरफोर्स ने कर्तव्य पथ से लेकर लाल किला तक परेड की

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

इस बार गणतंत्र दिवस परेड में शक्ति और शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन देखने को मिलेगा, जिसमें महिला शक्ति अहम भूमिका निभा रही है। इसकी झलक मंगलवार को परेड की फुल ड्रेस रिहर्सल में दिखाई दी। अब 26 जनवरी को प्रदर्शन किया जाएगा। पहली बार दिल्ली पुलिस की महिला जवान, सेना की महिला अधिकारियों और चिकित्सकीय सेवा से जुड़ीं महिला कर्मियों का दस्ता परेड करता नजर आया। इसी तरह सांस्कृतिक कार्यक्रम में पहली बार 1,500 महिला लोक नृत्य कलाकार अपने नृत्य से लोगों को तालियां बजाने पर मजबूर किया। बीएसएफ, सीआइएसफ और अन्य अर्धसैनिक बलों की महिला जवानों ने हैरतअंगेज करतब दिखाएं। वाद्य यंत्रों से लैस महिला दल करेगा परेड की अगुवाई- इस बार परेड की अगुवाई रक्षा मंत्रालय के दस्ते नहीं बल्कि शंख, नगाड़े, डमरू जैसे प्राचीन वाद्य यंत्रों से लैस सौ महिलाओं का एक दस्ता करेगा। इसके ठीक पीछे देशभर के अलग-अलग हिस्सों से 15 सौ से अधिक नृत्यांगनाओं का एक दल होगा। जो देश की विविधता से सभी को परिचित कराएगा। फुल ड्रेस रिहर्सल में परखी गई गणतंत्र दिवस की तैयारी- आगामी गणतंत्र दिवस समारोह को लेकर सुरक्षा के बेहद खास बंदोबस्त किए गए हैं। इस बार सबसे अधिक चौकसी बरती जा रही है। मंगलवार को कड़ी सुरक्षा के बीच कर्तव्य पथ से लेकर लाल किला तक फुल ड्रेस रिहर्सल कर गणतंत्र दिवस की तैयारी परखी गई। पुलिस अधिकारी का कहना है कि दिल्ली पुलिस पिछले एक माह से अधिक समय से रक्षा एवं गृह मंत्रालय समेत सभी केंद्रीय एजेंसियों व अर्धसैनिक बलों के साथ सुरक्षा तैयारी में जुटी है। रिहर्सल के कारण नई दिल्ली, मध्य और उत्तरी जिले में परेड मार्ग एवं डमी वीआइपी के आवागमन वाले रूटों पर पुलिसकर्मी तैनात कर दिए गए। कई रूटों को डायवर्ट कर दिया गया, आम लोगों के लिए बंद कर दिया गया था। डमी प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति समेत अन्य वीआइपी के कारकेड के साथ भी रिहर्सल की गई। सुबह करीब नौ बजे से कर्तव्य पथ पर परेड शुरू हुई। दिल्ली पुलिस, अर्धसैनिक बलों, आर्मी, नेवी, एनसीसी, कोस्ट गार्ड व एयरफोर्स ने कर्तव्य पथ से लेकर लाल किला तक परेड की। दोपहर एक बजे तक रिहर्सल चली। इस दौरान राज्यों की झांकियां निकाली गईं और आर्मी, सीमा सुरक्षा बल व एयरफोर्स ने हैरतअंगेज करतब दिखाए। वायु सेना के विमानों ने आसमान में कलाबाजी की।

## दिल्ली में भगवा झंडे और राम की तस्वीरों वाले बैनर उतार दें : एमसीडी और एनडीएमस का निर्देश

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे भगवान राम की तस्वीरों वाले झंडों पोस्टरों और बैनरों पर नजर रखें और उन्हें सड़कों पर गिरने से बचाने के लिए उतार दें। 22 जनवरी यानी भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर दिल्ली के 700 बाजारों में 10 लाख झंडे लगाए गए थे। एमसीडी और एनडीएमसी ने इसको लेकर निर्देश जारी किया है। पीटीआई, नई दिल्ली। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर दिल्ली के बाजारों में लगाए भगवा झंडे और बैनर को हटाने का निर्देश दिया गया है। एमसीडी और एनडीएमसी ने भगवान राम और हनुमान की तस्वीरों वाले झंडों और बैनरों को सावधानीपूर्वक हटाने के निर्देश जारी किए हैं। बता दें कि 22 जनवरी यानी भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर दिल्ली के 700 बाजारों में 10 लाख झंडे लगाए गए थे। अब प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न हो जाने के बाद अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे भगवान राम की तस्वीरों वाले झंडों, पोस्टरों और बैनरों पर नजर रखें और उन्हें सड़कों पर गिरने से बचाने के लिए उतार दें।

## दिल्ली धुंध: विशेषज्ञों ने वायु प्रदूषण से निपटने के लिए क्षेत्रीय सहयोग का आग्रह किया

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

विशेषज्ञों का कहना है कि वायु प्रदूषण से निपटने के लिए वर्तमान में अपनाए जा रहे शहरी-केंद्रित उपायों में ग्रामीण स्रोतों की अनदेखी की गई है। विशेषज्ञों ने मेक्सिको सिटी और लॉस एंजिलिस में सफल मॉडल से प्रेरित होकर क्षेत्रीय वायु गुणवत्ता योजनाएं बनाने की सलाह दी है। इंग्लैंड के सरे विश्वविद्यालय और दिल्ली के क्षेत्रीय सरकारी अधिकारियों के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास के दौरान ग्रामीण स्रोतों जैसे फसल जलाने, लकड़ी के चूल्हे और बिजली संयंत्रों को शहरी धुंध के प्रमुख योगदानकताओं के रूप में पहचाना गया है। सारे विश्वविद्यालय में ग्लोबल सेंटर फॉर क्लीन एयर रिसर्च (जीसीएआरई) के निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने इस बात पर जोर दिया कि वायु प्रदूषण शहर की सीमाओं को पार कर जाता है जिसके लिए क्षेत्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। कुमार और दिल्ली के विशेषज्ञों के एक अध्ययन में कहा गया है कि वर्तमान शहरी-केंद्रित उपाय जैसे कि सार्वजनिक परिवहन को बढ़ाना या औद्योगिक उत्सर्जन को नियंत्रित करना, इन ग्रामीण स्रोतों की अनदेखी करते हैं। जीसीएआरई मेक्सिको सिटी और लॉस एंजिलिस में सफल मॉडल के समान क्षेत्रीय वायु गुणवत्ता योजनाएं बनाने का प्रस्ताव करता है। निगरानी बढ़ाने के लिए विशेषज्ञ प्रदूषण स्रोतों का पता लगाने और मौसम की स्थिति के पारस्परिक प्रभाव का अनुमान करने के लिए उपग्रह प्रौद्योगिकी का उपयोग करके धुंध पूवार्नुमान उत्पन्न करने का सुझाव देते हैं। स्थानीय, क्षेत्रीय और संघीय एजेंसियों के बीच समन्वय की सुविधा के लिए एयरशेड काउंसिल की स्थापना का भी प्रस्ताव है। अध्ययन के लेखकों में से एक दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति के अनवर अली खान ने सहयोगात्मक कार्रवाई में पड़ोसी राज्यों की महत्वपूर्ण भूमिका, वैज्ञानिक रूप से सुदृढ़ कार्य योजना की आवश्यकता और बेहतर निगरानी पर जोर दिया।

## दिल्ली में फिर चाकूबाजी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में अपराध की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। ताजा मामले में आपसी बहस के बाद एक युवक की चाकू से गोदकर हत्या कर दी गई। समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक, दिल्ली के आनंद पर्वत पुलिस स्टेशन क्षेत्र में बहस के बाद एक व्यक्ति की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। इस मामले में 22 वर्षीय आरोपित को गिरफ्तार किया गया है। डिलीवरी का काम करता है आरोपी- मृतक की पहचान कमल के रूप में हुई है जो दिल्ली के पटेल नगर इलाके के पंजाबी बस्ती का रहने वाला था। वहीं, पकड़ा गया आरोपी सूरज डिलीवरी का काम करता है और कमल उसका पड़ोसी था। पुलिस पूछताछ के दौरान, आरोपी सूरज ने खुलासा किया कि उसकी कमल के साथ तीखी बहस हुई थी जो गाली-गलौज और शारीरिक हिंसा तक बढ़ गई थी। वारदात में इस्तेमाल चाकू बरामद- इस दौरान उसने अपना आपा खो दिया और कमल पर चाकू से वार कर दिया। इसके बाद गंभीर हालत में कमल को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। आईपीसी की धारा 302 के तहत मामला दर्ज- पुलिस ने बताया कि आरोपी सूरज के खिलाफ आनंद पर्वत पुलिस स्टेशन में आईपीसी की धारा 302 के तहत मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। साथ ही गिरफ्तारी के दौरान अपराध में इस्तेमाल चाकू भी बरामद कर लिया गया है। नाम मोहम्मद फारुक है। वह बारा हिंदूराव इलाके का रहने वाला है ।इसके मंडावली, सदर बाजार और बारा हिंदूराव आदि पुलिस थाने में डकैती, लूटपाट, झपटमारी और चोट पहुंचाने आदि के पांच से अधिक आपराधिक मामले दर्ज हैं। 21 जनवरी को एसआई नीलम को सूचना मिली की मंडावली में लूट के मामले में छह साल से वांछित अपराधी किसी से मिलने सदर बाजार आ रहा है। एसीपी विजय कुमार रस्तोगी, एसएचओ कन्हैया लाल यादव के नेतृत्व में पुलिस टीम ने उसे दबोच लिया। पूछताछ के बाद उसे मंडावली पुलिस को सौंप दिया गया।

## पालतू कुत्ते ने बच्चे को नोचा, जबड़े में जकड़ लिया पैर

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्वी दिल्ली के विश्वास नगर इलाके में मंगलवार को दो वर्ष के बच्चे को कुत्ते ने काट लिया। यह तब हुआ जब एक महिला अपने कुत्ते को गली में टहला रही थी, तभी कुत्ता बच्चे पर झपट्ट गया। लोगों ने कुत्ते को हटाने की बहुत कोशिश की थी। कुत्ते ने बच्चे का पैर नहीं छोड़ा। बच्चे को बचाने के चक्कर में मां गली में गिर गई। लोगों ने जब कुत्ते को मारा तब उसने बच्चे को छोड़ा। 24 घंटे में आवारा कुत्तों ने 47 बच्चों समेत 260 लोगों को काटा- उधर, दिल्ली से सटे गाजियाबाद के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवारा कुत्तों का आतंक बढ़ता ही जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट के अनुसार 24 घंटे में आवारा कुत्तों ने 47 बच्चों समेत 260 लोगों को काटा है। सभी ने अलग-अलग स्वास्थ्य केंद्रों पर पहुंचकर एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाई है। इनमें एक एनडीआरएफ का जवान और कविनगर थाने में तैनात सिपाही भी शामिल हैं। मंगलवार को अकेले जिला एमएमजी अस्पताल में 109 लोगों ने एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाई है। इसके अलावा 61 लोगों ने दूसरी और 49 लोगों ने वैक्सीन की तीसरी डोज लगवाई है। संजयनगर स्थित संयुक्त अस्पताल में 42 लोगों ने पहली और 116 लोगों ने दूसरी व तीसरी डोज लगवाई है।

## दिल्ली में एक जैसे रंग और डिजाइन की रहेंगी डीटीसी और क्लस्टर सेवा की इलेक्ट्रिक बसें

- डीटीसी 12 मीटर लंबी 1200 इलेक्ट्रिक बसें सड़कों पर चला रही है। डीटीसी 600 और इलेक्ट्रिक बसें जल्द सड़कों पर उतारेगी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली में अब क्लस्टर स्कीम में भी इलेक्ट्रिक बसें सड़कों पर उतारी जाएंगी। अगर आप यह सोच रहे हैं कि इन बसों का रंग और डिजाइन और साइज अलग होगा तो आप का यह सोचना गलत है। ये बसें बिल्कुल डीटीसी की इलेक्ट्रिक बसों की तरह होंगी। दो फरवरी से सड़कों पर उतारने की तैयारी- वैसे अभी तक डीटीसी और डिम्ट्स के तहत आने वाली बसें अलग अलग रंग में आती रही हैं। हालांकि लोगों को अब यह पहचान पाना थोड़ा मुश्किल होगा कि ये बस किस सेवा की है, डीटीसी की है या क्लस्टर सेवा की है। क्लस्टर में 12 मीटर लंबी 300 नई इलेक्ट्रिक बसें आ गई हैं। जिनकी रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया पूरी हो गई है। दोनों की बसों में होगा केवल लॉगो का फर्क- इन बसों के जीपीएस, सीसीटीवी कैमरे व पैनिक बटन को कंट्रोल रूम से जोड़ दिया गया है। डीटीसी और क्लस्टर सेवा की इलेक्ट्रिक बसें एक ही रंग और डिजाइन और साइज वाली रहेंगी। दोनों की बसों में केवल लोगो का फर्क होगा। डीटीसी की बसों पर डीटीसी का लोगो होगा और क्लस्टर की बसों पर डिम्ट्स का लोगो होगा। दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग के सूत्र बताते हैं कि जेबीएम की इन इलेक्ट्रिक एसी बसों को दो फरवरी को सड़कों पर उतारने की तैयारी चल रही है। सरकार 12 मीटर लंबाई वाली बस को 62.7 रुपये प्रति किलोमीटर की दर से भुगतान करेगी। अभी दिल्ली में डीटीसी के तहत इलेक्ट्रिक एसी बसें आ रही थीं। फिलहाल डीटीसी 12 मीटर लंबी 1200 इलेक्ट्रिक बसें सड़कों पर चला रही है। डीटीसी 600 और इलेक्ट्रिक बसें जल्द सड़कों पर उतारेगी, लेकिन अब अगले महीने से क्लस्टर में भी ऑरेंज रंग की स्टैंडर्ड फ्लोर नान एसी बसों की जगह इलेक्ट्रिक बसें लेनी शुरू कर देंगी। सरकार ने 2,940 नई इलेक्ट्रिक बसों के लिए दिए ऑर्डर- इससे बसों की कमी से जूझ रहे लोगों को राहत मिलेगी। सरकार ने दिसंबर 2025 तक 2,940 नई इलेक्ट्रिक बसों को क्लस्टर बेड़े में शामिल करने के लिए ऑर्डर दिए हैं। परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने राजधानी की सड़कों पर क्लस्टर स्कीम में बसें लाने की तैयारी कर रही कंपनियों के अधिकारियों के साथ बैठक की और ई-बसों को तेजी से लाने के निर्देश दिए हैं। क्लस्टर स्कीम में आने वाली बसों के लिए 27 डिपो तैयार किए गए हैं। अभी क्लस्टर की इलेक्ट्रिक बसों को बुराड़ी-दो व राहिणी-37 के डिपो में रखा गया है ।जिसमें से एक इलेक्ट्रिक बस का ट्रायल रन भी चल रहा है।

## एआई से पकड़े गए कातिल: शव की आंखें खोल खींची फोटो, फिर हुई मृतक की पहचान

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली पुलिस ने एआई यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से 14 दिन पहले मिली एक लाश की पहचान की और फिर उसके हत्यारों तक पहुंची। मिली जानकारी के मुताबिक, पुलिस ने एआई की मदद के मृतक की आंख खुली हुई फोटो खींची। जिसके बाद उस फोटो को सभी थानों और व्हाट्सएप पर साझा किया गया। इसके बाद दिल्ली पुलिस को एक कॉल आया। जिसमें मृतक के भाई ने शव की पहचान अपने बड़ी भाई के रूप में की। इसके बाद पुलिस ने जांच को और तेज की। जांच में पता चला कि मृतक का किसी बात को लेकर अपने तीन दोस्तों से झगड़ा हुआ था। तीनों ने मिलकर उसकी गला दबाकर हत्या कर दी थी और लाश को दिल्ली के गीता कॉलोनी फ्लाइओवर के नीचे फेंक दिया था। जानकारी के लिए बता दें कि 10 जनवरी को पुलिस को फ्लाइओवर के नीचे से लाश मिली थी और पुलिस को पता चला था कि मृतक की मौत गला दबाकर हुई थी।

## दिल्ली में 26 जनवरी को सभी लाइनों पर सुबह चार बजे से शुरू होंगी मेट्रो सर्विस

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आने वाले गणतंत्र दिवस के दिन दिल्ली मेट्रो की सेवाएं सुबह चार बजे से शुरू हो जाएंगी। इसकी जानकारी देते हुए डीएमआरसी ने बताया कि सभी लाइनों पर मेट्रो शुक्रवार 26 जनवरी को सुबह चार बजे से संचालित होगी ताकि जो लोग गणतंत्र दिवस की परेड देखने कर्तव्य पथ आ रहे हैं उन्हें सहुलियत हो सके। सुबह चार से छह बजे तक हर आधे घंटे में मेट्रो सेवा संचालित होगी। इसके बाद सामान्य समय पर मेट्रो को संचालन होगा।

## दिल्ली में सीनियर छात्रों की पिटाई से हुई स्कूली छात्र की मौत पर रहस्य बरकरार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

उत्तरी दिल्ली के एक सरकारी स्कूल के कुछ वरिष्ठ छात्रों द्वारा कथित तौर पर हमला किए जाने के नौ दिन बाद 12 वर्षीय लड़के की मौत पर रहस्य बरकरार है। शास्त्री नगर में दिल्ली के सरकारी स्कूल में कक्षा छह के छात्र के परिवार ने उस निजी डॉक्टर की चिकित्सकीय लापरवाही पर उंगली उठाई है, जिसने शुरू में लड़के का इलाज किया था। शर्मा के अनुसार, उनका बेटा 11 जनवरी को स्कूल गया था और जब वह शौचालय से बाहर निकला तो कथित तौर पर कक्षा नौ और 10 के कुछ छात्रों ने उस पर हमला किया। गंभीर चोटों के साथ घर लौटने पर, लड़के ने अपने माता-पिता को घटना के बारे में सूचित किया। शर्मा ने कहा कि वह अपने बेटे को उत्तर-पश्चिम दिल्ली के एक सरकारी अस्पताल में ले गए, जहां प्रारंभिक चिकित्सा सहायता प्रदान की गई। हालाँकि, आथोर्पेडिक विभाग, जो चोटों की गंभीरता को समझने के लिए महत्वपूर्ण था, उस समय कथित तौर पर बंद था। इस झटके का सामना करते हुए, शर्मा ने रोहिणी सेक्टर-7 के एक निजी डॉक्टर से मदद मांगी, जिन्होंने घायल बच्चे के लिए दवाएँ लिखीं। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, लड़के की हालत खराब होती गई और उसने कथित तौर पर खाना बंद कर दिया। उसके बिगड़ते स्वास्थ्य के बारे में चिंतित होकर, परिवार 20 जनवरी को सरकारी अस्पताल लौट आया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। शर्मा ने एक दिल दहला देने वाले रहस्योद्घाटन में दावा किया कि उन्होंने हमले के बारे में पूछताछ करने के लिए व्यक्तिगत रूप से स्कूल का दौरा किया। उनके अनुसार, दो छात्रों ने उनके बेटे के बयान की पुष्टि करते हुए कहा कि वास्तव में कुछ वरिष्ठ छात्रों ने उस पर हमला किया था। हालांकि, वे उन छात्रों की पहचान नहीं कर सके। इस बीच, पुलिस उपायुक्त (उत्तर) मनोज कुमार मीणा ने कहा कि मौत के कारण का पता लगाने के लिए डॉक्टरों के एक बोर्ड द्वारा पोस्टमार्टम किया जा रहा है। डीसीपी ने कहा, शव परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इससे पहले दिल्ली सरकार ने भी मंगलवार को घटना की जांच के आदेश दिए थे। एक अधिकारी ने कहा, दिल्ली सरकार शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करती है, जिन्होंने ऐसी दुःखद घटना में अपने बच्चे को खो दिया। कथित घटना स्कूल परिसर के बाहर हुई, क्योंकि माता-पिता ने सीसीटीवी फुटेज की मांग की, जिसका पता लगाया गया है। अधिकारी ने कहा, मामले में पहले ही त्वरित जांच का आदेश दिया जा चुका है और समिति से दो दिन के भीतर रिपोर्ट मांगी गई है और स्कूल के प्रमुख से एक औपचारिक रिपोर्ट आज ही सौंपी जानी है। दिल्ली सरकार सकारात्मक मानसिक स्थिति को बढ़ावा देने और किसी भी संभावित अप्रत्याशित घटनाओं को रोकने के लिए छात्रों को परामर्श देने सहित आवश्यक उपाय सक्रिय रूप से कर रही है।

## कांग्रेस-आप के बीच पंजाब में तस्वीर साफ, दिल्ली में गठबंधन पर केजरीवाल के मंत्री ने कही ये बात

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लोकसभा चुनाव में रोकने की कोशिश में लगी कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। पहले पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अकेले चुनाव लड़ने की घोषणी की। इसके बाद पंजाब को लेकर मुख्यमंत्री भगवंत मान ने बड़ा फैसला लिया है। पंजाब को लेकर मान का ये एलान- पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने बुधवार को एलान किया कि आम आदमी पार्टी राज्य की सभी 13 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ेगी। कांग्रेस के साथ गठबंधन पर मुख्यमंत्री ने कहा कि हम पंजाब में (गठबंधन को लेकर) ऐसा कुछ नहीं कर रहे हैं। उन्होंने पंजाब की 13 सीटों पर कहा कि लोकसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी के पक्ष में 13-0 हैं। ममता के फैसले पर आप की प्रतिक्रिया- वहीं, ममता बनर्जी के फैसले के बाद दिल्ली सरकार में मंत्री और आप नेता सौरभ भारद्वाज कहा कि आईएनडीआईए ब्लॉक के सदस्यों तृणमूल कांग्रेस, वाम दलों और कांग्रेस के बीच सीटों का बंटवारा जटिल होगा। हालांकि उन्होंने उम्मीद जताई कि किसी भी मतभेद को जल्द ही सुलझा लिया जाएगा। कांग्रेस के साथ गठबंधन पर सौरभ भारद्वाज का बयान- इसके अलावा अरविंद केजरीवाल के मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि आप पांच राज्यों में कांग्रेस के साथ सीट शेयरिंग के मुद्दे पर भी चर्चा कर रही है। अअढ दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, गोवा और गुजरात में कांग्रेस के साथ सीट बंटवारे की बातचीत में भी शामिल है। भारद्वाज ने कहा कि दोनों दलों के बीच अब तक की बातचीत सकारात्मक रही है। उन्होंने कहा कि कुछ राज्य इकाइयों (कांग्रेस की) से इनपुट का इंतजार है। जैसे ही वे आएंगे, एक बैठक आयोजित की जाएगी। हालांकि, इस बीच पंजाब को लेकर भगवंत मान ने तस्वीर साफ कर दी है। आम आदमी पार्टी नेता और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने अकेले लोकसभा चुनाव लड़ने का फैसला किया है। खास बात है कि लोकसभा चुनाव के लिए गठबंधन और सीट शेयरिंग पर बातचीत के लिए कांग्रेस और आप के बीच अब तक दो बैठके हुई हैं।

## अस्पताल में इजाल के दौरान 12 साल के बच्चे की मौत, स्कूल के सीनियर्स पर आरोप

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली पुलिस ने बताया कि 12 साल के एक बच्चे की 20 जनवरी को अस्पताल में मौत हो गई। आरोप है कि दिल्ली के एक स्कूल में सीनियर्स ने बच्चे पर हमला किया था। जिसके नौ दिन बाद उसकी मौत हो गई। अभी तक मौक की वजह सामने नहीं आई है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पुलिस कानूनी कार्रवाई करेगी। यह घटना बीती 11 जनवरी को हुई थी। जिसके बाद 20 जनवरी को बच्चे की मौत हो गई।

## एनजीटी ने कहा: वायु प्रदूषण नियमों का उल्लंघन होने पर आयोग से करें शिकायत

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने कहा कि यदि वायु प्रदूषण नियंत्रण योजना (ग्रैप) का उल्लंघन होता है, तो आवेदक को केंद्र के वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) से संपर्क करना चाहिए। एनजीटी अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की अध्यक्षता वाली पीठ ने 19 जनवरी को पारित अपने आदेश में कहा था कि वर्तमान में निर्माण और तोड़फोड़ पर कोई प्रतिबंध नहीं है, क्योंकि प्रतिबंध हटा दिए गए हैं। पीठ जिसमें न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और विशेषज्ञ सदस्य ए सेंथिल वेल भी शामिल थे कहा, यदि ग्रैप लागू होने के बाद भी उल्लंघन हो रहा है तो आवेदक सीएक्यूएम के समक्ष शिकायत दर्ज करने के लिए स्वतंत्र है। ट्रिब्यूनल ने यह फैसला उस याचिका पर सुनवाई करते हुए सुनाया, जिसमें दावा किया गया था कि जब ग्रैप 3 प्रतिबंध लगाए गए थे, तब दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) निर्माण और तोड़फोड़ गतिविधियों शामिल था। बता दें कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में प्रदूषण से निपटने के लिए रणनीति तैयार करने के लिए जिम्मेदार वैधानिक निकाय सीएक्यूएम ने 14 जनवरी को ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (जीआरएपी) स्टेज-3 लागू किया था। चार दिन बाद, हवा की गुणवत्ता में सुधार के बाद दिल्ली-एनसीआर में गैर-जरूरी निर्माण कार्य और बीएस-3 पेट्रोल और बीएस-4 डीजल चार पहिया वाहनों के चलने पर प्रतिबंध हटा दिया गया था।

## कन्हैया नगर मेट्रो स्टेशन पर हवा में लटकता दिखा युवक

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के कन्हैया नगर मेट्रो स्टेशन से बुधवार सुबह करीब 1130 बजे एक युवक लटकता हुआ दिखाई दिया। रिक्शा चालक ने मेट्रो पुलिस को इसकी जानकारी दी। मेट्रो पुलिस और रिक्शा चालक ने मिलकर किसी तरह युवक की जान बचाई पुलिस के मुताबिक युवक शराब के नशे में था। युवक से पूछताछ जानकारी जुटाई जा रही है।

## संक्षिप्त खबरें

### चाकू गोद कर बुजुर्ग की हत्या

मुजफ्फरपुर। जिले के तुर्की ओपी अंतर्गत चैनपुर गांव में कल रात सुप्तावस्था में एक बुजुर्ग की चाकू से गोद कर निर्मम हत्या कर दी गई। मृतक का नाम महेंद्र महतो (65)बताया गया है।, घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंच कर मृतक के परिजनों से मामले की जानकारी ली। श्वान दस्ता को भी बुलाया गया लेकिन घटना के सम्बंध में कोई सुराग नहीं मिल सका है।आरक्षी उपाधीक्षक मुजफ्फरपुरं पश्चिमी अभिशेष आनन्द ने बताया कि मृतक अपने कमरे में सोया हुआ था जहां चाकू से गोद कर उसकी हत्या कर दी गई है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। एस एफ एल की टीम बुलाई गई है। उन्होंने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। हत्याकांड का शीघ्र उद्भेदन कर लिया जाएगा।

### ठंड से कक्षा 6 के छात्र की हूई मौत

बोचहां। बिहार में ठंड का कहर जारी है और बुधवार को इस ठंड ने एक छात्र की जान ले ली. दरअसल, प्रखंड क्षेत्र के राघो मझौली राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय में रोजाना की तरह बच्चे पढ़ाई के लिए पहुंचे थे. इसी बीच कक्षा 6 में पढ़ने वाले छात्र मो कुर्बान को अचानक ठंड लग गई। इस दौरान ठंड लगने की वजह से कपकपा रहे बच्चे को शिक्षक ने घर जाने को कहा, जहां घर जाने के दौरान रास्ते में ही बच्चे की मौत हो गई। मृतक की पहचान बाजितपुर मझौली गांव के मोहम्मद इस्लाम के 14 वर्षीय पुत्र मोहम्मद कुर्बान के रूप में हुई है। घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। मृतक की मां जमीला खातून ने शासन प्रशासन को छात्र के मौत का जिम्मेदार बताया और कहा बच्चे स्कूल नहीं जाएंगे तो उसका नाम काट दिया जाएगा इस डर से कपकपाती ठंड में बच्चों को स्कूल भेजी थी जहां उसे ठंड लग गया शिक्षकों ने कहा घर जाने के लिए और और रास्ते में मौत हो गई। वही माले प्रखंड अध्यक्ष रामबालक सहनी ने सरकार से मांग करते हुए कहा कि मृतक के परिजन को सरकारी लाभ दिया जाए और इस रूह कपा देने वाली ठंड में स्कूल को अभिलंब बंद करने का आदेश दिया जाए। इधर स्कूल प्रशासन की मानें तो उनका छात्र मो कुर्बान ने स्कूल में आया और क्लास में बैठकर पढ़ाई करने लगा। वहां उसे ठंड लग गई. जब उसे ठंड लगी तो वो कपकपा ने लगा। उसे घर जाने को कहा गया जहां घर लौटते समय रास्ते में उसकी मौत हो गई।

# कर्पूरी ठाकुर का 100 वीं जयंती मनाया गया

## कर्पूरी ठाकुर के सादगी, सरलता, सादा जीवन उच्च विचार, से आज के नेताओं को सीख लेने की जरूरत : किरण देव यादव

- कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न की उपाधि देने की घोषणा पर किया हर्ष व्यक्त, दी बधाई साधुवाद

प्रात : किरण, संवाददाता

खगड़िया। सामाजिक संगठन फरकिया मिशन देश बचाओ अभियान के बैनर तले कपूर्री ठाकुर का जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन श्री युवक प्रखंड पुस्तकालय परिसर में किया गया जिसकी अध्यक्षता अभियान के संस्थापक अध्यक्ष किरण देव यादव ने किया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम कपूर्री ठाकुर के तैल चित्र पर माल्यार्पण पुष्पांजलि समर्पित कर कोटि-कोटि नमन याद किया गया तथा कपूर्री ठाकुर अमर रहे, नारों को बुलंद किया गया।

अध्यक्षीय संबोधन में किरण देव यादव ने कहा कि कपूर्री ठाकुर सच्चे अर्थों में जननायक, गुदड़ी के लाल, शिक्षक, स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक न्याय-समरसता व सादगी तथा सादा जीवन उच्च विचार के प्रतिमूर्ति प्रेरणास्त्रोत थे। उन्होंने कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित करने पर हर्ष व्यक्त किया तथा बधाई एवं साधुवाद दिया। कहा कि आंदोलन की जीत हुई।

समाजसेवी चंद्रशेखरम, विश्व मानवाधिकार संघ के महासचिव बृजनंदन महतो, मानवाधिकार के अध्यक्ष महेश्वर यादव, फरकिया मिशन के उपाध्यक्ष लालमणि सदा, मिशन के सचिव प्रकाश ठाकुर, पतंजलि के जितेंद्र कुमार, पूर्व मुखिया शिवधारी ठाकुर , रामदेव यादव , विष्णु देव यादव, उपेंद्र सदा, जोगी यादव, लक्ष्मण कुमार, दिव्यांग देवेंद्र कुमार, विपिन ठाकुर, दिनेश ठाकुर आदि ने उद्गार व्यक्त करते हुए कपूर्री ठाकुर के जीवनी व्यक्तित्व कृतित्व पर विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए सीख लेने पर बल दिया। वक्ताओं ने कहा कि देश स्तर पर पहली बार कपूर्री ठाकुर ने बृद्धा पेंशन 30 मासिक के तौर पर शुरूआत किए थे। वे नाई अति पिछड़ा ही नहीं, आम जनों के मसीहा थे, जिन्होंने सम्मान एवं समता मूलक समाज के निर्माण के लिए अनवरत संघर्ष किया। वक्ताओं ने कहा कि कपूर्री ठाकुर का जन्म समस्तीपुर जिला के पितोंझिया गांव वर्तमान कपूर्री ग्राम में 24 जनवरी 1924 को हुआ था। इनके पिता का नाम गोकुल ठाकुर तथा माता का नाम रामदुलारी देवी तथा बेटे का नाम रामनाथ ठाकुर है। वे दो बार मुख्यमंत्री एवं एक बार उपमुख्यमंत्री तथा शिक्षा मंत्री बने। इनका निधन 17 फरवरी 17 फरवरी 1988 को पटना में हुआ। वक्ताओं ने कहा कि आज के नेताओं को कपूर्री ठाकुर के सादगी सरलता सादा जीवन उच्च विचार जैसे सिद्धांत से सीख लेने की जरूरत है। बक्ताओं ने कपूर्री ठाकुर का प्रतिमा अलौली में तथा जे एन के टी इंटर स्कूल परिसर में स्थापित करने, वृद्धा विधवा विकलांग पेंशन 5000 मासिक करने, कपूर्री ठाकुर अध्ययन केंद्र खोलने की मांग किया।

# अपराध की योजना बना रहे 4 अपराधी हथियार के साथ गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

मुजफ्फरपुर। पुलिस ने साहेबगंज थाना अंतर्गत खोड़ी मलंग स्थान के पास से अपराध की योजना बना रहे 4 अपराधियों को अवैध हथियार के साथ गिरफ्तार किया है।यह जानकारी देते हुए एसएसपी राकेश कुमार ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि कुछ अपराधकर्मी खोड़ी मलंग स्थान के पास किसी बड़े आपराधिक घटना को अंजाम देने की योजना बना रहे हैं। सूचना मिलते ही साहेबगंज थानाध्यक्ष ने पुलिस टीम के साथ मौके पर धावा बोल कर संदीप कुमार उर्फ राजा ,सोनु सहनी , जयप्रकाश सहनी और लवकुश पासवान को गिरफ्तार कर लिया। इनके पास से 2 देशी कट्टा,5कारतूस,1लैपटाप,3 मोटरसाइकिल और 2मोबाइल फोन बरामद किए गये हैं।पुलिस का कहना है कि गिरफ्तार सभी अपराधी पेशेवर हैं। इन्होंने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर सीएसपी संचालकों एवं फाईनेन्स कर्मियों से साहेबगंज अंतर्गत सहित अन्य जिलों यथा गोपालगंज, मोतिहारी में भी कई आपर घटनाओं को अंजाम दिया है।इन गिरफ्तार अभियुक्तों के पास से साहेबगंज थाना कांड सं0 584/23 में चोरी गई लैपटॉप एवं देवरिया थाना कांड सं 03/24 तथा 10/24 में लूट/छिनतः गई 02 मोटरसाईकिल बरामद किया गया है। गिरफ्तार अपराधकर्मियों ने साहेबगंज थाना कांड सं0 33/24 में रामपुर खुर्द । सीएसपी लूट में भी अपना संलिप्ता स्वीकार की है। उक्त लूट-कांड में गलैमर मोटरसाईकिल भी बरामद किया गया है।

# बालिका दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

मधेपुरा । महिला एवं बाल विकास निगम, बिहार के निदेशानुसार बुधवार को जिला प्रशासन, मधेपुरा के सौजन्य से बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना अंतर्गत राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर जिले के सभी प्रखंडों में विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कड़ी में राजकीय अम्बेदकर बालिका उच्च विद्यालय, मुरलीगंज में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूल के वार्षिक परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्राओं, प्रखंड स्तर पर आयोजित निबंध, स्लोगन, चित्रकला, मैराथन दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को जिला प्रशासन, मधेपुरा द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर बी.एल हाई स्कूल, मुरलीगंज में लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012 के बारे में बच्चों को विस्तृत जानकारी देने जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अंत में बच्चों से एक्ट से संबंधित पूछे गए सवाल का जबाब देने वाली छात्राओं को जिला प्रशासन द्वारा कॉफी मग प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। साथ ही वन स्टॉप सेन्टर एवं जिला हब एम्पावरमेंट ऑफ वीमेन कार्यालय द्वारा दी जाने वाली सभी सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला प्रोग्राम पदाधिकारी-सह- नोडल पदाधिकारी श्रीमती रश्मि कुमारी ने कहा कि 18 साल से कम उम्र के किसी बच्चों (चाहे लड़का हो या लड़की) के साथ यौन अपराध हुआ या करने का प्रयास गया है, तो ऐसे मामले पोस्को एक्ट के तहत आते है। यह कानून बच्चों को लैंगिक हमले, लैंगिक उत्पीड़न और अश्लील चित्र व साहित्य के इस्तेमाल जैसे अपराधों से सुरक्षा प्रदान करता है। ऐसे अपराध का विचारण करने के लिए विशेष न्यायालयों की स्थापना की गई है। जिसमें अपराधी को 6 माह से लेकर 20 साल तक का सजा, जुमार्ना एवं आजीवन कारावास का प्रावधान किया गया है। कार्यक्रम में जिला कल्याण पदाधिकारी रामकृपाल सिंह, प्रधानाध्यापक सूर्यदेव नारायण, जिला मिशन समन्वयक मो इमरान आलम, केंद्र प्रशासक कुमारी शालिनी, शिक्षक दीपक, कृष्णा, गुड़िया, अनुपम छात्रा भारती, नेहा,खुशबू, भानु प्रिया, पूजा, हीरा, शिवजी, बबली नीतू, आरती, डोलो के साथ-साथ कई छात्राएं मौजूद थे।

# स्वच्छ भारत अभियान पर संगोष्ठी का आयोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

मधेपुरा । स्वच्छ भारत अभियान के महत्त्व विषय पर टी पी कॉलेज जंतु विज्ञान विभाग में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें पीजी फोर्थ सेमेस्टर के छात्रों नें भाग लिया और सर्वप्रथम सभी शिक्षक एवं छात्र नें मिलकर विज्ञान संकाय में झाड़ू चलाकर स्वछता की शुरूवात के साथ दर्जनों पौधे लगाकर संगोष्ठी की शुरूवात किए फिर संगोष्ठी के मुख्य अतिथि विभागध्यक्ष डॉ. (प्रो.) पंकज कुमार नें सम्बोधित करते हुए कहा की हमें विभिन्न तरह के विमारियों से बचने के लिए स्वच्छ भारत अभियान के लिए अग्रसर होकर चलना चाहिए। वही संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए जंतु विज्ञान विभाग के अतिथि सहायक प्राध्यापक डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह नें सभी छात्र छात्राओं से स्वच्छ भारत अभियान में अग्रसर होकर जन जागरण अभियान में विभिन्न संगठनों से जुड़कर भूमिका निभानें की अपील किया और कहा की उच्च शिक्षा ग्रहण करने का फलाफल तब सार्थक सिद्ध होगा जब भारत पूर्ण रूप से स्वच्छ होगा। वही संगोष्ठी में विभाग की अतिथि सहायक प्राध्यापिका डॉ. सीमा कुमारी ने कही की हमें अपने घर के अलावे सरकारी जगहों को भी साफ करते रहना चाहिए जिससे हर जगह स्वच्छ नजर आए। संगोष्ठी में विभाग के पांचू, संजय सहित छात्र निखिल कुमार, अभिषेक कुमार, नीरज निराला, मोनू कुमार, मिथिलेश सिंह, परवाना कुमार, अजित कुमार, मयंक राज, नेहा कुमारी, प्रियंका कुमारी, जूली कुमारी, जानवी किट्टू, पूजा कुमारी आदि छात्र छात्राओं नें संगोष्ठी को सम्बोधित किया।

# बिहार उच्च भूकंपीय से बचने के एसडीआरएफ टीम प्रतिनिधियों को दिया प्रशिक्षण

प्रात : किरण, संवाददाता

पतरघट/सहरसा। जिला के प्रखंड सभागार पतरघट में बिहार-नेपाल सीमा के पास हिमालयी टेक्टोनिक प्लेट में शामिल होने वाली टेक्टोनिक प्लेट की सीमा पर पड़ता है और चार दिशाओं में गंगा सतहों की ओर बढ़ते छह उप-सतह लाइन में समा जाता हैं। राज्य के प्रमुख हिस्सों को भूकंपी क्षेत्र क्क्र और श में भारत के जोखिम एटलस द्वारा वगीर्कृत किया गया है, अर्थात उच्च तीव्रता के विनाश होने की संभावना के साथ उच्च भूकंप संवेदनशीलता होने के कारण। कुल मिलाकर, बिहार के कुल क्षेत्रफल का 15.2% जोन श के तहत वगीर्कृत किया गया है और बिहार के कुल क्षेत्रफल का 63.7% क्षेत्र चौथा स्थान है। 38 जिलों में से 8 जिलों में भूकंपीय क्षेत्र श होता है जबकि 24 जिलों में भूकंपीय क्षेत्र क्क्र और 6 जिलों में भूकंपीय क्षेत्र क्क्क्र होता है जो अधिकांश जिलों में कई भूकंपीय क्षेत्रों (या तो भूकंपी क्षेत्र श और क्क्र या भूकंपी क्षेत्र क्क्र और क्क्क्र) के तहत पड़ता है। । इस राज्य में पहले भूकंप बड़े भूकम्पो में हुए है; सबसे बुरी घटना 1 9 34 में हुई भूकंप में 10,000 लोगों की मृत्यु हुई, इसके बाद 1 9 88 में भूकंप आया। मौके पर मौजूद जिला प्रभारी सह प्रखंड प्रशिक्षक उमेश चौधरी, अंचल नजीर मनीष कुमार,रत्न कुमार यादव,रविंद्र कुमार ललिता कुमारी,राजेश कामत,एवम अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

# जननायक कर्पूरी ठाकुर का 100 वां जन्मोत्सव समारोह आयोजित

प्रात : किरण, संवाददाता

मधेपुरा ।ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा में बुधवार (24 जनवरी) को जननायक कपूर्री ठाकुर का 101वां जन्मोत्सव समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटनकर्ता उप समाहर्ता अरूण कुमार सिंह ने कहा कि कपूर्री ठाकुर ने समाज के अंतिम वर्ग को आगे बढ़ाने के लिए कार्य किया। हमें उनके विचारों एवं कार्यों को आगे बढ़ाने की जरूरत है। मुख्य अतिथि जिला कल्याण पदाधिकारी रामकृपाल प्रसाद ने कहा कि कपूर्री ठाकुर के सपनों को पूरा करने के लिए कल्याण विभाग द्वारा कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य डॉ. कैलाश प्रसाद यादव ने कहा कि कपूर्री ठाकुर सादगी के प्रतीक हैं। उनका जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है। संचालन करते हुए दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. सुधांशु शेखर ने कहा कि कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न सम्मान देने से यह सम्मान ही सम्मानित हुआ है। अतिथियों का स्वागत स्नातकोत्तर गणित विभागाध्यक्ष ले. गुड्डू कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर कुमार मिश्र ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ में सभी उपस्थित लोगों ने जननायक कपूर्री ठाकुर और कीर्ति नारायण मंडल के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। अतिथियों का अंगवस्त्रम् एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया।

# जननायक कर्पूरी ठाकुर का शताब्दी समारोह आयोजित

प्रात : किरण, संवाददाता

सहरसा। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) सहरसा के जिलाध्यक्ष महेंद्र शर्मा के आवास पर जिलाध्यक्ष की अध्यक्षता में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कपूर्री ठाकुर जी का 100 वा जयंती समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जयंती कार्यक्रम में वक्ताओं ने भारत सरकार के द्वारा भारत रत्न दिए जाने पर पिछड़ों के राजनीतिक चेतना का परिणाम बताया। कार्यक्रम को संबोधित करते जिलाध्यक्ष महेंद्र शर्मा ने कहा कपूर्री जी जीवन भर शोषितों पीड़ितों के लिए कार्य करते रहे। आज के वर्तमान समय में राजनेताओं को उनके जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है जो व्यक्ति मुख्यमंत्री रहते एक मकान नहीं बना सके वहीं दूसरी और आज के नेता आलीशान बंगलो और महंगे गाड़ियों में जनता के सपनों को चकनाचूर कर रहे हैं। जयंती कार्यक्रम को नाई संगठन के सभापति तारिणी ठाकुर, महिला जिलाध्यक्ष पूजा चौधरी, अल्पसंख्यक जिलाध्यक्ष मोहम्मद इमरान, खेल जिलाध्यक्ष निरंजन कुमार, आईटी सेल जिलाध्यक्ष गगन कुमार, एससी-एसटी प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष नवीन कुमार, छात्र जिलाध्यक्ष अमरेश पासवान, युवा जिलाध्यक्ष संदीप पासवान, नीतीश कुमार ठाकुर, प्रेम कुमार, दीपक पासवान, पूर्व वार्ड पार्षद सोनी महेंद्र शर्मा शामिल रहे।

# सरकारी नौकरी की तैयारी के लिए पलायन नहीं प्लान करें : शीतोष्णा श्रीवास्तव

प्रात : किरण, संवाददाता

सहरसा। शहर में बनगांव रोड स्थित मीर टोला डॉक्टर कलाम के नजदीक जया कॉलोनी में बुधवार को प्रमाणिक शिक्षण संस्थान कैरियर पावर अड्डा 24 .7 का फीता काटकर उद्घाटन किया गया।उद्घाटनकर्ता शिवानंद प्रसाद सिन्हा,डॉक्टर राजकुमार सिन्हा, अधिवक्ता राजीव कुमार सिन्हा डॉक्टर शंभू कुमार सिंह, डॉक्टर अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि अब कोशी जैसे अशिक्षित इलाकों के बच्चे को अन्यत्र कहीं भेजने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।अब एक ही छत के नीचे बीपीएससी, एसएससी, बैंकिंग, सीटेट, एसटीईटी, स्ट्रेट, रेलवे, दरोगा, डिफेंस एवं अन्य सरकारी नौकरियों के लिए योग शिक्षकों के द्वारा तैयारी कराई जा रही है।निदेशक शीतोष्णा श्रीवास्तव ने कहा कि कोसी में पहला बिहार में चौथा एवं देश में 66 वां सेंटर यहाँ खोला गया है।उन्होंने कहा कि बिहार में पटना भागलपुर एवं मुजफ्फरपुर के बाद सहरसा में ही प्रमाणिक कोचिंग शिक्षण संस्थान अड्डा 247 खोला गया है।यहाँ बच्चों को योगय शिक्षकों एवं विषयों के विशेषज्ञ द्वारा अच्छे ढंग से तैयारी कराई जा रही है। उन्होंने बताया कि इसके लिए दिल्ली मैंन सेंटर से हिमांशु रंजन, मुरादाबाद केंद्र के चंदन कुमार,गुवाहाटी सेंटर के विकास महासेठ के द्वारा अच्छे ढंग से प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कराई जाएगी।इस अवसर पर डॉक्टर चैत्र गोपाल झा, डॉक्टर अशोक पांडे,डॉक्टर सुनील सिंह, डॉक्टर रामजी प्रसाद, डॉक्टर अनवर उल हक ने बताया कि शहर में कोचिंग की कमी नहीं है लेकिन प्रामाणिक एवं गुणवत्तापूर्ण कोचिंग की कमी थी।इस कोचिंग के खुलने से सहरसा सुपौल मधेपुरा पूर्णिया कटिहार सहित अन्य जिलों के छात्र-छात्राओं एवं अभिभावकों को काफी सहूलियत होगी।उन्होंने अभिभावकों से कम खर्चे में बेहतर परिणाम के लिए इस कोचिंग के उज्जवल भविष्य की कामना की।इस मौके पर मोहम्मद इरशाद अंसारी,मोहम्मद शाहिद, अरूबा अंसारी, अल्बीना अंसारी, माधव कुमार, मोहम्मद आरजू एवं अपिव्रत सिन्हा सहित अन्य मौजूद थे।

# नवनियुक्त कुलपति प्रो. बिमलेन्दु शेखर झा का योगदान आज

प्रात : किरण, संवाददाता

मधेपुरा । ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में जंतु विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं विज्ञान संकाय के पूर्व संकायाध्यक्ष प्रो. बिमलेन्दु शेखर झा गुरुवार को बीएनएमयू, मधेपुरा के कुलपति का पदभार ग्रहण करेंगे। उप कुलसचिव (स्थापना) डॉ. सुधांशु शेखर ने बताया कि मंगलवार को राज्यपाल सह कुलाधिपति राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर के आदेशानुसार राज्यपाल के प्रधान सचिव रॉबर्ट एल. चोंग्थू ने प्रो. झा को बीएनएमयू का कुलपति बनने संबंधी अधिसूचना जारी की गई है। इससे यहां हर्ष का माहौल है। नवनियुक्त कुलपति के विश्वविद्यालय प्रशासनिक परिसर में आगमन पर भव्य स्वागत की तैयारी की जा रही है। वे योगदानोपरांत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, महामना भूपेंद्र नारायण मंडल, जननायक कपूर्री ठाकुर एवं पूर्व कुलपति प्रो. महावीर प्रसाद यादव की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित करेंगे। टीपी कालेज के प्रधानाचार्य बने थे प्रथम कुलपति डॉ. शेखर ने बताया कि भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, लालूनगर, मधेपुरा की स्थापना 10 जनवरी, 1992 को हुई। तदुपरांत टी. पी. कालेज, मधेपुरा के प्रधानाचार्य प्रो. रमेंद्र कुमार यादव ह्यरविह्न को प्रथम (संस्थापक) कुलपति होने का गौरव प्राप्त हुआ। वे इस पद पर 15 जनवरी, 1992 से 15 जून, 1993 तक रहे। इतने कम समय में ही उन्होंने विश्वविद्यालय के लिए कोसी प्रोजेक्ट की जमीन का अधिग्रहण कराया और लालूनगर के रूप प्रशासनिक परिसर स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

# शिशुओं का निगरानी और पोषण विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला

प्रात : किरण संवाददाता

चौसा (मधेपुरा) आईसीडीएस विभाग के द्वारा जिले के एकमात्र आकांक्षी प्रखंड चौसा के प्रखंड सभागार में शिशुओं में शारीरिक वृद्धि निगरानी और पोषण टैकर विषय पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला को फैसलीटेट करने में पिरामल फाउंडेशन की ए बी सी टीम मधेपुरा ने सहयोग किया। पिरामल फाउंडेशन के प्रोग्राम लीड अमरनाथ ठाकुर, पिरामल फाउंडेशन के गाँधी फेलो शुभम प्रजापति व रोहित राय ने आंगनबाड़ी सेविकाओ को शारीरिक वृद्धि पर निगरानी को लेकर जानकारी देते हुए मापन के उपकरणों और कुपोषित बच्चो की पहचान करने के बाद उनके पोषण व अन्य चीजो पर विस्तृत जानकारी दी। शारीरिक वृद्धि पर निगरानी के वजन और ऊँचाई मापन के उपकरणों इन्फैंटोमीटर, स्टेडियोमीटर, बेबी वेट मशीन, सेल्टर मशीन, एडल्ट वेट मशीन के उपयोग करने के तरीके पर सेविकाओ को विस्तृत जानकारी दी गई। शारीरिक वृद्धि पर निगरानी के बाद चिंहित बच्चो में कुपोषित और अतिकुपोषित बच्चो के पोषणआहार, स्तनपान को लेकर भी जानकारी दी गई। कार्यशाला में प्रखंड समन्वयक शमशेर आलम, महिला समन्वयक मीना कुमारी, खुशबु कुमारी, प्रभा कुमारी सहित फुलौत पूर्वी, फुलौत पश्चिमी, मोरसंडा, चिचौरी, पैना पंचायत की 59 सेविका उपस्थित थे।

# अपराधियों ने आभूषण दुकानदार के मुंह में मारी गोली , गंभीर

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । मंगलवार देर रात बाइक सवार अपराधियों ने एक आभूषण दुकानदार के मुंह में गोली मार दी। गोली मुंह के दाहिने जबड़े में जाकर लगी। दुकानदार अपनी जान बचाने के लिए बाइक छोड़कर सड़क से दौड़कर एक घर में घुस गया। गोली मार कर अपराधी मौके से फरार हो गए।सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस मामले की जांच में जुटी है।मामला सरैया थाना क्षेत्र के मणिकपुर पिपरा पुल के समीप वैशाली-पारू मुख्य मार्ग एसएच 74 का है।घटना के बाद स्थानीय लोग मौके पर जुट गए और आनन-फानन में दुकानदार को सरैया सीएचसी में भर्ती कराया।पीड़ित दुकानदार की पहचान वैशाली के दाउदनगर निवासी शिवजी साह के पुत्र संतोष कुमार के रूप में हुई है। जबकि उनके घायल भाई की पहचान धीरज कुमार को रूप में हुई है। उनकी सरैया बाजार में आभूषण की दुकान है.बताया जाता है कि दुकान बंद करके संतोष कुमार अपने भाई धीरज कुमार के साथ बाइक से घर लौट रहे थे। इस दौरान अपराधियों ने धीरज को दो गोली मार दी और फरार हो गए।

भवन निर्माण विभाग

कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना का कार्यालय

बिहार सरकार

अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना, संख्या– 97 वर्ष 2023–24

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना।
2. परिमाण–विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय : दिनांक 05.02..2024 को 12:00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय : दिनांक 06.02..2024 को 03:00 बजे अपराह्न तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक 06.02..2024 को 03:30 बजे अपराह्न।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : (क) अंचल कार्यालय, दक्षिण बिहार भवन अंचल, पटना। (ख) प्रमंडल कार्यालय, केन्द्रीय भवन प्रमंडल, पटना। (ग) संबंधित अवर प्रमंडल कार्यालय।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान : क्रमांक (5) के वर्णित स्थान (क) एवं (ख) पर।

कार्य का विवरणी :–

| क्र० | कार्य का नाम | प्राक्कलित राशि (लाख रू० में) | अग्रधन की राशि (रू० में) | परिमाण विपत्र का मू० (रू० में) (अप्रत्यर्पणीय) | कार्य समाप्ति की अवधि |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | Provision & Re-Setting of Paver's Block in Different Places of Bihar Vidhan Mandal Campus, Patna for the year 2023-24. | 9.50 | 19,000=00 | 1,250=00 | 01 माह |
| 2 | Different Work in the Campus of Bihar Vidhan Mandal, Patna for the year 2023-24. | 13.83 | 27,700=00 | 2,500=00 | 01 माह |

7. विशेष सूचना के लिए सूचनापट्ट या बेबसाईट www.state.bihar.gov.in/prd.bihar देखें या अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में सम्पर्क करें।

कार्यपालक अभियंता,
केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना

PR. No. 015960 (BCD) 2023-24

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार।

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग, पटना
अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या–01 वर्ष 2023–24

स्थानीय अभिकर्ता श्रेणी (iv) में निबंधित संवेदकों/ख्याति प्राप्त फार्मो/निबंधित दुकानदारों से निम्नलिखित कार्य के लिए मुहरबंद कोटेशन आमंत्रित किया जाता है, जो अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, भवन निर्माण विभाग, पटना, एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 03.02.2024 के अपराहन 12:30 अपराहन बजे तक प्राप्त किया जायेगा एवं उसी दिन 1:30 बजे अपराह्न में कोटेशनदाताओं या उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जाएगा।

कार्य का विवरणी :–

| क0 | सामग्री का नाम एवं विशिष्टयॉ | मात्रा | इकाई | उद्वत की जानेवाली दर |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Submersible Pump for Dashrath Manjhi Building, Patna for the year 23-24 | | | |
| | Supplying & installation testing and commissioning submersible pump etc. as per Specificaton & direction of E/I. | 01 Nos | Each | |

- कार्य समाप्ति की अवधि : 15 दिन
- विशेष जानकारी हेतु बेबसाईट बेबसाईट www.state.bihar.gov.in/prdbihar देखें या अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में कार्यावधि में सम्पर्क करें।

कार्यपालक अभियंता,
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल,
भ0नि0वि0, पटना

PR. No. 015889 (BCD) 2023-24

नशामुक्त हो जाए बिहार, सुरक्षित रहे घर परिवार।

सम्पादकीय

## दास्तान-ए-सफर-ए-गरीब रथ

देश की अनेक तीव्रगामी रेल गाड़ियों से तो प्रायः यात्रा करने का अवसर मिलता रहा मगर इत्तेफाक से गरीब रथ नामक बहुचर्चित ट्रेन से यात्रा करने का अवसर कभी नहीं मिला था। परन्तु पिछले दिनों यह अरमान भी उस समय पूरा हो गया जबकि एक करीबी रिश्तेदार के देहांत के सिलसिले में अचानक गरीब रथ से ही मुजफ़्फरपुर जाने व इसी ट्रेन से वापसी का भी अवसर मिला। भारतीय रेल द्वारा 2006 में गरीब रथ एक्सप्रेस शृंखला की शुरूआत की गयी थी। तत्कालीन रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव ने गरीब रथ एक्सप्रेस जैसी कम किराये वाली तथा तीव्रगामी वातानुकूलित रेलगाड़ियों की शुरूआत इसी उद्देश्य से की थी ताकि साधारण लोग भी वातानुकूलित गाड़ियों में यात्रा कर सकें। इस ट्रेन के थ्री ए सी कोच में साइड में भी मिडिल की ही तरह तीन बर्थ लगाई गयी हैं। निश्चित रूप से किराया व स्टॉपेज कम और रफ़्तार अधिक होने की वजह से यह ट्रेन साधारण लोगों की पसंदीदा ट्रेन बन चुकी है। परन्तु इस गरीब रथ एक्सप्रेस में पहली बार यात्रा करने का मेरा जो निजी व कटु अनुभव रहा उसे भी साँझा करना जरूरी है। गत 20 जून को अमृतसर से सहरसा जाने वाली 12204 गरीब रथ से मुजफ़्फरपुर जाने हेतु ए सी थ्री के कोच नं जी-11 में (डिब्बा संख्या 084905) मेरा आरक्षण था। पूरी ट्रेन बिहार के प्रवासी कामगारों से भरी थी। अधिकांश यात्रियों के पास अत्यधिक सामान होने के कारण कोच पूरी तरह अव्यवस्थित था। इसके अलावा लगभग हर कोच में प्रवेश द्वार के पास अनेक ऐसे यात्री भी रास्ते में बैठे थे जिनका आरक्षण नहीं था। ऐसे यात्री पूरी रात कोच के भीतर खाली बर्थ की तलाश में या किसी दूसरे की सीट पर लटककर बैठने की फिराक में बार बार इधर से उधर आ जा रहे थे। इसकी वजह से अन्य यात्री न केवल असहज व विचलित हो रहे थे बल्कि उनमें असुरक्षा की भावना भी थी। परन्तु इन्हें रोकने टोकने वाला कोई भी नहीं था। दरवाजे के पास सारी रात बैठे ऐसे ही एक दो यात्रियों से बात करने पर पता चला कि टिकट निरीक्षक को बिना रसीद का सेवा शुल्क देने के बाद उसी ने इन यात्रियों को किसी भी कोच में यात्रा करने की छूट दी है। बहरहाल लगभग तीन घंटे देरी से चल रही उपरोक्त ट्रेन मध्यरात्रि के बाद जब गोरखपुर पहुंची तो इसी 11 में (कोच संख्या 084905) में एक संदिग्ध व्यक्ति घुसा और मेरी ही दस नंबर की साइड लोवर बर्थ पर कब्जा जमा कर लेट गया। उस समय मैं वाशरूम गई थी। गोरखपुर से छपरा के बीच वह व्यक्ति चाय बेचने वालों से चाय मांग कर तो पीता परन्तु जब वे पैसे मांगते तो कोई जवाब न देता। आखिरकार थक कर वेंडर्स उसे बुरा भला कहकर चले जाते। जब मैंने उससे अपनी बर्थ छोड़ने के लिये कहा तो वह खामोश रहा। बहुत कहने पर भी कुछ न बोला। थोड़ी ही देर बाद उसी बर्थ से बुरी दुर्गन्ध आनी शुरू हुई। पूरा कोच भीषण दुर्गन्ध से विचलित हो उठा। गोरखपुर से छपरा तक रात दो तीन चार बजे के दौरान चलती ट्रेन में यह ड्रामा चलता रहा। न वह टिकट निरीक्षक के कहने से उठे न ही बेडरोल वितरित करने वाले स्टाफ के कहने से न ही मेरे या किसी अन्य यात्री के कहने से। आखिरकार उसपर पानी छिड़ककर जब उसे छपरा में उतारा गया तो देखा गया कि उसने बर्थ पर ही ढेर सारा शौच कर दिया है जो दुर्गन्ध फैला रहा था। वह व्यक्ति अर्धनग्न भी था।

## धर्म सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा होगा

**अजीत द्विवेदी**

कोई कुछ भी कहे अगले लोकसभा चुनाव में व्यापक रूप से हिंदुत्व और खासतौर से राममंदिर सबसे बड़ा मुद्दा होने जा रहा है। कुछ समय पहले तक राजनीतिक रूप से राममंदिर का मुद्दा समाप्त मान लिया गया था। लेकिन उस समाप्त हो चुके मुद्दे को भाजपा ने फिर से जिंदा कर दिया है। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में रामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का जैसा भव्य आयोजन हुआ है और कार्यक्रम के हर फ्रेम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जैसी मौजूदगी रही है उसके बाद कोई संदेह नहीं रह गया है कि यह अगले चुनाव का सबसे बड़ा मुद्दा होने वाला है। चुनाव की घोषणा से पहले पूरे देश और पूरी दुनिया को राममय करने का विशाल अभियान चुनाव को ध्यान में रख कर ही चलाया गया था। प्राण प्रतिष्ठा के दिन पूरा देश उत्सव के माहौल में था और अगले तीन महीने इस माहौल की तीव्रता कम नहीं होने दी जाएगी।अयोध्या में राममंदिर को लेकर कांग्रेस के नेता और पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत पीवी नरसिंह राव की दो बातें मिथक की तरह प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने दक्षिणपंथी विचारों का बचाव करते हुए किसी नेता से कहा था कि कांग्रेस भाजपा से तो लड़ सकती है लेकिन भगवान राम से कैसे लड़ सकती है। उनकी दूसरी बात यह है कि वे मानते थे कि विवादित ढांचा टूट जाने के बाद अयोध्या का मामला समाप्त हो जाएगा। उनका दावा था कि 1992 में बाबरी मस्जिद का विवादित ढांचा टूटने के बाद अयोध्या का मामला भाजपा के हाथ से निकल गया है। यह बात पूरी तरह से सही नहीं साबित हुई। क्योंकि उसके बाद भाजपा 1991 के 89 सीटों से 1996 में 161 सीटों पर पहुंच गई और उसके बाद 1999 और 2004 के चुनावों में 183 सीटों पर रही।अब अब उसके 20 साल बाद राममंदिर एक बार फिर चुनाव का सबसे बड़ा मुद्दा बनता दिख रहा है। ध्यान रहे नरेंद्र मोदी ने अपने दो चुनावों में इसे मुद्दा नहीं बनाया था। उनका पहला चुनाव यानी 2014 का लोकसभा चुनाव कांग्रेस सरकार की एंटी इन्कम्बैंसी पर था। हिंदुत्व का अंडरकरंट भी था क्योंकि 2002 के गुजरात दंगों के बाद से नरेंद्र मोदी खुद कट्टपंथी हिंदुत्व का प्रतीक चेहरा बन कर उभरे थे। लेकिन प्रचार की थीम मोटे तौर पर महंगाई, भ्रष्टाचार और कमजोर नेतृत्व पर थी। दूसरा यानी 2019 का चुनाव व्यापक रूप से राष्ट्रवाद और मजबूत नेतृत्व के मुद्दे पर लड़ा गया। इसके लिए पुलवामा कांड और उरी व बालाकोट स्ट्राइक को मुद्दा बनाया गया।लेकिन इस दस साल की अवधि में ऐसा नहीं है कि अयोध्या के प्रोजेक्ट को भुला दिया गया था। वह मंथर गति से आगे बढ़ रहा था। साथ ही लोगों को ज्यादा से ज्यादा धार्मिक बनाने का अभियान भी चल रहा था। मैकियावेली ने द प्रिंसइ लिखा है कि राजा को चाहिए कि वह जनता को ज्यादा से ज्यादा धार्मिक बनाए क्योंकि धार्मिक जनता पर शासन करना बहुत आसान होता हैइ। सो, नरेंद्र मोदी देश की जनता को धार्मिक बनाने में लगे रहे। उन्होंने अपनी छवि एक समर्पित हिंदू बुजुर्ग की बनाई। वे मंदिरों में जाते तो पूरी भाव भंगिमा एक धर्मप्राण हिंदू की होती। कैमरे के साथ मंदिर में जाने की चाहे जितनी आलोचना की जाए लेकिन उससे उनकी छवि आम हिंदू के मन में स्थापित हुई। इस लिहाज से उनका दूसरा पांच साल पहले पांच साल से बहुत अलग था। पहले पांच साल में वे योजनाओं की बात करते रहे लेकिन दूसरे पांच साल में भाजपा के पुराने वादों को पूरा करने पर जोर दिया और मंदिरों की परियोजनाओं को पूरा कराया। कॉशी कॉरिडोर परियोजना और उसके उद्घाटन समारोह में गंगा में डुबकी लगाने के बाद जलपात्र हाथ में लिए मोदी की जो छवि बनी उसने व्यापक हिंदू समाज को अभिभूत किया। उनकी सरकार ने अनुच्छेद 370 समाप्त किया तो राममंदिर का निर्माण भी करा दिया। निश्चित रूप से राममंदिर का निर्माण सुप्रीम कोर्ट के आदेश से हुआ है लेकिन आदेश देने वाले चीफ जस्टिस रंजन गोगोई को राज्यसभा भेज कर नरेंद्र मोदी ने अपना मैसेज हिंदू जनता तक पहुंचा दिया।धार्मिक परियोजनाओं को पूरा करने और देश की जनता को ज्यादा से ज्यादा धार्मिक बनाने के बाद मोदी अपने तीसरे चुनाव में धर्म का मुद्दा लेकर मैदान में उतरेंगे। देश की जनता किस तरह से धार्मिक हुई है और धार्मिक जनता का रूझान कैसे भाजपा की ओर बना है यह सीएसडीएस-लोकनीति के एक सर्वेक्षण से जाहिर होता है। इस संस्था जुड़े जाने माने चुनाव विश्लेषक संजय कुमार ने एक लेख लिखा है, जिसमें बताया है कि देश की हिंदू धर्मप्राण जनता का 51 फीसदी हिस्सा भाजपा को वोट करता है। पिछले चुनाव में 49 फीसदी ने भाजपा को वोट किया था और उससे पहले 31 फीसदी धर्मप्राण जनता भाजपा को वोट करती थी। उनके सर्वेक्षण के मुताबिक ऐसे हिंदू जो नियमित पूजा-पाठ करते हैं उनमें से 53 फीसदी ने पिछले चुनाव में भाजपा को वोट किया था और सिर्फ 10 फीसदी ने कांग्रेस को वोट डाला था।इसके साथ ही भारत में धर्मप्राण हिंदुओं की संख्या भी बढ़ रही है। कई सर्वेक्षणों से पता चलता है कि मंदिर जाने वाले युवाओं की संख्या बढ़ रही है। जींस-टीशर्ट पहनने वाले युवाओं में मंदिर जाने का चलन बढ़ा है तो सोशल मीडिया में धार्मिक कंटेंट सबसे ज्यादा पसंद किया जाने लगा है। धार्मिक गाने रातों रात हिट हो रहे हैं और धर्मगुरुओं की बाढ़ आई हुई है। इस बीच एक आंकड़ा यह आया है कि गोरखपुर में गीता प्रेस की छपाई मशीनें 24 घंटे चल रही हैं और तब भी रामचरितमानस की मांग पूरी नहीं हो रही है। गीता प्रेस में हर महीने रामचरितमानस की एक लाख प्रतियां छप रही हैं फिर भी गोदाम में कोई कोई स्टॉक उपलब्ध नहीं है। सोचें, एक तरफ रामचरितमानस और तुलसीदास पर हमले हैं तो दूसरी ओर बिक्री का रिकॉर्ड है !बहरहाल, जनता को धार्मिक बनाने का प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद भाजपा अगले चुनाव में व्यापक रूप से हिंदू धर्म और खासतौर से राममंदिर का मुद्दा बना रही है। जिस तरह का आयोजन 22 जनवरी को हुआ है।

# सबके राम, सबमें राम की भावना को स्थापित करने से बनेगा एक भारत-श्रेष्ठ भारत

**यह शहर सालों से सन्नाटे में था, गहरी उदासी और गहरे अवसाद में डूबा, शांत और उत्साहहीन। जैसे इतिहास और समय एक जगह ठहर गया हो और उसने आगे न बढ़ने की ठान रखी हो। दूरस्थ स्थानों से अयोध्या आते लोग भी हनुमान गढ़ी और कनक भवन जैसे स्थानों को देखकर लौट जाते। चौदहकोसी परिक्रमा करते और चले जाते। राम के लिए आए लाखों लोगों में बहुत कम लोग त्रिपाल या टाट में बैठे रामलला के दर्शन करते। लेकिन 22 जनवरी का नजारा अलग था। हर राह राममंदिर की ओर जा रही थी। आँखों में आँसू, चेहरे पर मुस्कान और पैरों में तूफान था। आखिर हमारे राम को उनके अपने घर और शहर में सम्मान मिलते देखना अद्भुत अनुभव था। सदियां गुजर गईं लेकिन सत्य स्थिर था। इसी सत्य को देखने सारी दुनिया टीवी, मोबाइल स्क्रीन पर आँखें गड़ाए बैठी थी। विवाद का अंत हुआ और सत्यमेव जयते का उद्घोष सार्थक हुआ। यह समाधान सर्वजनहिताय तो था ही। कभी त्रेता में वनवास गए राम कलयुग में भी एक दूसरी दुविधा के सामने थे। आजाद हिंदुस्तान में भी भारत के इस सबसे लायक बेटे के लिए मंदिर की प्रतीक्षा थी। बाबर के सेनापति द्वारा गिराए मंदिर के सामने पूजा-अर्चना करके आहत समाज यह सोचते हुए लौटता था कि कभी राम का भव्य मंदिर बनेगा। 2024 की यह 22 जनवरी करोड़ों आँखों के सपने सच करने के लिए आई थी। राम भारत के राष्ट्रनायक हैं, जिन्होंने अयोध्या से रामेश्वरम् को जोड़ा।**

**प्रो. संजय द्विवेदी**
**लेखक भारतीय जन संचार संस्थान**

अयोध्या में 22 जनवरी, 2024 को रामलला विराजे और तमाम आँखें सजल हो उठीं। ये आँसू यूं ही नहीं आए थे। ये भारत की लगातार आहत होती सभ्यता को एक सुनहरे पल में प्रवेश करते देखकर भर आई आँखें थीं। अयोध्या को इस तरह देखना विरल है। यह शहर सालों से सन्नाटे में था, गहरी उदासी और गहरे अवसाद में डूबा, शांत और उत्साहहीन। जैसे इतिहास और समय एक जगह ठहर गया हो और उसने आगे न बढ़ने की ठान रखी हो। दूरस्थ स्थानों से अयोध्या आते लोग भी हनुमान गढ़ी और कनक भवन जैसे स्थानों को देखकर लौट जाते। चौदहकोसी परिक्रमा करते और चले जाते। राम के लिए आए लाखों लोगों में बहुत कम लोग त्रिपाल या टाट में बैठे रामलला के दर्शन करते। लेकिन 22 जनवरी का नजारा अलग था। हर राह राममंदिर की ओर जा रही थी। आँखों में आँसू, चेहरे पर मुस्कान और पैरों में तूफान था। आखिर हमारे राम को उनके अपने घर और शहर में सम्मान मिलते देखना अद्भुत अनुभव था। सदियां गुजर गईं लेकिन सत्य स्थिर था। इसी सत्य को देखने सारी दुनिया टीवी, मोबाइल स्क्रीन पर आँखें गड़ाए बैठी थी। विवाद का अंत हुआ और सत्यमेव जयते का उद्घोष सार्थक हुआ। यह समाधान सर्वजनहिताय तो था ही।

कभी त्रेता में वनवास गए राम कलयुग में भी एक दूसरी दुविधा के सामने थे। आजाद हिंदुस्तान में भी भारत के इस सबसे लायक बेटे के लिए मंदिर की प्रतीक्षा थी। बाबर के सेनापति द्वारा गिराए मंदिर के सामने पूजा-अर्चना करके आहत समाज यह सोचते हुए लौटता था कि कभी राम का भव्य मंदिर बनेगा। 2024 की यह 22 जनवरी करोड़ों आँखों के सपने सच करने के लिए आई थी। राम भारत के राष्ट्रनायक हैं, जिन्होंने अयोध्या से रामेश्वरम् को जोड़ा। वे दीन-दुखियों के, जीवन जीने के लिए संघर्ष करती आम जनता के पहले और अंतिम सहायक हैं। रामचरित मानस और हनुमान चालीसा की पंक्तियों को दोहराते हुए यह संघर्षरत समाज राम के सहारे ही अपनी जीवनयात्रा को सरल बनाता रहा है। बावजूद इसके आजादी के बाद भी सबको मुक्त करने वाले नायक को मुक्ति नहीं मिली। लंबे समय तक तो वो ताले में बंद रहे। अखंड कीर्तन चलता रहा। किंतु राहें आसान नहीं थीं। अयोध्या आंदोलन की यादें आपको सिहरा देंगीं। 1990 और 1992 की यादें एक गहरी कड़वाहट घोल जाती हैं। राजनीति किस तरह आसान मुद्दों को भी जटिल बनाती है। इसकी कहानी अयोध्या आज भी बताती है। अयोध्या अब अपने सदियों के दर्द से मुक्त मुस्करा रही है।

दुनिया के किसी पंथ, संप्रदाय के महानायक के साथ यह होता तो क्या होता? सोचकर भी सिहरन होती है। किंतु भारत में यह हुआ और हिंदू समाज के अपार धैर्य, सहनशीलता की कथा फिर से दोहराई गयी। एक साधारण मंदिर नहीं अपने राष्ट्रपुरूष, राष्ट्रनायक की जन्मभूमि के लिए भी लंबा अहिंसक संघर्ष सड़क से लेकर अदालतों तक चलता रहा। सही मायने में 22 जनवरी का दिन हमारे राष्ट्रजीवन में 15 अगस्त,1947 से कम महत्त्पूर्ण नहीं है। क्योंकि 15 अगस्त के दिन हमें अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली थी तो 22 जनवरी को हम सांस्कृतिक, वैचारिक दासता और दीनता से मुक्त हो रहे हैं। यह भारत की चिति को प्रसन्न करने का क्षण है। यह आत्मदैन्य से मुक्ति का क्षण है। यह क्षण अप्रतिम है। वर्णनातीत है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से लेकर स्व. राजीव गांधी (अपनी अयोध्या यात्रा में) तक रामराज्य लाने की बात करते हैं। किंतु उस यात्रा की ओर पहला कदम आजादी के अमृतकाल में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बढ़ाया है। इसलिए सारा देश उनके साथ खड़ा है। कांग्रेस नेता श्री प्रमोद कृष्णन ने सत्य ही कहा है कि यदि श्री मोदी प्रधानमंत्री नहीं होते तो मंदिर निर्माण संभव नहीं होता।

**नए भारत के स्वप्नदृष्टा हैं मोदी**

रामलला का 496 वर्षों बाद अपनी जन्मभूमि पर पुनःस्थापित होना सबको भाववि ल कर गया। दुनिया भर में बसे 100 करोड़ से ज्यादा हिंदुओं और भारतवंशियों के लिए यह गौरव का क्षण था। इस मौके पर माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरएसएस प्रमुख डा. मोहन भागवत जी ने किसी तरह का राजनीतिक संवाद न करते हुए जो बातें कहीं वो भविष्य के भारत की आधारशिला बनेंगीं। संघ प्रमुख ने रामराज्य की अवधारणा को व्याख्यायित करते हुए भविष्य के कर्तव्य पथ की चर्चा की। उनका कहना था- आज अयोध्या में रामलला के साथ भारत का स्व लौट आया है। संपूर्ण विश्व को त्रासदी से राहत देने वाला एक नया भारत खड़ा होकर रहेगा। उसका प्रतीक यह कार्यक्रम बन गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अवसर पर साफ कहा कि राम आग नहीं ऊर्जा हैं। राम विवाद नहीं समाधान हैं। राम विजय नहीं विनय हैं। राम सिर्फ हमारे नहीं, सबके हैं। यह बात बताती है कि माननीय प्रधानमंत्री एक नए भारत के स्वप्नदृष्टा हैं। नया भारत बनाने और उसमें एक जीवंत ऊर्जा का संचार करने के लिए प्रधानमंत्री ने न सिर्फ रामलला की मूर्ति स्थापना के लिए 11 दिनों का व्रत विधानपूर्वक बिना ठोस भोजन लिए पूर्ण किया, बल्कि उनकी विराट सोच ने इस आयोजन को और भी अधिक भव्य और सरोकारी बना दिया। देश के विविध क्षेत्रों की माननीय प्रतिभाओं को एक स्थान पर एकत्र कर राम जन्मभूमि तीर्थ ट्रस्ट ने इस आयोजन को विशेष गरिमा प्रदान की। राजनीति से परे हटकर इस घटना का विश्लेषण करना ही इसे सही अर्थ में समझना होगा। तभी हम भारत और उसकी महान जनता के मन में रमे राम को समझ पाएंगें। ह्यसबके राम-सबमें राम की भावना स्थापित कर हम राममंदिर को राष्ट्रमंदिर में बदल सकते हैं। जिससे मिलने वाली ऊर्जा दिलों को जोड़ने, मनों को जोड़ने का काम करेगी। यह अवसर भारत का भारत से परिचय कराने का भी है। जनमानस में आई आध्यात्मिक और नैतिक चेतना को देखकर लगता है कि भारत की एक नई यात्रा प्रारंभ हुई है, जो चलती रहेगी बिना रूके, बिना थके।

# बालिका सुरक्षा एवं अधिकारों की प्रासंगिकता

**यही समाज और हर नागरिक का कत्र्तव्य है और स्वस्थ समाज और देश के उज्ज्वल भविष्य के प्रति सच्ची सेवा है। परंतु बालिकाओं को, वो आदर नहीं मिल रहा जो वराहमिहिर ने कहा था कि औरत भगवान ने एक रत्न बनाया है, उसको घर में खुशहाली की देवी के रूप मे इज्जत देनी चाहिए। मनु ने भी औरतों को सम्मान देने को कहा। उन्होंने कहा कि किसी परिवार का खुशहाल होना औरत को सम्मान देने से सीधा संबंध रखता है। परंतु भारतीय समाज में इस समय औरतों की स्थिति इतनी आदरणीय नहीं है। उनको हर जगह असमानता का सामना करना पड़ रहा है। इसी को दृष्टिगत रखकर, भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 2008 से राष्ट्रीय बालिका दिवस हर साल 24 जनवरी को एक नए थीम के साथ मनाने का फैसला लिया, ताकि बालिकाओं के अधिकारों तथा असमानता के बारे में बालिकाओं और नागरिकों को जागरूक किया जा सके तथा बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण को बढ़ावा मिले तथा उनके शोषण को रोका जा सके। उनके ऊपर लगी पाबंदियों से उन्हें वायु की तरह मुक्त करके पुरुषों के समान दर्जा दिया जा सके, ताकि वो अपना दिव्य रूप पहचान सकें और पितृसत्तात्मक, पूंजीवादी, उपभोक्तावादी सत्ता, जिसका बोझ औरत सदियों से सहन कर रही है, से टकराने की ओर बढ़े, क्योंकि पुरुष अभी भी उच्च सामाजिक स्थिति पाए हुए हैं और पारंपरिक सामाजिक अधिकार औरतों के लिए नहीं छोडा चाहते।**

**सत्यपाल वशिष्ठ**
**स्वतंत्र लेखक**

भारत 444 मिलियन बच्चों का घर है। मतलब हर चौथा व्यक्ति भारत में बच्चा है, जो 1 से 14 वर्ष आयु वर्ग में आता है। बच्चे ही देश का भविष्य तथा समाज का दर्पण होते हैं। उनके लिए सबसे बड़ा पोषण वातावरण होता है, जिसमें वे पलते हैं। उनको किसी भी हानि, शोषण और दुर्व्यवहार से बचाना चाहिए तथा उनके अधिकारों का आदर करना चाहिए। यही समाज और हर नागरिक का कत्र्तव्य है और स्वस्थ समाज और देश के उज्ज्वल भविष्य के प्रति सच्ची सेवा है। परंतु बालिकाओं को, वो आदर नहीं मिल रहा जो वराहमिहिर ने कहा था कि औरत भगवान ने एक रत्न बनाया है, उसको घर में खुशहाली की देवी के रूप मे इज्जत देनी चाहिए। मनु ने भी औरतों को सम्मान देने को कहा। उन्होंने कहा कि किसी परिवार का खुशहाल होना औरत को सम्मान देने से सीधा संबंध रखता है। परंतु भारतीय समाज में इस समय औरतों की स्थिति इतनी आदरणीय नहीं है। उनको हर जगह असमानता का सामना करना पड़ रहा है। इसी को दृष्टिगत रखकर, भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 2008 से राष्ट्रीय बालिका दिवस हर साल 24 जनवरी को एक नए थीम के साथ मनाने का फैसला लिया, ताकि बालिकाओं के अधिकारों तथा असमानता के बारे में बालिकाओं और नागरिकों को जागरूक किया जा सके तथा बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण को बढ़ावा मिले तथा उनके शोषण को रोका जा सके। उनके ऊपर लगी पाबंदियों से उन्हें वायु की तरह मुक्त करके पुरुषों के समान दर्जा दिया जा सके, ताकि वो अपना दिव्य रूप पहचान सकें और पितृसत्तात्मक, पूंजीवादी, उपभोक्तावादी सत्ता, जिसका बोझ औरत सदियों से सहन कर रही है, से टकराने की ओर बढ़े, क्योंकि पुरुष अभी भी उच्च सामाजिक स्थिति पाए हुए हैं और पारंपरिक सामाजिक अधिकार औरतों के लिए नहीं छोडा चाहते। भारत सरकार एवं राज्य सरकारों ने लड़कियों को आगे बढ़ाने तथा सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए बहुत से प्रोग्राम शुरू किए हैं जिनमें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, सीबीएसई छात्रवृत्ति योजना, बालिका समृद्धि योजना, मुख्यमंत्री राजश्री योजना, मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना, माझी कन्या भाग्यश्री योजना, सिंगल गर्ल चाइल्ड स्कॉलरशिप योजना, पहली बेटी के होने पर 50000 रुपए की मदद, गर्भवती महिला को प्रसव पूरा होने के बाद 6400 रुपए, मुख्यमंत्री कन्या सुरक्षा योजना, मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना और कन्या सुमंगला योजना आदि शामिल हैं। इन योजनाओं से बालिकाओं के लिंगानुपात में सुधार, कानूनी अधिकार, शिक्षा, चिकित्सा देखभाल, शादी आदि में सहायता तथा अवसर प्रदान हुए हैं। इसके साथ बालिका लिंग सुधार के लिए अल्ट्रासाउंड केंद्रों में गर्भधारण के बाद लिंग की जांच को कानूनी अवैध, बाल विवाह अवैध तथा 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त तथा जरूरी शिक्षा की सुविधा दी है। मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेगनेंसी अधिनियम के सख्ती से लागू करने के बावजूद 0-6 वर्ष की बाल लिंगानुपात में सुधार नहीं हुआ। 1991 में देश मे 1000 बालकों पर 945 बलिकाएं थीं जो 2001 में 927 तथा 2011 में 918 हो गई। हरियाणा में स्थिति और खराब है। यहां रोहतक जिले के कुछ गांवों में यह दर 2023 में 800 से भी नीचे है। यह सब बेटे को पाने की लालसा के कारण है और यह मानसिकता अभी भी बहुत से देशवासियों की है। कई जगह तो लडकों की शादी के लिए लड़कियां दूसरे राज्यों से तस्करी करके लाई जा रही हैं। सवाल है कि अगर बेटी जन्म न लेगी घर में, बहू कहां से लाओगे, बेटे से वंश चलाने की चाहत में बहू बिन वंश कैसे चलाओगे? सरकार द्वारा बालिकाओं की सुरक्षा के लिए बहुत से कानून बनाए गए हैं। इसके बावजूद बालिकाएं विभिन्न अपराधों की शिकार हो रही हैं।

इनमें से जो अपराध 18 वर्ष की आयु के नीचे वाले बच्चों से होता है, भारत में उसे बच्चों के विरुद्ध अपराध कहते हैं। ये अपराध हैं : हत्या, अपहरण, यौन शोषण, परित्याग करना, तस्करी, जन्म पूर्व लिंग निर्धारण, कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, जबरदस्ती विवाह, तेजाब हमला, दहेज उत्पीड, बाल प्रोनोग्राफी, बाल वेश्यावृत्ति के लिए जबरन अपहरण, जबरन विवाह, बाल श्रम, बाल भिक्षावृत्ति, अंगों के प्रत्यारोपण के लिए अपहरण, सम्मान के नाम पर किया अपराध, लज्जा भंग, सडक पर यौन उत्पीड, स्कूलों में अध्यापकों द्वारा यौन उत्पीड, लिंग भेद आदि। बालिकाओं पर यौन शोषण के अभी हाल ही में कुछ मामले घटे हैं। उनको देखकर लगता है कि औरतों को अभी भी समाज आदर से नहीं देखता। हिमाचल में गगरेट (ऊना) में 11 दिसंबर को एक बालिका का अपहरण करने के बाद उसकी हत्या कर दी गई। मध्य प्रदेश में 30 दिसंबर को शहडोल जिले में सुनने और बोलने में अक्षम 17 वर्षीय लडकी के साथ 45 वर्षीय पड़ोसी ने दुष्कर्म किया। रोपड़ (पंजाब) में 15 वर्षीय दलित लडकी ने 31 दिसंबर 2023 को आत्महत्या कर ली क्योंकि उसके साथ दो लडकों ने बलात्कार किया था। अंबाला में एक ट्यूशन अध्यापक को दिसंबर 2023 को अदालत द्वारा 14 वर्षीय बालिका के साथ दुष्कर्म व गर्भवती करने पर 20 साल की सजा सुनाई गई। कैथल तथा जींद में सरकारी स्कूल के प्रिंसिपलों को स्कूल की बालिकाओं के साथ यौन उत्पीड करने के मामले में हिरासत में लिया गया। अमृतसर में एक अध्यापक पर 5 जनवरी 2024 को तीन लड़कियों के यौन उत्पीड के मामले में केस दर्ज हुआ। सुंदरनगर (हिमाचल) में 6 वर्षीय बच्चे के साथ बलात्कार करने पर 45 वर्षीय पुरुष को 7 जनवरी 2023 को हिरासत में लिया गया। भारतीय जनता पार्टी के एक एमएलए रामदुलर (उत्तर प्रदेश) को 25 साल की सजा एक लडकी से बलात्कार पर दी गई। 10 नवंबर 2023 को पथनमिथट्टा (केरल) में एक 63 वर्षीय व्यक्ति को अपनी नाबालिग बेटी से बलात्कार करने का आरोपी पाए जाने पर अदालत ने 109 वर्ष की सजा सुनाई। पालघर (महाराष्ट्र) के नालासोपारा के एक व्यक्ति ने अपनी बेटी से बार-बार बलात्कार किया, फिर पीटने से उसकी मौत हो गई। पुणे में 50 वर्षीय एक व्यक्ति के विरुद्ध नाबालिग बेटी से बार-बार बलात्कार तथा गर्भवती करने पर केस दर्ज हुआ। ऐसे तो बहुत से मामले हो रहे हैं, परंतु इन चंद मामलों के ऊपर नजर डालें तो पता चलता है कि समाज में पिता-पुत्री, गुरु-शिष्य के रिश्तों की जो मयार्दा है उसको अमर्यादित पुरुषों ने तार-तार कर दिया है। बालिकाओं के प्रति अपराध को रोकने तथा उनके प्रति समाज की सोच को बदलने की सख्त जरूरत है।

# लोकसभा चुनाव कहीं बेसब्री तो कहीं उदासीनता

**देवदत्त दुबे**

वैसे तो 2019 में अप्रैल-मई लोकसभा के चुनाव हुए थे। इस बार कुछ पहले चुनाव कराने की अटकलें भी चल रही है। भाजपा के रणनीतिकार राम मंदिर मुद्दे पर बने माहौल के कारण लोकसभा चुनाव के लिए बेसब्र दिखाई दे रहे हैं। वहीं विपक्षी दल कहीं गठबंधन तो कहीं प्रत्याशियों के चयन के कारण कोई उतावलापन नहीं दिखा रहे हैं। दरअसल, प्रदेश में भाजपा विधानसभा चुनाव में भारी जीत दर्ज करने के बाद सभी 29 लोकसभा सीट जीतने का दावा कर रही है और इसके लिए तैयारी भी तेज हो गई है। प्रत्याशी चयन के लिए भी पार्टी संगठन स्तर पर फीडबैक लेना प्रारंभ कर दिया है। पार्टी की पूरी रणनीति विधानसभा चुनाव के पैटर्न पर लोकसभा चुनाव लड़ने की है। जिन 10 सीटों पर विधानसभा चुनाव के दौरान पार्टी का प्रदर्शन कमजोर रहा है वहां पर फरवरी माह में ही प्रत्याशी घोषित हो सकते हैं। इसके अलावा जिन सात सांसदों को विधानसभा चुनाव में टिकट दिया गया था उनमें से पांच सीटों पर सांसद विधायक बन चुके हैं जबकि सतना सांसद गणेश सिंह और मंडला सांसद फग्गन सिंह कुलस्ते चुनाव हार गए हैं ऐसे में इन सात सीटों पर भी पार्टी बेहतर उम्मीदवारियों की तलाश में हैं। बहरहाल, पार्टी सभी 29 सीट जीतने का दावा कर रही है। उसके लिए छिंदवाड़ा पर बहुत पहले से फोकस बनाया हुआ था और वहां पर किसी दिग्गज नेता को चुनाव मैदान में उतारा जा सकता है। यहां तक कि पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का भी नाम चचाओं में है। पिछले लोकसभा चुनाव में जब कमलनाथ मुख्यमंत्री थे तब उनके बेटे नकुलनाथ लगभग 38000 वोटो से ही चुनाव जीत पाए थे और तभी से पार्टी 2024 का लक्ष्य लेकर चल रही है लेकिन छिंदवाड़ा के अलावा मुरैना, भिंड, ग्वालियर, मंडल, टीकमगढ़, बालाघाट, धार, खरगोन और रतलाम लोकसभा क्षेत्र भी विधानसभा चुनाव में अपेक्षाकृत कमजोर प्रदर्शन के कारण पार्टी की निगाहों में है। यहां बेहतर प्रत्याशियों के साथ-साथ बेहतर जमीनी जमावट अभी से की जाने लगी है। पार्टी विधानसभा चुनाव में हारे उन नेताओं को भी मैदान में उतार सकती है जो दमखम के साथ चुनाव लड़ सके। मसलन शिवराज सिंह चौहान, नरोत्तम मिश्रा, अनूप मिश्रा को भी मैदान में उतारा जा सकता है। शिवराज सिंह चौहान को छिंदवाड़ा के साथ-साथ भोपाल और विदिशा से भी मैदान में उतारने की चर्चा है। कुछ राज्यसभा सदस्यों को भी लोकसभा का चुनाव लड़वाया जा सकता है। जिसमें ज्योतिरादित्य सिंधिया, कविता पाटीदार, सुमेर सिंह सोलंकी का नाम विशेष रूप से चर्चा में है।

वहीं दूसरी ओर प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस में भी प्रत्याशियों को लेकर चिंतन मंथन चल रहा है। पार्टी का सबसे ज्यादा जोर दिग्गज नेताओं को लोकसभा चुनाव लड़ने पर रहेगा यहां तक कि पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को छिंदवाड़ा और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह को राजगढ़ से लोकसभा का चुनाव पार्टी लड़ा सकती है। उसके अलावा पूर्व नेता प्रतिपक्ष गोविंद सिंह को मुरैना से वहीं फूल सिंह बरैया को भिंड से और ग्वालियर सीट पर शोभा सिकरवार को टिकट दिया जा सकता है। ग्वालियर में प्रवीण पाठक भी

## संक्षिप्त खबरें

### बिजनौर में मिला नर तेंदुए का शव, वन विभाग ने शुरू की जांच

बिजनौर। उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के स्योहारा क्षेत्र में एक तेंदुए की मौत का मामला सामने आया है। वन विभाग ने तेंदुए के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वन विभाग एसडीओ अंशुमान मित्तल ने बुधवार को बताया कि मंगलवार शाम को स्थानीय लोगों द्वारा वन विभाग को एक तेंदुए के शव की सूचना मिली थी। अधिकारियों के साथ वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। वन विभाग ने जांच शुरू की तो पता चला कि यह एक चार वर्षीय नर तेंदुआ था। तेंदुए की मौत की असली वजह क्या थी, यह पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चलेगा।

### बिजनौर में रामगंगा बैराज में गिरी बेकाबू कार, चार लोगों की मौत

बिजनौर। बिजनौर जिले के हरेवली इलाके में एक अनियंत्रित कार के रेलिंग तोड़कर रामगंगा बैराज में गिर जाने से उस पर सवार चार लोगों की मौत हो गयी। पुलिस क्षेत्राधिकारी अर्चना सिंह ने बुधवार को बताया कि मंगलवार देर रात शेरकोट थाना क्षेत्र के नूरपुर छीपरी गांव के निवासी खुर्शीद (45), फैसल (25), रशीद (22), मारूफ (19) और सिकंदर (21) अफजलगढ़ से प्रदर्शनी देखकर कार से लौट रहे थे। उन्होंने बताया कि रास्ते में उनकी कार हरेवली के पास अनियंत्रित हो गई और रामगंगा बैराज पर बनी रेलिंग को तोड़ते हुए लगभग 28 फीट नीचे पानी में जा गिरी। पुलिस को जानकारी मिलते ही बचाव अभियान शुरू किया गया। लगभग दो घंटे बाद हाइड्रो मशीन की सहायता से कार और उसमें फंसे चार लोगों को निकाला।

पुलिस क्षेत्राधिकारी ने बताया कि इस दौरान खुर्शीद, फैसल, रशीद और मारूफ की पानी में डूबने से मौत हो गयी। घटना के दौरान सिकंदर कार से कूद गया इसलिए उसकी जान बच गई। उन्होंने बताया कि पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजे हैं।

### बिजनौर में कार सवार पांच लोग राम गंगा नदी बैराज में डूबे

बिजनौर। उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में मंगलवार देर रात अफजलगढ़ थाना क्षेत्र में एक तेज रफ्तार अनियंत्रित वैगनआर कार हरेवली स्थित राम गंगा नदी बैराज में गिर गई। हादसे में कार सवार चार लोगों की डूबकर मौत हो गई। मृतकों की पहचान खुर्शीद, राशिद, फैसल और माहरुफ के रूप में हुई है। अफजलगढ़ पुलिस उपाधीक्षक अर्चना सिंह ने बुधवार को बताया कि मंगलवार देर करीब रात आठ बजे अफजलगढ़ थाना अंतर्गत हरेवली राम गंगा नदी बैराज में पांच लोगों के डूबने की सूचना मिली थी। राहत-बचाव दल के साथ पुलिस मौके पहुंची। डीएसपी ने कहा कि हादसा उस वक्त हुआ जब ग्राम नूरपुर छिपरी के रहने वाले पांच लोग सफेद रंग की वैगनआर कार से अफजलगढ़ से नुमाइश देखकर घर वापस लौट रहे थे। हरेवली राम गंगा नदी बैराज पर चालक ने कार पर अपना नियंत्रण खो दिया और कार नदी में जा गिरी। डीएसपी ने कहा कि हादसे में स्थानीय गोताखोर की मदद से सिकन्दर को सकुशल बचा लिया गया जबकि खुर्शीद, राशिद, फैसल और माहरुफ की मौके पर ही मौत हो गई। शवों को पोस्टमार्टम के शवगृह भेजा गया है। आगे जांच जारी है।

### मायावती ने की बसपा कांशीराम को भारत रत्न देने की मांग

लखनऊ, एजेंसी। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की अध्यक्ष मायावती ने बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर को केंद्र सरकार द्वारा ह्यभारत रत्नह्न दिए जाने के निर्णय का स्वागत करते हुए बसपा संस्थापक काशीराम को भी इस सर्वोच्च नागरिक सम्मान से नवाजने की मांग की है। मायावती ने सोशल मीडिया मंच ह्यएक्सह्न पर किये गये सिलसिलेवार पोस्ट में यह मांग रखी। उन्होंने कहा, देश में खासकर अति-पिछड़ों को उनके संवैधानिक हक के लिए आजीवन कड़ा संघर्ष करके उन्हें सामाजिक न्याय एवं समानता का जीवन दिलाने वाले जननायक श्री कपूर्री ठाकुर जी को आज उनकी 100 वीं जयंती पर अपार श्रद्धा-सुमन अर्पित। बसपा प्रमुख ने इसी सिलसिले में एक अन्य पोस्ट में कहा, ह्यबिहार के दो बार मुख्यमंत्री रहे देश के ऐसे महान व्यक्तित्व श्री कपूर्री ठाकुर जी को देर से ही सही, अब भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित करने के केन्द्र सरकार के फैसले का स्वागत है। उन्होंने बसपा संस्थापक कांशीराम को भी भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग करते हुए एक अन्य पोस्ट में कहा, इसी प्रकार, दलितों एवं अन्य उपेक्षितों को आत्म-सम्मान के साथ जीने एवं उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए श्री कांशीराम जी का योगदान ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय है।

# हर रामभक्त को रामलला का सुगम दर्शन कराना हमारा कर्तव्य : मुख्यमंत्री

## मुख्यमंत्री ने की अयोध्याधाम में दर्शनार्थियों की व्यवस्था की समीक्षा, कहा, कतारबद्ध कर सबको कराएं दर्शन, न लगे भीड़

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्याधाम में रामलला के दर्शन की आकांक्षा लिए उमड़े श्रद्धालुओं के सहज, सुगम व संतोषपूर्ण दर्शन के लिए सभी आवश्यक प्रबंध करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने मंगलवार को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारियों एवं स्थानीय प्रशासन के साथ परिस्थितियों का जायजा लेने के बाद बुधवार को संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्याधाम में आस्था का जनसमुद्र देखा जा सकता है। पूरे देश से श्रद्धालुओं का आगमन हो रहा है। हर कोई अपने आराध्य प्रभु के दर्शन का पुण्य लाभ चाहता है। भारी संख्या में श्रद्धालुओं का आगमन स्वाभाविक है। ऐसी परिस्थितियों में हर श्रद्धालु की सुरक्षा, सुविधा व सुगम दर्शन की व्यवस्था करना हम सभी का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि स्थानीय प्रशासन और मंदिर न्यास के बेहतर समन्वय के साथ क्राउड मैनेजमेंट किया जाना चाहिए। राम पथ, भक्ति पथ, धर्म पथ और जन्मभूमि पथ पर, जहां भी दर्शनार्थी हों, कतारबद्ध खड़े हों। भीड़ न लगे। कतार चलायमान रहें। बुजुर्गों, बच्चों, महिलाओं का विशेष ध्यान दें।दर्शनार्थियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए प्रमुख पथों पर लो-ट्यून में राम भजन बजने चाहिए। सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों का व्यवहार मर्यादित होना चाहिए। कतारबद्ध श्रद्धालुओं के लिए जगह-जगह पर पेयजल की व्यवस्था कराएं। दिव्यांग अथवा अति बुजुर्ग श्रद्धालु के लिए आवश्यकतानुसार व्हीलचेयर के प्रबंध भी होने चाहिए। ठंड बहुत है, ऐसे में अलाव की व्यवस्था कराएं। भक्ति पथ और जन्मभूमि पथ पर पर जूट मैटिंग कराएं। प्लास्टिक की कुर्सियां लगाएं ताकि बुजुर्ग एवं वृद्धजन आवश्यकतानुसार विश्राम कर सकें। सभी घाटों सहित पूरे नगर में साफ-सफाई-स्वच्छता लगातार होती रहे। मशीनीकृत सफाई हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि जो श्रद्धालु दर्शन-पूजन कर चुके हों, उन्हें उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए परिवहन के पर्याप्त साधन उपलब्ध हों। परिवहन निगम की बसों की व्यवस्था हो। विभिन्न नगरों से अयोध्या आने के लिए अतिरिक्त बसों का संचालन अभी स्थगित रखें। दर्शन के उपरांत जिस रूट के श्रद्धालु अधिक हों, उस ओर बसों को लगाकर श्रद्धालुओं को गंतव्य तक पहुंचाने की व्यवस्था हो। ऐसे रूट चिह्नित कर आवश्यकतानुसार रेलवे से कोऑर्डिनेट करते हुए ट्रेनों के संचालन के प्रयास होने चाहिए। परिवहन मंत्री स्वयं इस व्यवस्था को सुनिश्चित कराएं।

मुख्य सचिव, डीजीपी, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री, प्रमुख सचिव परिवहन और प्रमुख सचिव नगर विकास बेहतर समन्वय से श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा के लिए आवश्यक प्रबंधन सुनिश्चित कराएंगे। अयोध्या की सीमा से लगे जिले के साथ अयोध्या प्रशासन तथा शासन स्तर के अधिकारी अंतरराज्यीय संवाद/सम्पर्क बनाए रखें। किस दिशा से कितने श्रद्धालुओं का आगमन हो रहा है, इसका आकलन करते हुए तदनुसार आवश्यक प्रबंध किए जाएं।

उन्होंने कहा कि 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस है। उल्लासमय-उत्साहपूर्ण वातावरण में कतिपय अराजक तत्व माहौल को खराब करने का कुत्सित प्रयास कर सकते हैं। यह सुनिश्चित किया जाए कि किसी गीत-संगीत, नारेबाजी अथवा किसी भी अन्य कृत्य से किसी की धार्मिक भावनाओं का अपमान अथवा तिरस्कार न हो। यदि कोई विद्वेष फैलाने वाले ऐसे प्रयास करता हुआ पाया जाए तो उनके विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति के अनुरूप कठोरतम कार्रवाई हो।

अयोध्याधाम में अपने आराध्य प्रभु श्रीरामलला के दर्शन की आकांक्षा लिए पूरे देश से भारी संख्या में श्रद्धालुओं के आगमन से उत्पन्न अविस्मरणीय स्थिति के दृष्टिगत अति विशिष्ट, विशिष्ट, गणमान्य जन द्वारा अयोध्या आगमन का कार्यक्रम बनाने से एक सप्ताह पूर्व स्थानीय प्रशासन, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास अथवा राज्य सरकार को सूचित करना हितकर होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि एक होल्डिंग एरिया तैयार करें, जहां दर्शनार्थियों का बड़ा समूह एकत्रित हो सके। यहां से श्रद्धालुओं को धीरे-धीरे दर्शन के लिए छोड़ा जाना उचित होगा। यहां पर उनके सामान, जूते, चप्पल और मोबाइल आदि सामान की सुरक्षा के प्रबंध होने चाहिए।

### बलिया में छात्र से दुष्कर्म के आरोप में शिक्षक गिरफ्तार

बलिया (उप्र)। बलिया जिले के हल्दी थाना क्षेत्र में ट्यूशन पढ़ने गये एक लड़के से दुष्करर्म के आरोप में उसके शिक्षक को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस उपाधीक्षक मोहम्मद उस्मान ने बुधवार को बताया कि हल्दी थाना क्षेत्र के एक गांव में गत 19 जनवरी को सात साल का एक लड़का अपने गांव के ही शिक्षक संजय पासवान (30) के यहां ट्यूशन पढ़ने गया था। आरोप है कि इसी दौरान शिक्षक संजय पासवान ने उसे अपनी हवस का शिकार बनाया। उन्होंने बताया कि इस मामले में बालक के नाना की तहरीर पर संजय पासवान के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम की सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज करके उसे मंगलवार को गिरफ्तार कर लिया गया।

## प्राण प्रतिष्ठा के दूसरे दिन भी रामलला के दर्शन के लिए लगी कतारें

प्रात: किरण, संवाददाता

अयोध्या। राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद दूसरे दिन बुधवार को भी राम भक्तों में दर्शन को लेकर काफी उत्साह है। सुबह से ही कतारें लगी हुई हैं। मंगला आरती के साथ ही दर्शन निरंतर जारी है। मौके पर प्रमुख सचिव संजय प्रसाद, डीजी कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार और स्थानीय अधिकारी मौजूद हैं। भीड़ सामान्य है। आज वरिष्ठ अधिकारी गर्भ गृह में मौजूद हैं। सुबह से ही श्रद्धालु को व्यवस्थित तरीके से लाइन में लगाकर दर्शन कराया जा रहा है। श्रद्धालु जय श्रीराम का नारा लगा रहे हैं।

रामलला के दर्शन के लिए लोगों में जबरदस्तल उत्सादह देखने को मलि रहा है। दूर-दूर से अयोध्यार लोग पहुंच रहे हैं। प्रभु श्रीराम के दर्शन कर रहे हैं। मंदरि परसिर जय श्रीराम के जयकारों से गूंज रहा है। श्रद्धालुओं को व्यवस्थित तरीके से लाइन में लगाकर दर्शन कराया जा रहा है। भक्त जय श्रीराम का नारा लगाते हुए प्रभु श्रीराम के दर्शन कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के डीजी (कानून-व्यवस्था) प्रशांत कुमार ने बताया कि बेहतर भीड़ प्रबंधन और बेहतर ट्रैफिक व्यवस्था, यह दो चीजें थीं जो हमने यहां आने के बाद सुनिश्चित की। शासन का निर्देश था कि किसी भी व्यक्ति को कोई असुविधा ना हो। जो भी प्रबंध रातभर में अंतर्विभागीय समन्वय से हमने किया था, उसके अच्छे परिणाम देखने को मिल रहे हैं। सभी श्रद्धालुओं को अपनी कतारों में लगा दिया जा रहा है और अनवरत दर्शन चल रहे हैं। दरअसल, प्राण प्रतिष्ठा के अगले दिन मंगलवार को भारी भीड़ के मंदिर परिसर में घुसने से अव्यवस्था फैल गई थी। मुख्यमंत्री के साथ मंदिर में हुई अफसरों की बैठक में यह मामला उठा। इसके बाद यह तय हुआ कि मंदिर के बाहर से लंबी लाइन लगाकर दर्शन कराए जाएंगे। खुद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने धैर्य के साथ दर्शन करने की अपील की। इसका असर बुधवार को दिखाई भी दिया। बुधवार को व्यवस्था के साथ दर्शन किए जा रहे हैं। हजारों लोगों के मंदिर परिसर में आ जाने के बाद भी दर्शन प्रक्रिया सुचारू रूप से बिना धक्के-मुक्के होती रही। लंबी-लंबी कतारें सुबह से ही दिखनी शुरू हो गईं।

## अयोध्या में 10 करोड़ की लागत से बो स्ट्रिंग स्टील गर्डर रेलवे ब्रिज, छह माह में होगा तैयार

प्रात: किरण, संवाददाता

अयोध्या क्षेत्र में बाराबंकी-अकबरपुर रेल रूट पर बो स्ट्रिंग स्टील गर्डर रेलवे ब्रिज के निर्माण का रास्ता साफ हो गया है। उत्तर प्रदेश सेतु निगम लिमिटेड ने तैयारी शुरू कर दी है और प्रक्रिया को कॉन्ट्रैक्टर्स व एजेंसी को आबद्ध करके पूरा किया जाएगा। इस प्रक्रिया को इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट व कंस्ट्रक्शन (ईपीसी) बेसिस पर पूरा किया जाएगा, जिसकी प्रक्रिया शुरू हो गई है। इस ब्रिज के निर्माण पूर्व सर्वे व टेक्निकल इन्वेस्टिगेशन समेत तमाम प्रक्रियाओं को आईआईटी व एनआईआईटी की देखरेख में पूर्ण किया जाएगा। एक अधिकारी ने बताया कि अयोध्या के समेकित विकास के दृष्टिगत एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई है। इसी के क्रियान्वयन के जरिए अयोध्या में इस रेलवे ओवरब्रिज (आरओबी) के निर्माण का रास्ता साफ हुआ है।

कार्ययोजना के अनुसार, बो स्ट्रिंग स्टील गर्डर रेलवे ओवरब्रिज के वास्तुशिल्प व संरचनात्मक डिजाइन की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाएगा। सभी आवश्यक सेवाओं के डिजाइन, काम शुरू करने के लिए आवश्यक स्थानीय निकायों/प्राधिकरणों से अनिवार्य अनुमोदन प्राप्त करने, काम और सेवाओं के निष्पादन और संपत्तियों को सभी पहलुओं में रहने योग्य बनाने के बाद सौंपने की प्रक्रिया को लेकर कार्ययोजना को क्रियान्वित किया जा रहा है। इसके जरिए बाराबंकी-अकबरपुर रेलवे मार्ग पर एलसी नंबर 108ए पर आरओबी के बो स्ट्रिंग स्टील गर्डर रेलवे ब्रिज हिस्से का निर्माण सुनिश्चित होगा। ईपीसी मॉड्यूल पर दो वर्षों के इवैल्यूएशन पीरियड के हिसाब से इस ब्रिज का विकास होगा, जिसे 6 महीने की अवधि में पूरा कर लिया जाएगा। इस परियोजना के पूर्ण होने पर बाराबंकी-अकबरपुर रेल रूट पर कनेक्टिविटी में इजाफा होगा और रेल आवागमन सुलभ हो जाएगा।

## इजरायल में नौकरी के लिए यूपी में भर्ती अभियान

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने इजरायल में नौकरी के लिए एक सप्ताह का भर्ती अभियान शुरू किया है। यह औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) में आयोजित किया जा रहा है। सात दिनों में, इजरायली टीम बार बेंडर, मेसन, टाइलर और शटरिंग, बढ़ई जैसी नौकरियों के लिए करीब 4,600 उम्मीदवारों का परीक्षण करेगी। चयनित लोगों को चिकित्सा बीमा, भोजन और आवास के साथ प्रति माह 1.37 लाख रुपये का वेतन मिलेगा। इजरायल को कुशल श्रमिकों की आवश्यकता है, श्रम मंत्री अनिल राजभर ने कहाः यह एक बड़ा अवसर है। इजरायल और भारत दोनों इजरायल में श्रमिकों की स्थिति में सुधार के तरीके तलाश रहे हैं। जरूरत पड़ने पर उन्हें कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जाएगा।

प्रशिक्षण और रोजगार के निदेशक कुणाल सिल्कू ने कहा कि इजरायल में निर्माण श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने की प्रक्रिया का ध्यान भारत के केंद्रीय कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय और जनसंख्या, आव्रजन और सीमा प्राधिकरण (पीआईबीए), इजराइल के तहत काम करने वाली एजेंसी एनएसडीसी इंटरनेशनल द्वारा किया जा रहा है। इजरायल-हमास संघर्ष के बाद, इजरायल का निर्माण उद्योग रिक्त पदों को भरने के लिए भारत और अन्य देशों से श्रमिकों की तलाश कर रहा है। पीआईबीए द्वारा चयनित श्रमिकों में से आगरा, कानपुर और लखनऊ के 629 श्रमिकों के कौशल का परीक्षण मंगलवार को किया गया। इसके बाद 24 जनवरी को आजमगढ़ और बांदा मंडल के 585 श्रमिकों किया गया। 25 जनवरी को बरेली, झांसी, नोएडा, मुरादाबाद और देवीपाटन मंडल के 563 श्रमिकों, 27 जनवरी को वाराणसी, मिर्जापुर, मेरठ और गाजियाबाद के 656 श्रमिकों, गोरखपुर मंडल के 877 श्रमिकों, 29 जनवरी को अयोध्या और सहारनपुर मंडल के 739 श्रमिकों और 30 जनवरी को अलीगढ़, बस्ती और प्रयागराज मंडल के 603 श्रमिकों का परीक्षण किया जाएगा।

## गणतंत्र दिवस से पूर्व महराजगंज जिले में सुरक्षा एजेंसियां हाई अलर्ट पर

प्रात: किरण, संवाददाता

महराजगंज (उप्र)। गणतंत्र दिवस समारोह से पहले नेपाल से सटे उत्तर प्रदेश के महराजगंज जिले में सुरक्षा एजेंसियों को हाई अलर्ट पर रखा गया है। सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के उप महानिरीक्षक (डीआईजी) अखिलेश्वसर सिंह ने बुधवार को बताया कि आगामी 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के अवसर पर क्षेत्र में असामाजिक तत्वों की आवाजाही को रोकने के लिए सुरक्षा एजेंसियों को लोगों को सीमा पार करने की अनुमति देने से पहले उनकी पहचान सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है।

उन्होंसने बताया कि भारत-नेपाल सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने और राष्ट्र विरोधी तत्वों की घुसपैठ को रोकने के लिये एसएसबी ने नेपाल की ओर जाने वाले हर मार्ग पर क्लोज सर्किट और ड्रोन कैमरे लगाए हैं। ये कैमरे मुख्य सड़कों के अलावा एसएसबी चौकियों पर भी लगाए गए हैं। सिंह ने बताया कि भारत-नेपाल सीमा पर सोनौली और ठूठीबाड़ी चौकी पर मेटल डिटेक्टर लगाए गए हैं। सीमा पार से तस्करी को रोकने के लिए नशीले पदार्थों और हथियारों का पता लगाने में प्रशिक्षित डॉग स्क्वॉड को तैनात किया गया है। इन कुत्तों को हथियारों और नशीले पदार्थों का पता लगाने के लिये विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। उन्होंने कहा कि डॉग स्क्वायड की तैनाती के बाद सीमावर्ती क्षेत्र में संदिग्ध लोगों की जांच करने में मदद मिलेगी। सिंह ने कहा कि नेपाली सुरक्षा एजेंसियों की भी मदद ली जा रही है ताकि कोई भी राष्ट्रविरोधी तत्व भारतीय सीमा में घुसपैठ न कर सके।

इस बीच, आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि सुरक्षा एजेंसियां हाई अलर्ट पर हैं और महराजगंज में नेपाल सीमा पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) और पुलिस सरहद से सटे भीड़भाड़ वाले इलाकों और ढाबों पर संदिग्ध लोगों की जांच कर रही है। इसके साथ ही सोनौली स्थित भारत-नेपाल सीमा से गुजरने वाले लोगों और वाहनों पर कड़ी नजर रखी जा रही है। उत्तर प्रदेश का महराजगंज जिला नेपाल के साथ 84 किलोमीटर लंबी खुली सीमा साझा करता है।

## ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के वजूखाना के सर्वेक्षण से इनकार के खिलाफ याचिका पर सुनवाई टली

प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति मनीष कुमार निगम ने वाराणसी में ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के वजूखाना के सर्वेक्षण से इनकार संबंधी वाराणसी की अदालत के आदेश के खिलाफ याचिका पर सुनवाई से बुधवार को खुद को अलग कर लिया। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि यह मामला सुनवाई के लिए अन्य न्यायाधीश को नामित करने के लिए मुख्य न्यायाधीश की अदालत में भेजा जाएगा। अदालत ने आगे की कार्रवाई के लिए 31 जनवरी की तारीख तय की है।

यह पुनरीक्षण याचिका राखी सिंह द्वारा दायर की गई है जो श्रृंगार गौरी पूजा वाद में वादकारियों में से एक हैं।

वाराणसी की अदालत ने 21 अक्टूबर, 2023 को दिए आदेश में राखी सिंह की यह दलील खारिज कर दी थी कि कथित शिवलिंग को छोड़कर वजूखाना का सर्वेक्षण प्रश्नगत संपत्ति का धार्मिक चरित्र निर्धारित करने के लिए आवश्यक है।

हालांकि, राखी सिंह का आवेदन खारिज करते हुए जिला न्यायाधीश ने अपने आदेश में कहा था कि उच्चतम न्यायालय ने 17 मई, 2022 के अपने आदेश में उस क्षेत्र को संरक्षित करने का आदेश दिया था जहां कथित तौर पर शिवलिंग पाया गया। जिला न्यायाधीश के आदेश के अनुसार, इसलिए एएसआई को उस क्षेत्र का सर्वेक्षण करने का निर्देश देना उचित नहीं है क्योंकि इससे उच्चतम न्यायालय के आदेश का उल्लंघन होगा।

## हजरत अली के जन्म उत्सव पर तीन दिवसीय मुशायरे का कार्यक्रम

प्रात: किरण, संवाददाता

अमरोहा।हजरत अली के जन्म दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के सिलसिले का शुभारम्भ मनकबती मुशायरे से गत रात्रि मेराज मंजिल में डा अफसर परवेज की अध्यक्षता में हुआ, जहां उपस्थित शायरो ने हजरत अली की शान में कलाम पेश किया।मौलाना डा अहसन अख्तर सरोश ने हजरत अली की ज़िंदगी पर रोशनी डालते हुए कहा की हजरत अली ने मानवता के लिए कार्य करने का संदेश दिया है हमे समाज के लिए कार्य करके उनके संदेश को अपनी ज़िंदगी में अमल में लाना चाहिए।हाफि ज शमीम अमरोही ने तिलावत, कारी मिर्जा अनस ने नात पेश की, शेबान कादरी ने संचालन किया, इस दौरान नौशा अमरोही, सरफराज इब्ने गमगीन, हिमायु हैदर नकवी, डा लाडले रहबर, शाहनवाज तकी,वाहिद अमरोहवी, शाहाब अनवर, कायम अमरोहवी, अनीस अमरोहवी, नाज़िश मुस्तफा, ज़िया काजमी, डा शाही अमरोहवी, डा नासिर अमरोहवी, डा जैद बिन अली, अशरफ फराज, ताजदार अमरोहवी, शानदार मुज्तबा, असकरी अमरोहवी, नाजिम हुसैन आरिफ आदि ने कलाम पेश किया, आयोजक की ओर से तंजीम जैदी और शाने हैदर नकवी ने आभार प्रकट किया, तेज सर्दी के बाद भी बड़ी संख्या में शहर के गणमान्य लोग महफिल ए मुशायरा में उपस्थित थे, इस सिलसिले में गत रात्रि महफि ल कव्वाली में हजरत अली की शान में सूफियाना कलाम पेश किया गया।84 किलोमीटर लंबी खुली सीमा साझा करता है।

## गर्भगृह में पहुंचा वानर, मानो हनुमान जी दर्शन को आए

प्रात: किरण, संवाददाता

अयोध्या में राम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठाम समारोह के बाद मंगलवार को एक वानर गर्भगृह में प्रवेश कर उत्सव मूर्ति तक पहुंच गया । दर्शनार्थियों के बीच यह वानर कौतुहल का विषय बना रहा। मंदिर की सुरक्षा में तैनात सुरक्षाकर्मियों ने इस संबंध में अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्हें ऐसा लगा कि मानो हनुमान जी रामलला के दर्शन को आए हैं। श्री राम जन्माभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्टक द्वारा मंगलवार रात सोशल मीडिया मंच एक्सय पर ह्यश्री राम जन्म भूमि मंदिर में हुई इस कौतुहलपूर्ण घटना का वर्णन किया गया। ट्रस्टा द्वारा किये गये पोस्टक में कहा गया, ह्वआज सायंकाल लगभग 5:50 बजे एक बंदर दक्षिणी द्वार से गूढ़ मंडप से होते हुए गर्भगृह में प्रवेश करके उत्सव मूर्ति के पास तक जा पहुंचा। बाहर तैनात सुरक्षाकर्मियों ने वानर को वहां पहुंचते हुए देखा। पोस्ट में आगे कहा गया,ह्वह्व सुरक्षाकर्मी बंदर की ओर यह सोच कर भागे कि कहीं वह उत्सव मूर्ति को जमीन पर न गिरा दे। परन्तु जैसे ही पुलिसकर्मी बंदर की ओर दौड़े, वैसे ही बंदर शांतभाव से उत्तरी द्वार की ओर चला गया। द्वार बंद होने के कारण वह पूर्व दिशा की ओर बढ़ा और दर्शनार्थियों के बीच में से होता हुआ बिना किसी को कष्ट पहुंचाए पूर्वी द्वार से बाहर निकल गया। इस पोस्टो में आगे कहा गया, सुरक्षाकर्मी कहते हैं कि ये हमारे लिए ऐसा ही है, मानो स्वयं हनुमान जी रामलला के दर्शन करने आये हों। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में अयोध्या में गत 22 जनवरी को रामलला के बाल रूप के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठाग की गयी थी। उसके बाद मंगलवार से मंदिर को आम लोगों के दर्शनार्थ खोल दिया गया है, जहां दर्शन करने के लिये भक्तोंग का लगातार तांता लगा हुए है।

## अयोध्या में भीड़ के प्रबंधन के लिये मुख्यमंत्री ने दिये अंतरराज्यीय/अंतर्जनपदीय समन्वय के निर्देश

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या में रामलला के दर्शनार्थियों की भारी भीड़ को देखते हुए परिवहन विभाग, नगर विकास और पुलिस विभाग के बीच तालमेल तथा अंतरराज्यीय/अंतर्जनपदीय संवाद और समन्वय बनाये रखने के निर्देश देते हुए अयोध्या के लिए अतिरिक्त बसों का संचालन अभी स्थगित रखने की हिदायत दी है। राज्य सरकार के एक प्रवक्ता ने बताया कि मुख्यमंत्री ने मंगलवार को अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि ट्रस्ट के पदाधिकारियों एवं स्थानीय प्रशासन के साथ परिस्थितियों का जायजा लेने के बाद बुधवार को अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने बड़ी संख्या में उमड़े श्रद्धालुओं के लिए दर्शन एवं अन्य सुविधाओं की व्यवस्था की समीक्षा करते हुए हर श्रद्धालु के सहज, सुगम एवं संतोषपूर्ण दर्शन के लिए सभी आवश्यक प्रबंध करने के निर्देश दिए हैं। आदित्यनाथ ने कहा कि मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव, परिवहन विभाग के प्रमुख सचिव और नगर विकास विभाग के प्रमुख सचिव बेहतर समन्वय से श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा के लिए जरूरी इंतजाम सुनिश्चित कराएं। उन्होंने कहा कि साथ ही अयोध्या की सीमा से सटे जिलों के साथ अयोध्या प्रशासन अंतरराज्यीय संवाद और सम्पर्क बनाये रखें। मुख्यमंत्री का कहना था कि किस दिशा से कितने श्रद्धालुओं का आगमन हो रहा है, इसका आकलन करते हुए उसके अनुसार जरूरी प्रबंध किए जाएं। उन्होंने कहा कि मौजूदा स्थिति को देखते हुए यह बेहतर होगा कि अति विशिष्ट और अन्य गणमान्य लोग अयोध्या आने का कार्यक्रम बनाने से एक सप्ताह पहले स्थानीय प्रशासन या श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास अथवा राज्य सरकार को सूचित कर दें। मुख्यमंत्री ने कहा कि दर्शन-पूजन कर चुके श्रद्धालुओं को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए परिवहन निगम की बसों की व्यवस्था हो तथा विभिन्न नगरों से अयोध्या आने के लिए अतिरिक्त बसों का संचालन अभी स्थगित रखा जाए। उनका कहना था कि दर्शन के बाद जिस मार्ग के श्रद्धालुओं की संख्या ज्यादा हो उस ओर बसें लगाकर श्रद्धालुओं को गंतव्य तक पहुंचाने की व्यवस्था की जाए।

# देश का ग्रोथ इंजन है यूपी, पीएम मोदी का विजन हो रहा साकार : सीएम योगी

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ। सीएम योगी आदित्यनाथ ने अब से कुछ देर पहले शहीद पथ स्थित अवध शिल्पग्राम में उत्तर प्रदेश दिवस कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह और वित्त मंत्री सुरेश खन्ना के साथ उन्होंने यहाँ लगे वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट के स्टालों का भी अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लगातार काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि देश का ग्रोथ इंजन बनने की दिशा में यूपी लगातार अग्रसर है। सीएम योगी ने कहा कि 24 जनवरी 1950 को संविधान के नोटिफिकेशन के बाद उत्तर प्रदेश राज्य का गठन हुआ। जिसे पहले आगरा और अवध प्रोविंस के रूप में अंग्रेजों ने मान्यता दी थी। सीएम योगी ने कहा कि हमारे यूपी पर पहले एक प्रश्नचिन्ह लगा था, इसे एक बीमारू राज्य समझा जाता था। लेकिन साल 2017 के बाद से पीएम मोदी के नेतृत्व में हमने तेजी से काम किया। आज उत्तर प्रदेश के ओडीओपी उत्पाद हमारी ब्रांडिंग और मार्केटिंग की वजह से पूरी दुनिया में पहचान बना चुके हैं। इस मौके पर सीएम योगी ने ओडीओपी प्रोडक्ट की ई-मार्केटिंग के लिए ओडीओपी मार्ट पोर्टल भी लांच किया। कार्यक्रम में एमएसएमई मंत्री राकेश सचान, पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह, मंत्री दयाशंकर सिंह और मुख्य सचिव डीएस मिश्र भी मौजूद रहे।

सीएम योगी ने कहा कि आज हमारे प्रदेश में एमएसएमई सेक्टर में 96 लाख यूनिट काम कर रहे हैं। जो एक्स

## संक्षिप्त खबरें

### माँ बरेजी मंदिर जेठवार भट्ट में 3 दिनों तक चला आयोजन

आरा। श्री राम लला के प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर परम पूज्य श्रीमद जगदद्गुरु स्वभूराम द्वाराचार्यपीठाधिश्वर श्री राधामोहन शरण देवचार्य जी महाराज के निदेर्शानुसार माँ बरेजी मंदिर ट्रस्ट जेठवार भट्ट के द्वारा जेठवार भट्ट गाँव में स्थित माँ बरेजी मंदिर प्रांगण में दिनांक 21.01.2024 से प्रारम्भ कार्यक्रम का समापन कल दिनांक 23.01.23 को भंडारे के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम के पहले दिन ग्राम वासियों द्वारा अखंड रामायण का पाठ किया गया। श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा के शुभ दिन अखंड हरिकीर्तन का आयोजन व दीपोत्सव, और तीसरे दिन भंडारे के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

### पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष को मरणोपरांत सम्मानित किया गया

आरा। रमना मैदान में श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में केंद्रीय ऊर्जा मंत्री सह आरा सांसद आरके सिंह के द्वारा राम मंदिर निर्माण हेतु संघर्ष में कार सेवा के लिए स्वर्गीय अभिमन्यु सिंह पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष सह अधिवक्ता को मरणोपरांत सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके पुत्र चंदन कुमार, अधिवक्ता पटना उच्च न्यायालय सह आईटी एवं सोशल मीडिया सह प्रभारी, विधि प्रकोष्ठ भाजपा, बिहार ने प्राप्त किया जिसके लिए श्री विन्ध्याचल राय जी एवं श्री मणिशंकर सिंह जी क्रमशः प्रदेश संयोजक तथा भोजपुर जिला संयोजक, विधि प्रकोष्ठ भाजपा, बीजेता बिजय वर्धन, डॉ0 संदीप कुमार, दीपक कुमार आदि ने शुभकामना वो बधाई दी है। इस बात की जानकारी ओंकार दत्त गौतम, मीडिया प्रभारी, विधि प्रकोष्ठ भाजपा, भोजपुर इकाई ने दी।

### किराना दुकान से चोरों ने उड़ाया लाखों का सामन

बिक्रमगंज (रोहतास) स्थानीय शहर स्थित एक किराना दुकान में विगत मंगलवार की रात चोरों ने चोरी कर लाखों का समान ले भागे। घटना के संबंध में नगर परिषद वार्ड 20 निवासी पीड़ित किराना दुकानदार संयोजिता देवी ने बताया कि वह प्रतिदिन की तरह मंगलवार को दुकान बंद कर घर चली है। लेकिन अगली सुबह जब दुकान खोलने पहुंच तो दुकान खुला हुआ था। जिसके बाद आनन फानन में दुकान के अंदर पहुंची तो अज्ञात चोरों ने दुकान से लाखों का राशन से जुड़ी विभिन्न प्रकार के समान चुरा फरार हो गए थें। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस घटनास्थल पहुंच छानबीन में जुट गई है। जबकि पीड़िता दुकानदार ने स्थानीय थाना में अज्ञात चोरों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करा दी है। जबकि एक पिंटू केसरी के किराना दुकान में भी चोरों के घटना को अंजाम देते समान चुराया है।

### अगले 5 दिनों तक अतिशीत दिवस होने का पूवार्नुमान

संझौली (रोहतास) भारत सरकार पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, मौसम विज्ञान केंद्र पटना के वैज्ञानिक कमल जी गुप्ता के अनुसार, अगले 25 जनवरी से 29 जनवरी, पांच दिनों तक अतिशीत दिवस रहने का पूवार्नुमान बताया गया। साथ ही अगले 48 घंटो में अति कोहरा छाए रहने का अनुमान बताया गया है। जबकि 24 घंटो के अंदर तापमान को कोई परिवर्तन होने का पूवार्नुमान नहीं है. मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार बुधवार को अधिकतम तापमान 18. 4 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम 8.5 डिग्री सेल्सियस रहा।

### मतदाता दिवस को लेकर बीडीओ ने की बैठक

नोखा (रोहतास) प्रखंड मुख्यालय के सभागार में बुधवार को वीडियो अतुल कुमार गुप्ता के अध्यक्षता में यह बैठक आवेदन की गई सभी बीएलओ उपस्थित थें। जो मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया।

### अधिवक्ता के निधन को लेकी आरा सिविल कोर्ट में रहा नोवर्क

आरा। आरा बार एसोसिएशन एवं जिला वह सत्र न्यायाधीश के अध्यक्षता में हुआ शोक सभा आयोजित हुवा अधिवक्ता शंभू शरण सिंह को 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित किया गया उसके बाद सभी न्यायिक पदाधिकारी एवं अधिवक्ता गण आज के दिन न्यायिक कार्यो से अलग होकर सिविल कोर्ट में नो वर्क रहा इस श्रद्धांजलि सभा में प्रमुख रूप से जिला व सत्र न्यायाधीश के अलावा सभी न्यायिक पदाधिकारी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष राकेश मिश्रा सचिव जयंत सिंह अधिवक्ता अमित कुमार गुप्ता उर्फ बंटी के अलावा सैकड़ो अधिवक्ताओं श्रद्धांजलि सभा में शामिल रहे।

# पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की जयंती दिवस जिला कांग्रेस कार्यालय में मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिला कांग्रेस पिछड़ा वर्ग विभाग द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर की जयंती दिवस के रूप में जिला अध्यक्ष मुकेश चंद्रवंशी की अध्यक्षता में भोजपुर जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय शहीद भवन आरा में मनाई गई जयंती समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि भोजपुर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अशोक राम भोजपुर जिला कांग्रेस पिछड़ा वर्ग विभाग के जिला अध्यक्ष मुकेश चंद्रवंशी ने कहा कि कपूर्री ठाकुर, जिनका जन्म 24 जनवरी 1924 को बिहार के बाबुराज, बिहार ( अब जिला पटना, बिहार) में हुआ था, एक भारतीय राजनेता थे जो बिहार राज्य के तीन बार मुख्यमंत्री रहे। उन्होंने अपनी राजनीतिक करियर की शुरूआत सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य के रूप में की और बाद में जनता दल (युनाइटेड) के सदस्य बने।

कपूर्री ठाकुर को उनके सामर्थ्यपूर्ण और लोकप्रिय शैली के लिए पहचाना जाता था। उनका सतत योजना बनाने और कृषि विकास के प्रति समर्पण उन्हें प्रशंसा के योग्य बनाता है। उनके मुख्यमंत्री कार्यकाल में, बिहार में उनकी प्रशासनिक क्षमता और समाजसेवा के प्रति आदर के लिए उन्हें सम्मान मिला। उनके कृतित्व में एक गरीबी उन्मूलन योजना की शुरूआत हुई और उन्होंने कृषि सेक्टर में सुधार के लिए भी कई कदम उठाए। कपूर्री ठाकुर ने राजनीतिक दायित्व के लिए अपनी जीवनयात्रा में बहुत कुछ किया और उनकी स्थिति बिहार राजनीति में अद्वितीय रही। उनकी यात्रा ने बिहार के राजनीतिक स्तर पर एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को साकार किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बिहार प्रदेश किसान कांग्रेस के उपाध्यक्ष प्रमोद राय अधिवक्ता एवं बिहार प्रदेश किसान कांग्रेस के सचिव विजेंद्र कुमार राय भोजपुर जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष एवं पूर्व एआईसीसी मेंबर श्रीधर तिवारी ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर सदैव समाज के कमजोर तबकों के उत्थान एवं विकास के लिए लगे रहे एवं कमजोर तबको की आवाज के रूप में पूरे भारत में अपनी पहचान बनाई आज हमें स्वर्गीय कपूरी ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा ग्रहण करके समाज के कमजोर तबको किसानों नौजवानों को विकास की मुख्य धारा में लाकर कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री राहुल गांधी जी के अगुवाई में संकल्प ग्रहण करना चाहिए समारोह में आरा नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मनोज कुमार अंजनी चितरंजन सिंह मुन्ना भोजपुर जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व महासचिव राजेंद्र ओझा भोजपुर जिला किसान कांग्रेस के अध्यक्ष गजेंद्र चौधरी मंगल माही सुरेंद्र कुमार शर्मा वीरेंद्र सिंह शमशाद आलम अरुण कुमार पांडे संतोष कुमार मोहम्मद साबिर विद्या भूषण सुदामा मिश्रा राजेश कुमार आदि थे।

## केविके बिक्रमगंज में सासाराम के 130 बच्चें फील्ड विजिट के लिए पहुंचे

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज( रोहतास)। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय सासाराम के 130 बच्चे कृषि विज्ञान केंद्र बिक्रमगंज में फील्ड विजिट कार्यक्रम के तहत भ्रमण करने आए । सभी छात्र एवं छात्राएं वर्ग 9, 10 एवं 11 कक्षाओं के थे । सभी छात्रों को वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान डॉ शोभा रानी ने कृषि विज्ञान के क्षेत्र में कैरियर बनाने हेतु उचित मार्गदर्शन दिया । संबोधन के दौरान उन्होंने केंद्र की सभी गतिविधियों के बारे में बताते हुए कहा कि रोहतास जिला धान उत्पादकता में पूरे राज्य में अव्वल है । कृषि विज्ञान केंद्र में धान एवं गेहूं के सभी प्रभेदों पर काम किया जाता है । किसानों को धान, गेहूं, चना, मसूर एवं तीसी के उन्नत बीज केंद्र द्वारा किसानों को मुहैया कराया जाता है । समेकित कृषि पालन इकाई के तहत छात्र गौपालन, बकरी पालन, मत्स्य पालन, वर्मी कंपोस्ट उत्पादन इत्यादि देख कर सीख सकते हैं । भविष्य में अगर उद्यमी बनना चाहे तो मशरूम उत्पादन, मत्स्य उत्पादन, बकरी पालन, मुर्गी पालन, विदेशी सब्जी उत्पादन, अनाज प्रसंस्करण इत्यादि के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं । सभी छात्र-छात्राओं को ढांगहाई पर क्षेत्र का भ्रमण कराया गया एवं कृषि संबंधी विभिन्न इकाइयों को के बारे में उन्हें बताया गया । डॉ आर के जलज के द्वारा मत्स्य पालन के उन्नत तकनीकि की जानकारी साझा की गई ।

## आरा सहित जिले विभिन्न जगहों पर भाकपा-माले ने मनाया कर्पूरी जन्मशताब्दी समारोह

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। जननायक स्व०कपूर्री ठाकुर के जन्मशताब्दी जयंती से गांधी शहादत दिवस 30 जनवरी तक माले द्वारा आयोजित संविधान बचाओ-लोकतंत्र बचाओ जन अभियान की शुरूआत आज से हो गई !आज आरा में भाकपा माले जिला कार्यालय सहित जिले के अगिआंव, सहार, पीरो, तरारी, चरपोखरी, गड़हनी, जगदीशपुर, कोईलवर सहित सभी प्रखण्डों के विभिन्न जगहों पर कपूर्री जयंती मनाई गई !आरा में भाकपा-माले जिला कार्यालय श्रीटोला में जन्मशताब्दी समारोह मनाया गया !इस दौरान उनके चित्र माल्यार्पण अर्पित कर उन्हें एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई !उसके बाद सभा आयोजित की गई !माल्यार्पण अर्पित करने वाले में पोलित ब्यूरो सदस्य स्वदेश भट्टाचार्य, केंद्रीय कमेटी सदस्य राजू यादव, राज्य कमेटी सदस्य क्यामुद्दीन अंसारी, सुशील पाल, अजय गांधी, राजेंद्र यादव, बब्लू गुप्ता, संतविलास राम, मिल्टन कुशवाहा, हरिनाथ राम, सुरेश पासवान, रौशन कुशवाहा, कृष्णरंजन गुप्ता, भीम पासवान, जयशंकर प्रसाद, अनुप कुमार, कमलेश कुमार आदि कई लोग शामिल थे !कार्यक्रम का संचालन भाकपा-माले नगर सचिव दिलराज प्रीतम ने किया ! कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए भाकपा-माले पोलित ब्यूरो सदस्य व वरिष्ठ नेता स्वदेश भट्टाचार्य ने कहा कि बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न देना, महान समाजवादी प्रतीक के लिए देर से ही सही, सबसे उपयुक्त घोषणा है !उत्पीड़ितों के आजीवन समर्थक और सामाजिक समानता, राजनीतिक स्वतंत्रता और व्यापक न्याय के लिए योद्धा, कपूर्रीजी न केवल उत्पीड़ितों के लिए आरक्षण की नीति के अग्रणी वास्तुकारों में से एक थे, बल्कि उन्हें वंचितों के लिए लोकतंत्र की प्रेरणा के रूप में भी याद किया जाएगा।

## राष्ट्रीय बालिका दिवस महादलित बस्ती में किताब कॉपी चॉकलेट किया गया वितरण

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। आरा रोटी बैंक के तत्वाधान में राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर स्थानीय चंदवा मुसहर टोला के आरा रोटी बैंक पाठशाला के सामुदायिक शिक्षण केंद्र में बच्चियों को स्लेट, कॉपी, किताब, बॉक्स, पेंसिल, रबर, कटर, केक, बिस्किट, चॉकलेट आदि दे कर मनाई गई।

आरा रोटी बैंक के संतोष सिंह भारद्वाज ने बतलाया आरा रोटी बैंक को लगातार चौथे वर्ष ये अवसर मिला राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने को। नेशनल गर्ल्स डे की शुरूआत 24 जनवरी 2008 को महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सर्वप्रथम की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य वंचित वर्ग की बालिकाओं को शसक्त और शिक्षित बनाना। आरा रोटी बैंक बालिकाओं के सशक्तिकरण और पुनरुत्थान के लिए प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में आरा रोटी बैंक पाठशाला की शुरूआत चंदवा टोला के झुग्गी बस्ती में पिछले वर्ष की गई जिससे बच्चियों को सशक्त समृद्ध बनने में मदद मिले।

आरा रोटी बैंक फाउंडेशन की अध्यक्ष सोनाली देवी ने कहा राष्ट्रीय बालिका दिवस बच्चो में लिंग आधारित भेदभाव को मिटाने और बच्चियों किशोरियों के प्रति सम्मान के संकल्प को दोहराने का दिन है। लिंग आधारित भेदभाव किसी भी समाज के लिए अभिशाप है एवम इसे दूर करके ही विकसित तथा स्वस्थ समाज की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है। आरा रोटी बैंक फाउंडेशन के सचिव अखौरी दीपक ने कहा बच्चियों के प्रति सम्मान और उनके अधिकारों के संकल्प दिवस के रूप में भी बनाया गया ।चंदवा टोला के बच्चो के लिए निशुल्क सामाजिक पठन पाठन केंद्र की शुरूआत पिछले वर्ष की गई है जिससे यहां के बच्चे बच्चियां भी शशक्त बने और समाज की मुख्यधारा में शामिल हो। आरा रोटी बैंक की पूरी टीम निस्वार्थ भाव से सेवा भावना के साथ जरूरतमंदों के बीच काम कर रही है।

आरा रोटी बैंक फाउंडेशन के कोषाध्यक्ष मुक्तिकांत ने बतलाया कि जब बेटियां पढ़ेंगी तभी समाज विकसित होगा। बालिका दिवस के अवसर पर बच्चियों के बीच पठन पाठन कि सामग्री और कपड़े आदि वितरित किया गया ।आरा रोटी बैंक सामाजिक समानता से वंचित वर्ग के लिए कटिबद्ध है और बच्चियों को समाज की मुख्यधारा में जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है। राष्ट्रीय बालिका दिवस समाज में लड़कियों को समर्थन, नए अवसर प्रदान करता है। यह समाज में लड़कियों के साथ होने वाली असमानता जैसे भेदभाव, शोषण के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है। आरा रोटी बैंक के द्वारा राष्ट्रीय बालिका दिवस कार्यक्रम को सफल बनाने में मुक्तिकांत, हर्षिता, सुधा, नेहा सिंह, मनीष, मोसारिब, मुशरफ आदि का योगदान अभूतपूर्व रहा ।धन्यवाद ज्ञापन मुक्तिकांत ने दिया।

## कड़ाके की ठंड में भी स्कूल खुले रहने से बच्चें परेशान

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव केके पाठक ने स्कूल खुला रखने का फरमान जारी किया था। जिसके बाद से भोजपुर जिले के सरकारी एवं सभी निजी स्कूलों को भी खुला रखने का आदेश जारी किया और ठंड के बीच सभी स्कूल खुलने लगे। ऐसे में इस कड़कड़ाती ठंड के बीच छात्रों को स्कूल पहुंचने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा परेशानी पहली कक्षा से लेकर पांचवी कक्षा के छात्रों को हो रही है। इस ठंड में स्कूल खुले होने से छात्रों के परिजन थोड़े नाराज हैं।

एक छात्र के परिजन केजी रोड के निवासी गोपाल प्रसाद के दो बेटे राजकीय आदर्श विद्यालय में पढ़ते हैं। उन्होंने बताया कि इस ठंड में अगर विद्यालय बंद हो जाता तो बच्चे बीमार होने से बच जाते। स्कूल से घर ले जाने के बाद बच्चे उल्टी कर रहे है तो किसी का पेट दर्द कर रहा है। इतनी ठंड में बच्चों को स्कूल जाने में दिक्कत हो रही है। बीच बीच में आकर एक बार अपने बच्चों देखने के लिए आते है । वहीं स्कूल में पढ़ रहे छात्रों का कहना है कि इस ठंड में भी स्कूल प्रतिदिन आते है। परेशानी बहुत होती है। लेकिन स्कूल आना पड़ता है। वहीं कुछ बालिकाओं ने कहा कि सुबह ठंड में उठकर स्कूल आने में परेशानी होती है। ठंड भी बहुत लगती है। लेकिन स्कूल आना ही है। ठंड में स्कूल को बंद कर देना चाहिए। आपको बता दे की जिले के नवादा थाना के राजकीय आदर्श मध्य विद्यालय में ठंड के चलते बच्चों की उपस्थिति मात्र 36 प्रतिशत ही रही। ऐसे ही और भी कुछ स्कूलों का हाल है ।वहीं विद्यालय के प्रधानाध्यापक सुनील पासवान ने बताया कि जिलाधिकारी के आदेश के बाद स्कूल खुला है।

ठंड बढ़ने की वजह से स्कूल में छात्रों की उपस्थिति कम हो रही है। जो भी छात्र आ रहे है उनका हमलोग ठंड से बचने के लिए ख्याल रख रहे हैं। आपको बता दे की बिहार राज्य में ठंड और कोहरा लोगों के लिए मुसीबत बना हुआ है। इस मौसम में आने वाले 4 दिनों तक कोई राहत नहीं मिल सकेगी। मौसम विभाग ने कहा है कि फिलहाल शीत लहर, कोहरा और धूप नहीं निकलने से कड़ाके की ठंड पड़ रही है। इसके अगले 4 दिनों तक ऐसे ही बने रहने की संभावना है।

बिहार में 26 जनवरी तक ठंड और कड़ाके की ठंड पड़ेगी। मौसम वैज्ञानिक शैलेंद्र कुमार पटेल ने कहा है कि जेट स्ट्रीम, उत्तर भारत के मैदानी इलाकों से गुजर रही है। ये जेट स्ट्रीम सूखी हवा है जो पश्चिम से पूरब की दिशा में पूरे ग्लोब की चक्कर लगाती है। इसके कारण आने वाले 4 दिनों तक शीत लहर और कड़ाके की ठंड बनी रहेगी। ऐसी संभावना है कि 26 जनवरी तक ठंड बनी रहेगी और कोल्ड डे की स्थिति रहेगी।

### ट्रेनिंग में शामिल पुलिस जवान की तबीयत बिगड़ने से हुई मौत

डेहरी (रोहतास) जिला क्षेत्र के डेहरी पुलिस लाइन में ट्रेनिंग ले रहे एक ट्रेनिंग जवान की अचानक तबियत बिगड़ने से मौत हो गई। मृतक का नाम शिव शंभू राय था. जो गोपालगंज जिला के निवासी थे। वह 53 वर्ष के थे, बताया जाता है कि अचानक उनकी तबीयत बिगड़ गई तथा उसके बाद लोगों ने उन्हें अस्पताल लाया।

लेकिन अस्पताल में इलाज के दौरान शिव शंभू राय की मौत हो गई। वे डेहरी पुलिस लाइन में पदस्थापित थे तथा पीटीसी का ट्रेनिंग ले रहे थे। बता दे की ट्रेनिंग पूरी करके यह असी में पदोन्नति होकर इनका स्थानांतरण पटना हो गया था लेकिन इससे पहले ही अचानक तबियत बिगड़ने से शिवशंभू राय की मौत हो गई। इस घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया है।

## राष्ट्रीय पर्व मनाने के लिए तैयारियां शुरू, तिरंगे से सजा बाजार

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज( रोहतास) :बिक्रमगंज अनुमंडल क्षेत्र अंतर्गत सभी प्रखंडों में गणतंत्र दिवस मनाने को लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं । इसके लिए बाजार में तिरंगे आ गए हैं । वहीं सरकारी कार्यालयों में साफ सफाई का काम भी शुरू हो गया है। 26 जनवरी दिन शुक्रवार को गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया जाएगा। शुक्रवार को गणतंत्र दिवस मनाने के लिए सभी ने अपने-अपने ढंग से तैयारी शुरू कर दी है। गणतंत्र दिवस समारोह में होने वाले कार्यक्रमों की रिहर्सल कराई जा रही है। बाजारों में भी गणतंत्र दिवस को लेकर तिरंगे और अन्य सामग्रियों से बाजार सज गए हैं। बाजारों में हर तरफ तिरंगे ही सजे नजर आ रहे हैं। जानकारी देते हुए शहर के सोनू फूल सजावट के संचालक मुन्ना कुमार ने बताया कि गणतंत्र दिवस को लेकर अलग-अलग साइज में राष्ट्रीय ध्वज के अलावा विभिन्न प्रकार के तिरंगे के ब्रोच, कैप, रिबन आदि आइटम की भी भरमार है । इसके साथ ही गिफ्ट आइटम में भी तिरंगा के साथ घड़ी, स्टैंड वाला तिरंगा आदि आइटम आए हुए है । तिरंगा और अन्य सामग्रियों की दुकानों पर खरीदारी शुरू हो गई है। अनुमंडल सहित अन्य जगह दुकानों पर तिरंगों की भरमार है ।

## बिहार प्रदेश भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के सह संयोजक बने आलोक अंजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। बिहार प्रदेश भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी एवं संगठन महामंत्री भिखु भाई दलसानिया के निर्देश पर भारतीय जनता पार्टी आरा के कर्मठ ऊजार्वान एवं संघर्षशील युवा नेता आलोक अंजन को व्यापार प्रकोष्ठ के प्रदेश सह संयोजक पद पर मनोनीत किया गया। भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक राजीव रंजन उर्फ राजू गुप्ता द्वारा आलोक अंजन का मनोनयन किया गया।

उन्होंने कहा की आलोक अंजन का बिहार प्रदेश भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ का सह संयोजक बनाये जाना वैश्य समाज के लिये बहुत ही गर्व की बात है, उनके सह संयोजक बनने से पार्टी को काफी मजबूती मिलेगी।

जिससे अगामी लोक सभा और विधान सभा चुनाव में पार्टी को काफी फायदा होगा। उनके माध्यम से काफी संख्या में लोग भाजपा से जुड़ेंगे। उज्जवल भविष्य के लिये बहुत-बहुत बधाई। बधाई देने वाले में आरा मेयर इन्दु देवी, भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रेम पंकज उर्फ ललन, भाजपा वाणिज्य प्रकोष्ठ बिहार के सह संयोजक पवन जयसवाल, कृष्ण कुमार अनिल सिंह, मुन्ना सोनी, विशाल गुप्ता, जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय कुमार, राजेंद्र प्रसाद चैरिटेबल ट्रस्ट आरा के अध्यक्ष राजीव रंजन, अभिजीत आनंद, आजाद श्रीवास्तव, तथा अनेकों व्यावसाइयों ने बधाईयां दी है।

### जननायक कपूर्री ठाकुर की सौवीं जयंती संयुक्त रूप से मनाई गई

आरा। उत्क्रमित मध्य विद्यालय बामपाली एवं प्राथमिक विद्यालय मिल्की अनुसूचित जाति टोला में जननायक कपूर्री ठाकुर की सौवीं जयंती संयुक्त रूप से मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉ.मनोज कुमार गुप्ता सहित सभी शिक्षकों ने जननायक कपूर्री ठाकुर जी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक कमलेश कुमार ने किया। कृष्ण मुरारी, नंदनी कुमारी, ज्योति कुमारी, मुस्कान कुमारी, रागिनी कुमारी प्रिया कुमारी, प्रत्युष कुमार, पल्लवी कुमारी, ऋतु कुमारी ने जननायक कपूर्री ठाकुर जी की जीवनी और उनके सामाजिक और राजनैतिक योगदान पर भाषण प्रस्तुत किया।

## कर्पूरी ठाकुर को 'भारत रत्न' की घोषणा होने पर भाजपा भोजपुर द्वारा मिठाई बाँटकर मनाई गई खुशियां

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री, पिछड़ा, अतिपिछड़ा, गरीब, लाचारो के मसीहा स्व.कपूर्री ठाकुर के शताब्दि जयंती के अवसर पर देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा उन्हे देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' देने की घोषणा से भारतीय जनता पार्टी मे खुशी की लहर दौड़ गई। बुधवार को भारतीय जनता पार्टी भोजपुर जिलाध्यक्ष दुर्गा राज के नेतृत्व मे स्थानीय महावीर मंदिर रमना मैदान मे पूजा कर सभी कार्यकताओ और आम लोगो के बीच मिठाईयां बाँटकर खुशी मनाई गई। एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर शुभकामनाएं दी गई। उक्त अवसर पर जिलाध्यक्ष ने कहा कि बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर पिछड़ो, अतिपिछड़ों, गरीबो, लाचारो के कल्याण के लिए जीवन भर संघर्ष करते हुए न्याय दिलाने का काम किया ।उन्होने ही पहली बार बिहार मे पिछड़ो, अतिपिछड़ों, महिलाओं और सामान्य वर्गो के लिए आरक्षण दिलाने का काम किया ।उन्होन सभी वर्गो के साथ न्याय किया, लेकिन कुछ राजनीतिक पार्टियाँ उनके नाम से राजनीति करती रही और पिछड़ो, अतिपिछड़ों, महिलाओं, गरीबो और लाचार लोगो के साथ अन्याय करती रही। वे केवल अपना उल्लू सीधा करने मे लगे रहे और कभी भी जननायक कपूर्री ठाकुर जी को सम्मान नही दिया ।देश मे पहली बार एक गरीब का बेटा, पिछड़े वर्ग से आने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने सबके साथ न्याय करते हुए सम्मान देने का काम कर रहे है। प्रधानमंत्री गरीबो के अधिकार के लड़ने वाले और गरीबो, लाचारो को न्याय दिलाने वाले को सम्मानित कर रहे है। वहीं बिहार की कुछ पार्टियाँ काँग्रेस के साथ सरकार मे रह कर भी कभी ऐसे व्यक्तित्व को सम्मान देने का काम नही किया। आज प्रधानमंत्री कपूर्री ठाकुर के शताब्दि जयंती पर देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' की घोषणा कर करोड़ो पिछड़ो, अतिपिछड़ों, महिलाओं, गरीबो और लाचार लोगो के साथ न्याय किया, जो आज हम सभी बिहारियो के गर्व की बात है ।इसके लिए प्रधानमंत्री जी को भारतीय जनता पार्टी भोजपुर द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है।

## जननायक पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की जयंती जिला अध्यक्ष अशोक राम की अध्यक्षता में मनाई गई

आरा। भोजपुर जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वाधान में बिहार के जननायक पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर जी की जयंती उनके तैलचित्र पर माल्यार्पण कर कांग्रेस कार्यालय शहिद भवन आरा में जिला अध्यक्ष अशोक राम जी की अध्यक्षता में मनाई गई तत्पश्चात उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए जिला अध्यक्ष अशोक ने कहा कि वंचित वर्गो के लिए. दिल से समाजवादी कपूर्री ठाकुर अपने छात्र जीवन के दौरान राष्ट्रवादी विचारों से गहराई से प्रभावित थे और बाद में ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन में शामिल हो गए खासकर समाज के वंचित वर्गो के लिए. दिल से समाजवादी कपूर्री ठाकुर अपने छात्र जीवन के दौरान राष्ट्रवादी विचारों से गहराई से प्रभावित थे और बाद में ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन में शामिल हो गए. उनकी राजनीतिक विचारधारा को 'लोहिया' विचारधारा द्वारा आगे आकार दिया गया, जिसने गरीब जातियों को सशक्त बनाने पर जोर दिया वे एक साधारण परिवार में जन्म लेकर राजनीति की उत्कर्ष तक पहुंचे ऐसे व्यक्ति को आज हम सब याद कर उनकी जयंती मनाने का काम कर रहे हैं।

## बिंदास बोल कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बेगुसराय ।जिले के मध्य विद्यालय कहा में द एकलव्य इन्सेंटिव द्वार बिंदास बोल कार्यक्रम आयोजित किया गया ।मुंगेर प्रमंडलीय आयुक्त उप विकास आयुक्त बेगूसराय अनुमंडल अधिकारी बलिया कार्यक्रम प्राधिकारी सर्व शिक्षा बेगूसराय फाउंडर आफ एकलव्य इनिशिएटिव के अनंतो मुखर्जी ने बिंदास बोल के बच्चों से मुखातिब होने के लिए उत्क्रमित मध्य विद्यालय कसाह में दीप प्रज्वलित कर प्रारंभ किया। बच्चों ने पहले इंग्लिश में वेलकम सांग फिर हिंदी में स्वागत गीत गाकर अपने अतिथियों का स्वागत किया प्रधानाध्यापक श्री राम नरेश भगत ने स्वागत शब्दांश में अभिनंदन अर्पित कर कार्यक्रम में चार चांद लगाने का काम किया। सभी शिक्षक शिक्षिकाओं ने पुष्पों की माला, बुके एवं शॉल से सम्मानित किया । मुंगेर प्रमंडल आयुक्त संजय सिंह ने बच्चों से मुखातिब होकर बेझिझक अंग्रेजी बोलने के लिए कहा तथा बच्चों से बात कर उन्होंने कहा कि मेरे कार्यक्षेत्र में 8 जिले हैं आज दिनकर की जन्मस्थली आकर यहाँ ऊजार्वान बच्चों से मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई ।

उप विकास आयुक्त, बेगूसराय ने कहा कि आने वाले दिनों में उत्क्रमित मध्य विद्यालय कसाह बरौनी प्रमंडल का अंग्रेजी स्पोकन का हब बन जाएगा । एकलव्य फाउंडेशन के फाउंडर आनंद देव मुखर्जी ने बच्चों के स्पोकन को सुन भाव विभोर हो बच्चों को गले लगा लिया। कन्या मध्य विद्यालय महना में बिंदास बोल' कार्यक्रम हुआ प्रमंडलीय आयुक्त संजय सिंह एवं एकलव्य यूनिवर्सिटी की श्रीमती प्रोमिता ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया कार्यक्रम का संचालन अर्जुन कुमार ने किया स्वागत गीत मनीषा कुमारी ने नोडल टीचर अर्जुन कुमार नवीन कुमार सतीश चंद्र झा ने बिंदास बोल कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की एवं मैडम का स्वागत अंग वस्त्र एवं पुष्प गुस्से किया श्रीमती ने कहा कि हम बच्चों को ऐसा बना है अपने से सीख का अन्य बच्चों को भी शिक्षित करना है और जब हम शिक्षित होंगे फिर हम अपना अपने गांव का समाज का विकास कर पाएंगे हमें सबके समान रूप में खड़ा होना है ।

## चुनाव की घड़ी में सभी राजनीतिक पार्टियां अपने अपने स्तर से अपने संगठन को मजबूत करने लगी है

प्रात : किरण संवाददाता

# बर्लिन फिल्म फेस्टिवल में होगा मनोज बाजपेयी की द फैबल का प्रीमियर

मनोज बाजपेयी बॉलीवुड के सबसे दिलचस्प और प्रशंसित अभिनेताओं में से एक हैं। अपने लंबे और सफल करियर में, अभिनेता सत्या, गैंग्स ऑफ वासेपुर और राजनीति जैसी कई फिल्मों के साथ-साथ वेब सीरीज द फैमिली मैन में भी नजर आए हैं।

अभिनेता अब अपनी आगामी राम रेड्डी द्वारा निर्देशित द फैबल फिल्म में दिखाई देंगे, जिसका प्रीमियर बर्लिन फिल्म फेस्टिवल में होगा। मनोज बाजपेयी की फिल्म द फैबल का वर्ल्ड प्रीमियर बर्लिन इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के आगामी 74वें संस्करण में एनकाउंटर कॉम्पिटिशन में होने वाला है। दिलचस्प बात यह है कि यह पिछले 30 वर्षों में बर्लिनले महोत्सव के मुख्य प्रतिस्पर्धी वर्गों में से एक में प्रीमियर होने वाली एकमात्र दूसरी भारतीय फिल्म है। ओपनिंग डे पर फिल्म का शाम का प्रीमियर होगा। यह मनोज बाजपेयी के लिए किसी बड़ी खुशी से कम नहीं है और अभिनेता भी उस दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

मनोज बाजपेयी ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा, द फैबल के कलाकारों में शामिल होना एक अच्छा अनुभव रहा है। राम रेड्डी जैसे रचनात्मक दिमाग के साथ काम करना और पहली बार किसी अंतरराष्ट्रीय प्रोडक्शन हाउस द्वारा समर्थित ए-फेस्टिवल में भाग लेना प्रेरणादायक है। बर्लिन में हमारी फिल्म की उपस्थिति भारतीय कहानी कहने की वैश्विक पहुंच और कलात्मक क्षमता का प्रतीक है।

मनोज बाजपेयी के वर्क फ्रंट की बात करें तो बीते दिनों उनकी वेब सीरीज किलर सूप ओटीटी पर रिलीज हुई। अभिषेक चौबे के निर्देशन में बनी इस सीरीज में कोंकणा सेन भी अहम किरदार में नजर आईं। इसे नेटफ्लिक्स पर देखा जा सकता है।

# कर्मा कालिंग में दमदार भूमिका में नजर आएंगी नम्रता शेठ

**अमेजन प्राइम वीडियो की सीरीज गिल्टी माइंड्स के बाद अभिनेत्री नम्रता शेठ इस बार डिज्नी प्लस हॉटस्टार की सीरीज में कर्मा कालिंग में दमदार भूमिका में नजर आएंगी। इस सीरीज में कर्मा तलवार की भूमिका निभा रही नम्रता शेठ का कहना है कि इस भूमिका को हासिल करने के लिए उन्हें कड़ी प्रतिस्पर्धा से गुजरना पड़ा। इस सीरीज में उनका किरदार अभिनेत्री रवीना टंडन के किरदार इंद्राणी चौधरी के साथ भिड़ता नजर आएगा।**

वेब सीरीज कर्मा कॉलिंग के बारे में अभिनेत्री नम्रता शेठ कहती हैं, इस सीरीज में कर्मा तलवार की भूमिका के लिए मुझे कई दौर के ऑडिशन से गुजरना पड़ा क्योंकि यह एक ऐसी भूमिका थी जिसे मैं वास्तव में करना चाहती थी। कर्मा तलवार की ऐसी भूमिका है, जिसके साथ बहुत बुरा हुआ है, जिसका वह बदला लेना चाहती है। कर्म कभी माफ नहीं करता, कभी न कभी कर्म का फल सबको भुगतना पड़ता है। मुझे इस किरदार से बहुत जुड़ाव महसूस हुआ। जब सीरीज की डायरेक्टर रुचि नारायण मुझसे मिलीं, तो उन्हें तुरंत लगा कि मैं कर्मा तलवार हो सकती हूं। वेब सीरीज गिल्टी माइंड्स 2022 अप्रैल में रिलीज हुई थी और कर्मा कॉलिंग के लिए जून जुलाई में ऑडिशन दिया और अगस्त में इस शो के लिए फाइनल हुई थी काफी लम्बा ऑडिशन प्रोसेस था। अभिनेत्री रवीना टंडन के साथ अपने काम करने के अनुभव को साझा करते हुए नम्रता सेठ कहती हैं, रवीना मैडम से हर छोटी सी छोटी चीज सीखने को मिली। उनके पास कई सालों का बड़ा अनुभव है। उनके लुक्स और अदाओं को देखना मेरे लिए बहुत ही अद्भुत अनुभव रहा है। गिल्टी माइंड्स में ज्यादातर हैंड हेल्ड (कैमरे को हाथ में लेकर शूटिंग की प्रक्रिया) शॉट थे। लेकिन इस शो में सही मार्क्स (सेट पर लाइटिंग करते समय हर कलाकार के लिए जमीन पर लाइटिंग के हिसाब से निशान लगाए जाते हैं) पर पहुंचकर अपने डायलॉग्स बोलने थे। डायलॉग का ध्यान रखती थी तो मार्क्स भूल जाती है और मार्क्स का ध्यान रखती थी तो डायलॉग्स भूल जाती थी, लेकिन रवीना मैडम ने धैर्य और पूरी सहजता से मेरा साथ दिया। सीरीज के को-एक्टर के वरुण सूद के साथ नम्रता सेठ के लिंकअप की भी खबरें खूब चर्चा में हैं। हालांकि इस बारे में वरुण सूद और नम्रता सेठ ने कभी खुलकर बात नहीं की।

# बिग बॉस 17 के आखिरी पड़ाव पर इस वजह से टूटीं मन्नारा चोपड़ा

सलमान खान का रियलिटी शो बिग बॉस 17 अब अपने आखिरी पड़ाव पर पहुंच गया है। शो को अपने टॉप छह प्रतियोगी मिल गए हैं। बिग बॉस 17 के फिनाले वीक में अंकिता लोखंडे, विक्की जैन, अरुण माशेट्टी, मुनव्वर फारूकी, अभिषेक कुमार और मन्नारा चोपड़ा ने अपनी जगह बना ली है, लेकिन बिग बॉस के घर में हो रहे हंगामे थमने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। बिग बॉस 17 के आने वाले एपिसोड में मन्नारा चोपड़ा फूट-फूटकर रोती हुई दिखाई देने वाली हैं।

## विक्की जैन की दोस्ती बनी गले की फांस

पिछले दिनों बिग बॉस 17 में प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन हुआ था। उसी प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान मन्नारा से कई तीखे सवाल किए गए थे। मन्नारा के ऊपर आरोप लगाए गए थे कि उनकी वजह से विक्की जैन और अंकिता लोखंडे के बीच में लड़ाइयां होती हैं। जब उन्हें पता है कि अंकिता को उनकी और विक्की की दोस्ती से परेशानी होती है तो वे क्यों बार-बार विक्की से बात करती हैं। प्रेस के इन सवालों से मन्नारा काफी परेशान दिख रही हैं। मन्नारा को अच्छा नहीं लग रहा है कि उनका नाम विक्की जैन के साथ जोड़ा जा रहा है।

## घर जाना चाहती हैं मन्नारा

शो की शुरुआत में मन्नारा का नाम शो के दूसरे प्रतियोगी मुनव्वर फारूकी के साथ जोड़ा गया था। मनारा अपनी और मुनव्वर की दोस्ती को लेकर पहले से ही परेशान चल रही थीं। अब शो के आने वाले एपिसोड में मन्नारा अरुण माशेट्टी बातें करते हुई दिखाई दे रही हैं। वे अरुण से कहती हैं, मुझे घर जाना है। मुझे नहीं पता था कि विक्की जैन से बात करने पर इतना सब हो जाएगा। अरे तुमने मुझे इतना असहज कर दिया कि अब मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है। मैं अलग बैठी हूं, तब ठीक नहीं है और मैं साथ बैठी, तब भी ठीक नहीं है। मुझे बहुत अकेलापन महसूस हो रहा है।

# इमरजेंसी मेरा सबसे महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट है

कंगना रणौत इस वक्त अपनी आगामी फिल्म इमरजेंसी को लेकर चर्चा में हैं। आज उन्होंने इसकी रिलीज डेट से पर्दा उठाया है। इस फिल्म में कंगना पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के किरदार में नजर आएंगी। यह फिल्म देश में लगे आपातकाल पर आधारित है। आज फिल्म का टीजर भी जारी किया गया है। इस बीच कंगना ने इस फिल्म को लेकर बात करते हुए इसे अपना सबसे महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट बताया है।

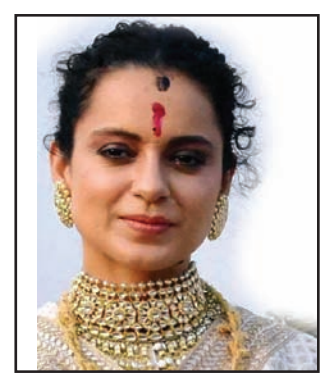

## फिल्म को लेकर कही ये बात

कंगना रणौत का कहना है, इमरजेंसी फिल्म मेरा सबसे महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट है। मणिकर्णिका के बाद ये दूसरी फिल्म है, जिसका निर्देशन मैंने किया है। इस मेगा बजट और शानदार फिल्म के लिए शानदार भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभाओं ने साथ मिलकर काम किया है। इस फिल्म में कंगना के अलावा अनुपम खेर, महिमा चौधरी, मिलिंद सोमन, श्रेयस तलपड़े जैसे सितारे भी नजर आएंगे।

# श्रीराम राघवन की फिल्म में काम करना चाहते थे सनी देओल

निर्देशक श्रीराम राघवन की हाल ही रिलीज हुई फिल्म मेरी क्रिसमस को समीक्षकों की काफी ज्यादा सरहाना मिली है। उन्हें बदलापुर, अंधाधुन जैसी फिल्मों के लिए जाना जाता है। निर्देशक ने हाल ही में एक बड़े सितारे को लेकर खुलासा किया है कि अभिनेता उनके साथ काम करने के इच्छा जता चुके हैं। एक बातचीत में श्रीराम राघवन ने अभिनेताओं को ध्यान में रखते हुए भूमिकाएं लिखने की प्रक्रिया पर चर्चा की। उन्होंने सनी देओल का नाम लेते हुए खुलासा किया कि जब भी उन्होंने किसी एक्टर को सोचकर कोई स्क्रिप्ट लिखी है तो वे सफल नहीं हुए हैं। उन्होने कहा कि यह दृष्टिकोण उनके लिए हमेशा सफल नहीं रहा है। इसलिए, अब वे लिखना शुरू करते हैं तो आधे-अधूरे ढंग से सोचते हैं कि वे किसे कास्ट कर सकते हैं। राघवन ने बताया कि कई साल पहले, रमन राघव, ए सिटी, ए किलर (1991) को देखने के बाद सनी देओल ने कहा था कि मेरे साथ एक फिल्म करो। तब वे अपने करियर के शिखर पर थे। निर्देशक ने बताया कि वे स्वयं लिखते रहे और विचारों को खारिज करते रहे। उन्होंने कहा कि वे उनके साथ फिल्म करना चाहेंगे। साथ ही, निर्देशक ने यह भी बताया कि उनकी सूची में अन्य सितारे भी हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो सनी देओल की फिल्म गदर 2 बॉक्स ऑफिस पर ऑलटाइम ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी। फिल्म ने टिकट खिड़की पर 500 करोड़ से अधिक का कलेक्शन किया था। सनी जल्द ही आमिर खान की प्रोडक्शन में बनने जा रही फिल्म लाहौर 1947 में नजर आने वाले हैं।

# सामने आया सुष्मिता सेन की आर्या 3- अंतिम वार का ट्रेलर, शेरनी बनी नजर आईं अभिनेत्री

सुष्मिता सेन की चर्चित वेब सीरीज आर्या का अंतिम सीजन रिलीज के लिए तैयार है। आज आर्या 3ः अंतिम वार का ट्रेलर जारी हो गया है। इसमें सुष्मिता सेन शेरनी जैसे तेवर दिखाती नजर आई हैं। ये सीरीज डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर फरवरी में रिलीज होगी। तीसरा सीजन काफी धमाकेदार होने वाला है। इसमें दर्शकों को भरपूर एक्शन देखने को मिलेगा। ट्रेलर की शुरुआत में आर्या कहती नजर आती है, मेरी कहानी का हर पन्ना खून से लिखा था, पर सोचा नहीं था कि उसका अंत मेरे ही खून से होगा। अपने बच्चों के प्रोटक्शन के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूं। इसलिए मुझे ट्रांसपोर्ट और सप्लाई, दोनों में आगे बढ़ना है। इसके बाद नसीहत मिलता है, सप्लायर बनने के सपने छोड़ दो आर्या, क्योंकि हमने अभी शिकार करना छोड़ा नहीं। शेरनी और भेड़िए की लड़ाई में जीत हमेशा शिकारी की होती है। बच्चों की नफरत सहती है, ऐसे कई डायलॉग ट्रेलर में सुनने को मिले हैं। बता दें कि इस सुपरहिट सीरीज निर्माताओं ने हाल ही में आर्या 3ः अंतिम वार का एलान किया था और अब इसका ट्रेलर जारी हो चुका है। सामने आए ट्रेलर में सुष्मिता जबरदस्त एक्शन करती नजर आ रही हैं। आर्या 3 अंतिम वार का प्रीमियर 9 फरवरी को डिज्नी+ हॉस्टार पर होगा। सुष्मिता आखिरी बार पंजे निकालने आ रही हैं। इस सीरीज में वे टूटती नजर आती हैं। उनके बच्चे उनसे सवाल करते हैं। तीखी बातें बोलते हैं, लेकिन वे मजबूती से डटकर हर विपरीत परिस्थिति का सामना करती नजर आ रही हैं।

# पीकू के बाद फाइटर के लिए साथ आए दीपिका-अक्षय ओबेरॉय

अक्षय ओबेरॉय पीकू की रिलीज के सात साल बाद दीपिका पादुकोण के साथ फिल्म फाइटर में नजर आने वाले हैं। अभिनेता ने बिग बजट की फिल्म को लेकर अपना उत्साह साझा किया है। साथ ही अभिनेत्री की तारीफों के पुल बांधे हैं। सिद्धार्थ आनंद के निर्देशन में बनी फिल्म फाइटर 25 जनवरी को सिनेमाघरों में दस्तक दे रही है। दीपिका पादुकोण और ऋतिक रोशन अभिनीत फाइटर पहली भारतीय एरियल एक्शन फिल्म है। फाइटर को लेकर कयास लगाया जा रहा है कि यह साल की पहली बंपर ओपनिंग वाली फिल्म होगी। मूवी में कई और बेहतरीन कलाकार भी शामिल हैं। इन सितारों में एक नाम अक्षय ओबेरॉय का है, जो दीपिका के साथ फिल्म पीकू में स्क्रीन स्पेस साझा कर चुके हैं। सात साल बाद अक्षय, दीपिका के साथ वापस से सहयोग कर रहे हैं। इसी कड़ी में अभिनेता ने ए लिस्टर हसीना संग काम करने का अपना अनुभव साझा किया है।

## अक्षय ने बांधे दीपिका की तारीफों के पुल

अक्षय ओबेरॉय ने दीपिका पादुकोण के साथ काम करने के अनुभव को साझा करते हुए कहा, दीपिका पादुकोण के साथ काम करना हमेशा खुशी की बात होती है। वह उन सबसे बेहतरीन कलाकारों में से एक हैं, जिनके साथ मुझे सहयोग करने का मौका मिला है। पीकू से लेकर अब फाइटर तक, कुछ भी नहीं बदला है। काम के प्रति दीपिका की प्रतिबद्धता पर गौर फरमाते हुए अक्षय ने जोड़ा, वह सेट पर जो कला और सहयोगात्मक भावना लाती हैं, वह वास्तव में सराहनीय है।

फाइटर का हिस्सा बन उत्साहित अक्षय ओबेरॉय फाइटर की बात करें तो यह एयरफोर्स पायलटों के किरदार में कई शानदार अभिनेताओं को साथ लाता है। अक्षय ओबेरॉय ने परियोजना के बारे में उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, फाइटर का हिस्सा बनना एक अविश्वसनीय यात्रा रही है। ऋतिक रोशन, अनिल कपूर, करण सिंह ग्रोवर और निश्चित रूप से दीपिका पादुकोण सहित ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों के साथ काम करना मेरे लिए शानदार रहा है। सिद्धार्थ आनंद ने एक आकर्षक कहानी तैयार की है, और मेरा मानना है कि यह दर्शकों को पसंद आएगी।

## फाइटर की रिलीज, फैंस का उत्साह

ऋतिक रोशन के साथ फिल्म वॉर और बैंग-बैंग में सहयोग कर चुके सिद्धार्थ आनंद ने फाइटर का भी निर्देशन किया है। इस तरह फाइटर के साथ सिद्धार्थ और ऋतिक रोशन तीसरी बार साथ आए हैं। यह फिल्म एयरफोर्स पायलटों की एक मनोरंजक कहानी है, और एक रोमांचक सिनेमाई अनुभव का वादा करती है। मूवी 25 जनवरी को बड़े पर्दे पर दस्तक देने वाली है। फिल्म की रिलीज जैसे-जैसे नजदीक आ रही है, फैंस एक बार फिर अक्षय ओबेरॉय और दीपिका पादुकोण के बीच ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री देखने के लिए उत्सुक हैं।

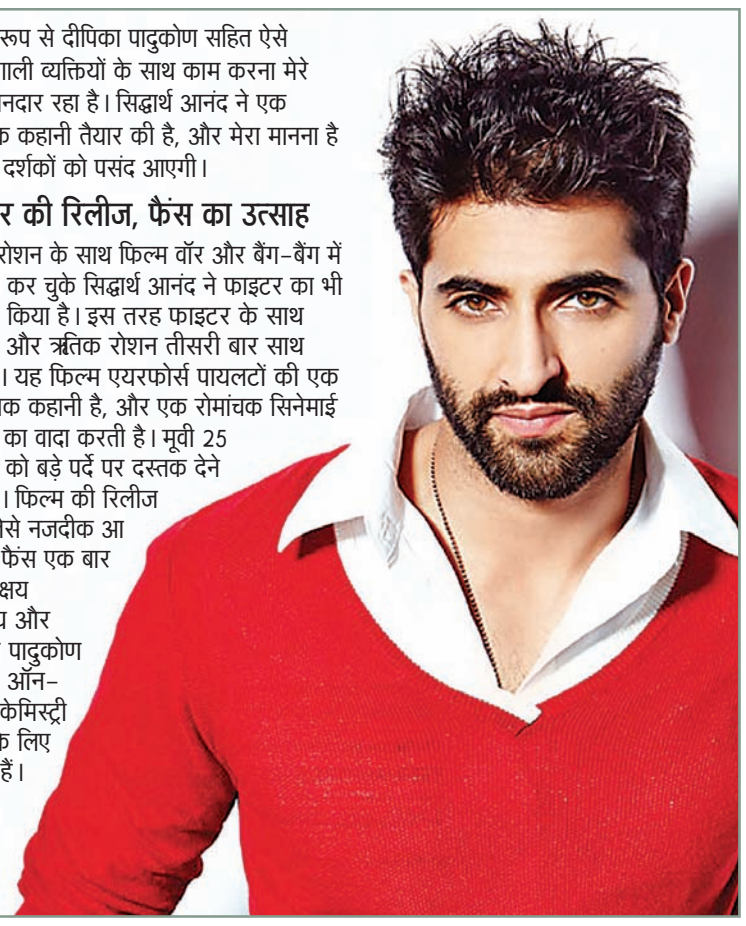

## संक्षिप्त समाचार

### रमीसर्किल ने किया 'बेफिकर' गेमिंग का वादा

**नई दिल्ली।** यूजर सेफ्टी और रेस्पॉन्सिबल गेमिंग के माहौल को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता के तहत भारत के सर्वाधिक यूजर-सेंट्रिक, साइंटिफिक एवं इनोवेटिव स्किल गेमिंग प्लेटफॉर्म गेम्स24×7 ने अपने प्रोडक्ट प्लेटफॉर्म रमीसर्किल पर %खेलो बेफिकर, जीतो रमीसर्किल पर%कैंपेन लॉन्च किया है।ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर के लिहाज से 2023 उल्लेखनीय वर्ष रहा है। घरेलू गेमिंग प्लेटफॉर्म्स की वैधता को लेकर ज्यादा स्पष्टता आई है। इससे विकास को लेकर उनकी संभावनाएं साकार हुई हैं और भारत की डिजिटल इकोनॉमी में वैल्यू क्रिएट हुई है। साथ ही इस टेक्नोलॉजी संचालित इंटरटेनमेंट फॉर्मेट में इनोवेशन को गति देने का रोडमैप भी तैयार हो रहा है। ऐसे समय में उपभोक्ताओं के लिए ऑथेंटिक स्किल गेमिंग प्लेटफॉर्म से जुड़ने के लाभों को समझना, गलतफहमियों को दूर करना और जागरूकता लाना भी महत्वपूर्ण है, जिससे वे सही जानकारी के साथ निर्णय ले सकें।%खेलो बेफिकर, जीतो रमीसर्किल पर% कैंपेन का लक्ष्य खिलाड़ियों को वैध गेमिंग प्लेटफॉर्म से जुड़ने के लाभ के बारे में बताना और आमतौर पर पूछे जाने वाले सवालों से जुड़ी उनकी चिंताओं को दूर करना है।

### एचडीएफसी बैंक की 2 करोड़ क्रेडिट कार्ड के साथ ऐतिहासिक उपलब्धि

**मुंबई,**=भारत के सबसे बड़े निजी क्षेत्र के बैंक, एचडीएफसी बैंक ने घोषणा की है कि उसने 2 करोड़ क्रेडिट कार्ड इन फोर्स (सीआईएफ) का ऐतिहासिक मील का पत्थर हासिल कर लिया है। इसके साथ, बैंक देश का पहला और वर्तमान में एकमात्र बैंक बन गया है। जिसने यह उपलब्धि हासिल की है। एचडीएफसी बैंक ने 2001 में अपना पहला क्रेडिट कार्ड लॉन्च करके क्रेडिट कार्ड व्यवसाय शुरू किया था । बैंक 2017 में 1 करोड़ सीआईएफ के मील के पत्थर तक पहुंच गया, यह यात्रा लगभग 16 वर्षों तक चली। एचडीएफसी बैंक ने ठीक 6 साल और 1 महीने में इस सीआईएफ संख्या को दोगुना कर 2 करोड़ कर दिया।श्री पराग राव, ग्रुप हेड ङ्क पेमेंट्स, कंस्यूमर फाइनेंस, मार्केटिंग, लायबिलिटी प्रोडक्ट ग्रुप, टीपीपी, एबीसीपी, नॉन -रेजिडेंट प्रोडक्ट्स , गिब एंड गिग बैंकिंग - एचडीएफसी बैंक ने कहा, ÷जैसा कि हमने 2 करोड़ क्रेडिट कार्ड जारी करने का यह उल्लेखनीय मील का पत्थर हासिल किया है। उसके लिये हम अपने मूल्यवान ग्राहकों के प्रति उनके विश्वास और वफादारी के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

# रियलमी ने पिछले पांच साल के दौरान भारत में 10 करोड़ स्मार्टफोन बेचे

**बीजिंग (एजेंसी)।** चीन की स्मार्टफोन बनाने वाली कंपनी रियलमी ने अपनी स्थापना के केवल पांच साल के अंदर 2023 में भारत में 10 करोड़ स्मार्टफोन बेचने का आंकड़ा पार कर लिया है। कंपनी के उपाध्यक्ष चेस शू ने कहा कि ब्रांड इस साल अपनी बिक्री को और बढ़ाने के लिए कामकाज, फोटोग्राफी और डिजायन को उत्कृष्ट बनाने पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा। यह स्मार्टफोन की अपनी तीन श्रृंखलाओं के साथ विविध बाजार खंड में है।

सी श्रृंखला किफायती मूल्य पर गुणवत्ता, डिजाइन और प्रौद्योगिकी पर केंद्रित है, संख्या श्रृंखला उन्नत फोटोग्राफी विकल्पों के साथ मध्य-श्रेणी खंड को लक्षित करती है और जीटी श्रृंखला अधिक उन्नत तकनीक पर ध्यान देने के साथ अत्याधुनिक खंड में स्थित है।

चेस ने यहां बातचीत के दौरान कहा कि उत्पाद सुधार के अलावा कंपनी ब्रांडिंग बेहतर करने पर भी ध्यान देगी। इसका लक्ष्य विशेष रूप से युवा

उपभोक्ताओं की जरूरतों और प्राथमिकताओं को पूरा करने वाला एक तकनीकी ब्रांड बनना है। उत्पाद नवाचार और ब्रांडिंग उन्नयन की यह दोहरी रणनीति कंपनी को भारतीय बाजार में प्रासंगिक बने रहने में मदद करेगी। चेस ने 2024 की रणनीति पर कहा कि रियलमी नवाचार के लिए 30 प्रौद्योगिकी साझेदारों के साथ सहयोग करना और अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) में भारी निवेश करना चाहता है।

उन्होंने कहा, हम अनुसंधान एवं विकास में 470 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि करेंगे। यह हमारी तकनीकी क्षमताओं के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह भारत के बाजार में मध्य-उच्च श्रेणी खंड में जाने की हमारी महत्वाकांक्षा को भी दर्शाता है।

रियलमी का मुख्यालय चीन के शेनजेन शहर में है। कंपनी ने ग्राहकों का रुख जानने और समन्वय करने के लिए पिछले साल भारत में एक अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) केंद्र खोला था।

चेस ने कहा, भारत में हमारी नजर कुछ रोमांचक भविष्य पर है, इसलिए हमने एक अनुसंधान एवं विकास केंद्र स्थापित किया है। यह केंद्र सिर्फ गैजेट और उपकरण नहीं बना रहा है बल्कि व्यापक प्रौद्योगिकी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहा है। इससे भारत में रोजगार के 13,000 अवसर पैदा हुए। यह 'मेक इन इंडिया' के समर्थन में और स्थानीयकरण को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम है।

उन्होंने कहा कि 5जी उत्पादों के लिए लोगों के बीच बढ़ती पसंद को स्वीकार करते हुए रियलमी भारत में 5जी तकनीक का लोकतंत्रीकरण करने के लिए प्रतिबद्ध है।

## अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 83.14 पर स्थिर

**नईदिल्ली (एजेंसी)।** घरेलू शेयर बाजारों में नरम रुख के बीच बुधवार को शुरुआती कारोबार में रुपया सपाट रुख के साथ खुला और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले एक पैसे बढ़कर 83.14 पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा व्यापारियों ने कहा कि विदेशी निवेशकों के बिकवाली दबाव के बीच रुपया थोड़ा नकारात्मक रुख के साथ कारोबार कर रहा है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 83.15 प्रति डॉलर पर खुला और फिर चढ़कर 83.14 प्रति डॉलर पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव के मुकाबले एक पैसे की बढ़त है। शुरुआती सौदों में रुपया 83.16 प्रति डॉलर के निचले स्तर पर भी पहुंचा था। रुपया मंगलवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 83.15 पर बंद हुआ था।

इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.14 प्रतिशत घटकर 103.46 पर रहा। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड वायदा 0.01 प्रतिशत की गिरावट के साथ 79.54 डॉलर प्रति बैरल के भाव पर था। शेयर बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने मंगलवार को शुद्ध रूप से 3,115.39 करोड़ रुपये के शेयर बेचे थे।

## एयर इंडिया पर डीजीसीए ने ठोका 1.10 करोड़ रुपये का जुर्माना, इस वजह से की कार्रवाई

**नईदिल्ली (एजेंसी)।** विमानन नियामक डीजीसीए ने एयर इंडिया पर बड़ी कार्रवाई करते हुए 1.10 करोड़ रुपये का जुर्माना ठोका है। बता दें कि यह कार्रवाई सुरक्षा नियमों के उल्लघंन को लेकर की गई है। नागर विमानन महानिदेशालय ने कुछ लंबे मार्गों पर संचालित उड़ानों के संबंध में सुरक्षा मानकों के उल्लंघन के लिए एयरलाइन एयर इंडिया पर 1.10 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। बुधवार को जारी बयान के अनुसार, नियामक ने एक एयरलाइन कर्मचारी से स्वैच्छिक सुरक्षा रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद विस्तृत जांच की। इसमें कुछ लंबी दूरी के महत्वपूर्ण मार्गों पर एयर इंडिया द्वारा संचालित उड़ानों में सुरक्षा उल्लंघन का आरोप लगाया गया था। डीजीसीए ने कहा कि चूंकि जांच में प्रथम दृष्टया एयरलाइन द्वारा गैर-अनुपालन का पता चला। इसके बाद एयर इंडिया को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। सुरक्षा रिपोर्ट एयर इंडिया द्वारा संचालित पट्टे पर दिए गए विमानों से संबंधित है।

डीजीसीए ने बयान में कहा, चूंकि पट्टे पर दिए गए विमानों का परिचालन नियामक/ओईएम प्रदर्शन सीमाओं के अनुरूप नहीं था, इसलिए डीजीसीए ने प्रवर्तन कार्रवाई करते हुए एयर इंडिया पर 1.10 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। इससे पहले नागरिक उड्डयन सुरक्षा ब्यूरो ने पिछले सप्ताह हवाई अड्डे के टरमैक पर यात्रियों के खाना खाने की घटना पर इंडिगो और मुंबई हवाई अड्डा संचालक एमआईएएल पर कुल 1.80 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया था। ब्यूरो ऑफ सिविल एविएशन सिक्योरिटी (बीसीएएस) के आदेश के मुताबिक, इंडिगो पर 1.20 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया जबकि एमआईएएल पर 60 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है।

## उतार-चढ़ाव के बीच हरे निशान में लौटा बाजार !

### बीएसई सेंसेक्स निफ्टी में बढ़त, रियल्टी शेयर गिरे

**नईदिल्ली (एजेंसी)।** निजी बैंकिंग शेयरों में कमजोरी और आईटी शेयरों में खरीदारी की दिलचस्पी के बीच भारतीय बेंचमार्क सूचकांकों ने बुधवार को इंट्रा-डे सौदों में अस्थिरता दिखाई दी और बाजार पिछले बंद भाव के मुकाबले गिरकर खुला।

एसएंडपी बीएसई सेंसेक्स 205 अंक नीचे खुलने के बाद 70,002 के निचले स्तर तक गिर गया, लेकिन जल्द ही नुकसान से उबर गया और सकारात्मक क्षेत्र में वापस आ गया।

उतार-चढ़ाव भरे कारोबार के बाद बाजार लाल रंग में खुलने के बाद दोनों बेंचमार्क सूचकांक हरे रंग में आ गए। हालांकि, कारोबार के दौरान कई बहार बाजार गिरावट में भी चला गया था।

दोपहर 2 बजे सेंसेक्स 193.70 अंक यानी 0.28 प्रतिशत चढ़कर 70,564.25 अंक और निफ्टी 87.45 अंक यानी 0.41 प्रतिशत की बढ़त लेकर 21,326.25 अंक पर कारोबार कर रहा था।

### एशियाई बाजारों का क्या हाल ?

व्यापारियों को चीन में एक और पॉजिटिव ट्रेडिंग सेशन की उम्मीद है, जबकि जापान के बाजार गिरावट के साथ खुले जिससे एशियाई शेयर बाजारों में आज मिलाजुला असर देखने को मिल सकता है।

### एक्सिस बैंक का शेयर गिरा

एक्सिस बैंक 3,.5 प्रतिशत से ज्यादा गिरकर कारोबार कर रहा है। बैंक का नेट प्रॉफिट दिसंबर तिमाही में सालाना आधार पर चार प्रतिशत बढ़कर 6,071 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। ब्याज आय 9 प्रतिशत बढ़कर 12,532 करोड़ रुपये हो गई।

इसके अलावा आईसीआईसीआई बैंक, कोटक बैंक, एशियन पेंट्स और टीसीएस गिरावट के साथ लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं। दूसरी ओर, इंफोसिस, एसबीआई, एचसीएल टेक्नोलॉजीज और टाटा स्टील में बढ़त रही।

### आज इन कंपनियों के तिमाही नतीजे

बजाज ऑटो, भारत डायनेमिक्स, ब्लू डार्ट, केनरा बैंक, सीएट, डीसीबी बैंक, डीएलएफ, एक्साइड इंडस्ट्रीज, इंडियन बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक, इंडियन ऑयल, लौरस लैब्स, पीएनबी हाउसिंग, रेलटेल, टाटा स्टील, टेक महिंद्रा, टीवीएस मोटर, यूको बैंक और उज्जीवन एसएफबी कुछ प्रमुख कंपनियां हैं जो बुधवार को दिसंबर तिमाही के नतीजों की घोषणा करने वाली

## नोवा एग्रीटेक के आईपीओ को पहले दिन 9.71 गुना सब्सक्रिप्शन मिला

**नईदिल्ली (एजेंसी)।** नोवा एग्रीटेक लिमिटेड के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम को मंगलवार को निर्गम के पहले दिन 9.71 गुना सब्सक्रिप्शन मिल गया। एनएसई के आंकड़ों के मुताबिक, आईपीओ को 2.54 करोड़ शेयरों की पेशकश के मुकाबले 24.68 करोड़ शेयरों के लिए बोलियां मिलीं।

गैर-संस्थागत निवेशकों (एनआईआई) की श्रेणी को 14.66 गुना, खुदरा व्यक्तिगत निवेशकों (आरआईआई) की श्रेणी को 12.71 गुना और पात्र संस्थागत खरीदारों (क्यूआईबी) के हिस्से को 62 प्रतिशत सब्सक्रिप्शन मिला। कंपनी ने आईपीओ के लिए मूल्य दायरा 39-41 रुपये प्रति शेयर तय किया है। आईपीओ 22 जनवरी को खुलकर 24 जनवरी को बंद होगा।

आईपीओ के तहत 112 करोड़ रुपये तक के नए शेयर जारी किए जाएंगे। इसके अलावा इसमें एक शेयरधारक नुतलापति वेंकटसुब्बाराव द्वारा 77.58 लाख इक्विटी शेयरों की बिक्री पेशकश (ओएफएस) लाई जाएगी। कंपनी को आईपीओ से 143.81 करोड़ रुपये जुटाने की उम्मीद है।

## कैंटाबिल रिटेल ने छतरपुर में अपना नया स्टोर खोलकर अपनी रिटेल मौजूदगी का किया विस्तार

**छतरपुर।** भारत के अग्रणी परिधान निर्माताओं एवं रिटेल विक्रेताओं में से एक, कैंटाबिल रिटेल इंडिया लिमिटेड ने छतरपुर में अपना रिटेल स्टोर खोलने की घोषणा की है। 667 वर्ग फुट के क्षेत्र में फैला, ब्रांड का यह स्टोर शॉप नंबर 215, अपोलो क्रॉसरोड, बस स्टैंड के पास, छतरपुर, मध्य प्रदेश में स्थित है। नया कैंटाबिल रिटेल स्टोर अपने ग्राहकों को रिटेल अनुभव के भविष्य की झलक पेश करता है, जो कि प्रतिस्पर्धी मूल्य पर अपने ग्राहकों के लिए मेंस वियर, एक्टिव वियर, फुटवियर तथा एक्सेसरीज की सम्पूर्ण रेंज पेश करता है। इस स्टोर के खुलने के साथ ही, कैंटाबिल रिटेल पूरे भारत में 516 स्टोर तक पहुंच गया है । और अपनी रिटेल उपस्थिति का विस्तार जारी रखने की योजना बना रहा है। स्टोर के उद्घाटन पर टिप्पणी करते हुए, कैंटाबिल रिटेल इंडिया लिमिटेड के निदेशक, श्री दीपक बंसल ने कहा, हमें छतरपुर में अपने पहले एक्टिव वियर रिटेल स्टोर के लॉन्च की घोषणा करते हुए बेहद खुशी महसूस हो रही है।

## सोनी और जी की डील टूटने से मुकेश अंबानी के हाथ लगा जैकपॉट !

### हो सकता है दो अरब डॉलर का फायदा

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** जी एंटरटेनमेंट और सोनी के बीच 10 अरब डॉलर की डील टूटने से मुकेश अंबानी के हाथ जैकपॉट लग सकता है। अंबानी की कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज ने डिज्नी स्टार को खरीदने की डील की है। लेकिन जी और सोनी की डील टूटने से डिज्नी स्टार को आईसीसी के मीडिया राइट्स से भारी नुकसान हो सकता है। अगर ऐसा होता है तो

अंबानी उसकी वैल्यूएशन को दो अरब डॉलर तक कम कर सकते हैं। दरअसल सोनी के साथ डील टूटने के बाद जी ने आईसीसी के साथ 1.5 अरब डॉलर की सब-लाइसेंसिग डील को पूरा करने में असमर्थता जताई है। उसका कहना है कि आईसीसी टीवी के साथ डिज्नी स्टार का कॉन्ट्रैक्ट जी और सोनी के सफल मर्जर पर निर्भर था। हालांकि डिज्नी स्टार ने जी के इस दावे पर सवाल उठाए हैं। आईसीसी राइट्स की बिडिंग में शामिल एक दिग्गज मीडिया कंपनी के अधिकारी ने कहा कि आईसीसी डील से डिज्नी स्टार को 1.5 अरब डॉलर का नुकसान हो सकता है। एक सूत्र ने बताया कि रिलायंस इंडस्ट्रीज और डिज्नी के बीच चल रही बातचीत में शामिल लोगों की सोनी-जी मर्जर पर नजर थी। इसकी वजह यह थी कि आईसीसी टीवी की डील इससे जुड़ी हुई है। इसका डिज्नी स्टार की वैल्यूएशन से सीधा संबंध है।

## विकास लाइफकेयर लिमिटेड ने दुबई स्थित "स्काई 2.0 क्लब" में स्टेक अधिकरण किया

**नई दिल्ली ।** विकास लाइफकेयर लिमिटेड ने मशहूर ÷स्काई 2.0 क्लब÷, दुबई में प्रमुख हिस्सेदारी के अधिग्रहण में अब तक का सबसे बड़ा इन्वेस्टमेंट किया है। यह अधिग्रहण विकास लाइफकेयर लिमिटेड और होल्डिंग कंपनी मेसर्स ब्लू स्काई इवेंट हॉल एफजेड-एलएलसी, दुबई के बीच स्काई 2.0 क्लब बिज़नेस में 60त्न हिस्सेदारी और संबंधित बिज़नेस सेग्मेंट में भविष्य के सभी बिज़नेस वेंचर्स के अधिग्रहण के लिए हस्ताक्षरित एक लगभग 130 मिलियन अमरीकी डालर के इंटरप्राइज वैल्यूएशन की शेयर स्वैप डील है। अधिग्रहण की प्रक्रिया इसी वित्तीय वर्ष में पूरी कर ली जायेगी. स्काय 2.0 ÷मिडल ईस्ट और एशिया में सबसे बड़ा नाइट क्लब है÷, यह एक शानदार स्टैंडअलोन, ओपन-एयर वेन्यू है जो कि ÷दुबई डिज़ाइन डिस्ट्रिक्ट÷ के केंद्र में स्थित है। स्काय 2.0 किसी भी अन्य स्थल से अलग है; एक अनुभव करने योग्य पथप्रदर्शक है जो सचमुच आसमान के नीचे यादगार शाम का वादा करता है, साथ ही वर्ल्ड-क्लास एंटरटेनमेंट, अभूतपूर्व तकनीक और अनुकरणीय सेवा की गारंटी देता है। इनोवेटिव और एक्सपेरिएंटिएल, स्काय 2.0 आयोजन स्थल में मॉडर्न टेक्नोलॉजी का उपयोग करके एक इंटरैक्टिव अनुभव प्रदान करता है। बेंडेबल स्क्रीन, भव्य प्रकाश

VIKAS LIFECARE LIMITED

डिज़ाइन, और एक जीवंत और मनोरंजक ध्वनि प्रणाली स्फीयर शेप्ड की दीवारों को कवर करती है। रहस्यमय और पूर्णता के लिए डिज़ाइन किया गया, स्काय 2.0 का वास्तुशिल्प चमत्कार दूरदर्शी नाइटलाइफ़ एक्सपर्ट और अंतर्राष्ट्रीय वास्तुकारों के एक सीमलेस फ्यूज़न से उभरता है, जिसके परिणामस्वरूप एक मास्टरपीस बनता है जो इंद्रियों को मंत्रमुग्ध कर देती है। स्काई 2.0 क्लब ने सैकड़ों स्टार-स्टडेड इवेंट्स को होस्ट किया है, जैसे किंग ऑफ इंडियन फिल्म इंडस्ट्री ÷शाहरुख खान÷, स्वदेशी रैप स्टार ÷बादशाह÷= अंतर्राष्ट्रीय रैप सेंसेशन ÷लिटिल बेबी÷; अमेरिकी रैप किंग ÷50 सेंट÷; मोरक्कन स्टार ÷फ़्रेंच मोंटाना÷ तथा और भी अनेक लोग इस फेहरिस्त में शामिल हैं। स्काय 2.0 ने 2023 के दौरान व्यवसाय से लगभग 22.10 मिलियन अमेरिकी डॉलर का ग्रॉस रेवेन्यू प्राप्त किया, जिसमें लगभग 38.80त्न नेट प्रॉफिट मार्जिन और पिछले वर्ष की तुलना में रेवेन्यू में लगभग 36त्न की ग्रोथ दर्ज की गई। ग्लोबल लेवल पर नाइट क्लब का कारोबार 8.07त्न की सीएजीआर (ष्टत्रक्र) में तेजी के साथ लगभग 31.46 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है, जबकि एक तरफ विकास लाइफकेयर लिमिटेड (वीएलएल) का घरेलू स्थान, भारत, जहां 25 साल से कम उम्र की 25त्न आबादी है, यहां भारतीय लोगों की डिस्पोजेबल इनकम में वृद्धि हो रही है, यह हद से अधिक 17.4त्न की दर से बढ़ रही हैं, और मॉडर्न कल्चरल आदर्श की ओर शिफ्ट, एक विशाल, वर्जिन और विशिष्ट बाज़ार प्रदान करता है, जो क्लबिंग व्यवसायों से उत्पन्न ग्लोबल रेवेन्यू द्वारा लगाए गए आंकड़ों में केवल एक बिंदु है। विकास लाइफकेयर लिमिटेड (वीएलएल) एक आईएसओ 9001=2015 सर्टिफाइड कंपनी है, जो प्लास्टिक, सिंथेटिक और नेचुरल रबर के लिए पॉलिमर, रबर कंपाउंड और एडिटिव्स के व्यापार और निर्माण में लगी हुई है। कंपनी परंपरागत रूप से अनेक बिज़नेस सेग्मेंट्स में लगी हुई है, जैसे पॉलिमर और रबर कमोडिटी (थोक खपत) कंपाउंड और मास्टर बैच (ईवीए, पीवीसी, पीपी, पीई आदि जैसे इंडस्ट्रीयल और पोस्ट कंज्यूमर वेस्ट मैटेरियल से अप-साइकिल कंपाउंड का निर्माण),भारत सरकार की ओर से एनवायरनमेंट प्रोटेक्शन पहल और सैकड़ों-हजारों टन प्लास्टिक प्रोडक्ट्स और पैकेजिंग मटेरियल का उपभोग करने वाले समूहों के लिए अनिवार्य ईपीआर दायित्वों को पूरा करने में मदद कर रही है।

विकास लाइफकेयर लिमिटेड (वीएलएल) ओएनजीसी (ऑयल और नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड) पेट्रो एडिशन लिमिटेड का एक डेल-क्रेडेरे एजेंट भी है, जो एक पब्लिक सेक्टर का उपक्रम है जो विभिन्न प्रकार के बेस पॉलिमर और कमोडिटी प्लास्टिक कच्चे माल का उत्पादन करता है।

## ओरा फाइन ज्वैलरी ने 45-दिवसीय 'डायमंड फेस्टिवल' की घोषणा की

**नई दिल्ली ।** एक नए साल की सुबह नएपन के एहसास और नई आशाओं के साथ आती है, और इस अवसर पर ओरा ने अपने ग्राहकों के लिए अद्वितीय नक्क़ाशी और डिज़ाइन के साथ 'डायमंड फेस्टिवल' शुरू किया है। डायमंड फेस्टिवल में ग्राहकों को मौसम के अनुकूल नए ट्रेंड्स और वाइब्रैंट कलर्स में उत्कृष्ट डायमंड ज्वैलरी ख़रीदने का अवसर मिलेगा। यह कलेक्शन हीरे के टाइमलेस आकर्षण के साथ समकालीन शैली का तालमेल प्रतिबिंबित करेगा। इस डायमंड फेस्टिवल में ओरा ग्राहकों को मौजूदा ट्रेंड्स और कलर्स में डायमंड के शानदार कलेक्शंस देखने और नए साल के उत्साह में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर रहा है। यह उत्सव नई शुरुआत और अद्वितीय

सुंदरता का है, जिसमें हर चमचमाता पार्श्व नए साल की भावना को समेटे हुए है। गर्मियों में सूर्यास्त की गर्माहट के आलिंगन से

प्रेरित ये आभूषण नारंगी रंग में सुनहरी फसल के आभास के साथ क्लासिक एमरल्ड के हरे रंग में आपके आभूषण संग्रह के लिए बिलकुल उपयुक्त हैं।

ओरा डायमंड फेस्टिवल विशेष पेशकशों के साथ एक आकर्षक अनुभव लेकर आया है। इस मोहक अनुभव की शुरुआत हमारे खूबसूरती से बनाए गए हार और झुमके सेट शोभायमान होते हुए कर रहे हैं। इसका एक मुख्य आकर्षण एक्सक्लूसिव बॉक्स सेट है, जिसकी कीमत ?149,999 के आकर्षक मूल्य से शुरू होती है। यह लक्ज़री से कोई समझौता किए बिना काफ़ी किफ़ायती मूल्य में उपलब्ध है। इस सीज़न के सबसे आवश्यक आभूषण, एक कैरेट सॉलिटेयर लुक वाले क्लासिक इयररिंग्स हैं, जो मैचिंग पेंडेंट और इयररिंग्स के साथ स्टाइल और खूबसूरती को बढ़ाते हैं। ओरा फाइन ज्वेलरी के मैनेजिंग डायरेक्टर, श्री दीपू मेहता ने कहाँ हिंम अपने ग्राहकों को बेहतरीन हीरों की दुनिया में विशिष्टता और विश्वास प्रदान करने की अपनी अटूट प्रतिबद्धता के साथ ले जाते हैं।

## रोहन बोपन्ना की ऑस्ट्रेलियन ओपन के सेमीफाइनल में एंट्री

**नई दिल्ली**-ऑस्ट्रेलिया ओपन से भारत के लिए खुशखबरी है। दरअसल, दिग्गज खिलाड़ी रोहन बोपन्ना अपने पार्टनर मैथ्यू एब्डेन के साथ टूर्नामेंट के डबल्स में सेमीफाइनल में पहुंच गए हैं। उन्होंने सीधे सेटों में जीत दर्ज की है। क्वार्टर फाइनल मुकाबले में रोहन और एब्डेन की जोड़ी ने मैक्सिमो गोंजालेज और एंड्रेस मोल्टेनी की छठी वरीयता प्राप्त अर्जेंटीना की जोड़ी को मात दी है। इस तरह रोहन बोपन्ना मेन्स डबल्स टेनिस इतिहास में वर्ल्ड नंबर 1 बनने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बन गए हैं। 43 साल की उम्र में बोपन्ना ने ऑस्ट्रेलियन ओपन 2024 के अंत तक नंबर 1 स्थान पक्का कर लिया है। वहीं बोपन्ना के सबसे सफल पार्टनर्स में से एक मैथ्यू एब्डेन का मेंस डबल्स रैंकिंग में नंबर 2 स्थान पर पहुंचना तय हो गया है। बता दें कि, मैथ्यू ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी हैं। एब्डेन ने यहां एक घंटे और 46 मिनट तक चले क्वार्टर फाइनल में छठी वरीयता प्राप्त अर्जेंटीना की मैक्सिमो गोंजालेज और आंद्रेस मोल्टेनी की जोड़ी पर 6-4, 7-6 (5) से आसान जीत दर्ज की है। सेमीफाइनल में बोपन्ना और एब्डेन का मुकाबला गैर वरीय टॉमस मचाक और झिझेन झांग से होगा। चेक गणराज्य-चीन की इस जोड़ी ने पिछले हफ्ते की शुरुआत में मेलबर्न में तीसरे वरीय और यूएस ओपन चैंपियन राजीव राम और जो सैलिसबरी को दूसरे दौर में हराया था। इसके पहले अमेरिका के राजीव राम नंबर 1 पर पहुंचने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बने थे, जब उन्होंने अक्टूबर 2022 में 38 साल में अपने करियर में पहली बार टॉप रैंकिंग हासिल की थी। बोपन्ना ने 2013 में पहली बार वर्ल्ड नंबर-3 की अपनी सर्वोच्च रैंकिंग हासिल की थी। वह लिएंडर पेस, महेश भूपति और सानिया मिर्जा के बाद डबल्स में वर्ल्ड नंबर-1 बनने वाले चौथे भारतीय खिलाड़ी हैं।

## भारत की युवा ब्रिगेड के सामने आयरलैंड की आसान चुनौती

**नई दिल्ली**-भारत की युवा ब्रिगेड आईसीसी अंडर 19 विश्व कप के दूसरे लीग मैच में गुरुवार को आयरलैंड से खेलेगी तो आने वाले कठिन मुकाबलों से पहले बल्लेबाजी का अच्छा अभ्यास करने पर उसकी नजरें होंगी। भारत ने एकतरफा रहे पहले मैच में बांग्लादेश को 84 रन से हराया। अब आयरलैंड के खिलाफ उसके पास प्रयोग का मौका है क्योंकि अगले सप्ताह से सुपर सिक्स चरण में कठिन प्रतिद्वंद्वियों का सामना करना होगा।आयरलैंड ने पहले मैच में अमेरिका को हराया लेकिन दूसरे मैच में बांग्लादेश से पराजय का सामना करना पड़ा। भारत के सामने चुनौती विरोधी टीम नहीं बल्कि अपने ही प्रदर्शन का स्तर बेहतर करने की होगी। आधुनिक दौर के क्रिकेट को ध्यान में रखकर बल्लेबाजों को अपनी शैली में सुधार करना होगा। कप्तान उदय सहारन ने पहले मैच में 64 और आदर्श सिंह ने 76 रन बनाये लेकिन उनका स्ट्राइक रेट क्रमशः 79 और 68 रहा जो आधुनिक समय में अस्वीकार्य है।

# मुझे नहीं लगता कि हम अपराजेय हैं

### इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज से पूर्व बोले रोहित शर्मा

**हैदराबाद, एजेंसी**-भारतीय टीम को उसकी धरती पर हराना भले ही दुरूह हो लेकिन कप्तान रोहित शर्मा ने बुधवार को कहा कि उनकी टीम 'अपराजेय नहीं है और इंग्लैंड को पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला मे हराने के लिए उसे लगातार अच्छा क्रिकेट खेलना होगा।

भारत और इंग्लैंड के बीच पहला टेस्ट कल 25 जनवरी से यहां शुरू हो रहा है। रोहित ने कहा कि उनका मूल फोकस टीम की रणनीति पर होगा। भारत को आखिरी बार अपनी धरती पर 2012 में एलेस्टेयर कुक की कप्तानी वाली इंग्लैंड टीम ने टेस्ट श्रृंखला में 2-1 से हराया था। उसके बाद से भारत ने लगातार 16 श्रृंखलायें जीती है जिनमें सात में 'क्लीन स्वीप किया है।

रोहित ने मैच से पूर्व प्रेस कांफ्रेंस में कहा, 'मुझे नहीं लगता कि हम अपराजेय हैं। हम ऐसा सोचना नहीं चाहते। पिछले एक दशक में जो भी रिकॉर्ड हो, वह इस बात की गारंटी नहीं है कि हम यह श्रृंखला भी जीतेंगे। हमें इसके लिए अच्छा प्रदर्शन करना होगा।

रोहित ने यह भी कहा कि केपटाउन में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे टेस्ट में मिली जीत से टीम का आत्मविश्वास बढ़ा है। उन्होंने कहा, 'केपटाउन में मिली जीत अच्छी थी लेकिन यह मैच हैदराबाद में है। हालात अलग हैं और विरोधी टीम भी। लेकिन उस जीत से आत्मविश्वास काफी बढ़ा है जो इस श्रृंखला में काम आएगा।

## पहले दो मैचों में कोहली की जगह लेगे रजत पाटीदार

**नई दिल्ली**-दाएं हाथ के बल्लेबाज रजत पाटीदार को बुधवार को इंग्लैंड के खिलाफ भारत के पहले दो टेस्ट मैचों में विराट कोहली की जगह दी गई है। पाटीदार ने 21 दिसंबर 2023 को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीसरे वनडे मैच में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया था, जहां उन्होंने मेन इन ब्लू के लिए ओपनिंग की और 16 गेंदों में 137.50 की स्ट्राइक रेट के साथ 22 रन बनाए। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के सूत्रों के हवाले से जानकारी सामने आई है।

पिछले हफ्ते पाटीदार भारत ए टीम के लिए खेले और अहमदाबाद में इंग्लैंड लायंस के खिलाफ 151 रन बनाए। दाएं हाथ का बल्लेबाज इस समय अपने फॉर्म में है जिससे मेजबान टीम को इंग्लैंड के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज में मदद मिलेगी। हालांकि 30 वर्षीय बल्लेबाज ने अभी तक भारत के लिए टेस्ट में डेब्यू नहीं किया है। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में पाटीदार ने 12 मैच खेलकर 40.4 की औसत और 144.29 की स्ट्राइक रेट से 404 रन बनाए।

सोमवार को बीसीसीआई ने घोषणा की कि भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली व्यक्तिगत कारणों से इंग्लैंड के खिलाफ पहले दो टेस्ट मैचों से हट गए हैं। बीसीसीआई ने एक आधिकारिक बयान में कहा, विराट कोहली ने निजी कारणों का हवाला देते हुए भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) से इंग्लैंड के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज के पहले दो टेस्ट से हटने का अनुरोध किया है। आगे कहा गया, बीसीसीआई मीडिया और प्रशंसकों से अनुरोध करता है कि वे इस दौरान विराट कोहली की गोपनीयता का सम्मान करें और उनके व्यक्तिगत कारणों की प्रकृति पर अटकलें लगाने से बचें। ध्यान भारतीय क्रिकेट टीम के समर्थन पर रहना चाहिए क्योंकि वे टेस्ट श्रृंखला में आगामी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

## पहले 2 दिन नहीं मिलेगी टर्न, टॉस निभाएगी मुख्य भूमिका: द्रविड़

**हैदराबाद**-भारत के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ को उम्मीद है कि इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए पिच 'अच्छी% होगी, लेकिन खेल के आगे बढ़ने के साथ ही इससे स्पिनरों के लिए ज्यादा मदद होगी। टेस्ट मैच से 2 दिन पहले पिच काफी सूखी दिख रही थी खास कर दोनों छोर के गुड लेंथ क्षेत्र के आस-पास।

द्रविड़ ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि पिच के बारे में अभी कुछ कहना मुश्किल है। जब मैच शुरू होगा हम तब इसके बारे में पता करेंगे। मैंने जो देखा है उसमें यह पिच अच्छी दिख रही है। उन्होंने कहा कि पिच से हालांकि स्पिनरों को टर्न मिलेगा। कितनी जल्दी और कितनी तेजी इस बारे में मैं अभी कुछ नहीं कह सकता हूं। खेल जैसे-जैसे आगे बढ़ेगा निश्चित रूप से गेंद को अधिक टर्न मिलेगी।

दूसरी ओर इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड ने स्वीकार किया कि उनकी टीम ने भी पिच के बारे में चर्चा की है। उन्होंने कहा कि हमने पिच पर चर्चा की है। हम इसे लेकर ज्यादा चिंतित नहीं है। हमारे समूह में इतना आत्मविश्वास है कि हम कुछ खास कर सकते हैं। हमारे पास स्पिनर है, हमारे पास तेज गेंदबाज हैं, हमारे पास अच्छे बल्लेबाज हैं और हाल के दिनों में हमारा प्रदर्शन काफी अच्छा रहा है।

उन्होंने कहा कि यह काफी मुश्किल होगा क्योंकि हम ऐसी पिचों पर खेलने के आदी नहीं है। हमें इसका तरीका ढूंढना होगा। वुड ने कहा कि हम खुद को इन पिचों के मुताबिक ढालेंगे। हमारे पास ऐसा कप्तान है जो हमेशा मैच को आगे ले जाने की सोचता है। ऐसे में यह मनोरंजक श्रृंखला होगी। इंग्लैंड के बल्लेबाजों के हालांकि यह इतना आसान नहीं होगा।हैदराबाद क्रिकेट संघ के एक अधिकारी ने बताया कि हमारे पास पिच तैयार करने के लिए पर्याप्त समय है। इससे बल्लेबाजों और गेंदबाजों दोनों को मदद मिलेगी, लेकिन जैसे-जैसे मैच आगे बढ़ेगा, इसमें बदलाव आएगा। मुझे लगता है कि खिलाड़ियों के पास इन परिस्थितियों के मुताबिक खुद को ढालने का पर्याप्त अनुभव है। भारतीय खिलाड़ी ने गुरुवार को यहां नेट अभ्यास सत्र में भाग लिया। टीम के लिए यह वैकल्पिक सत्र था लेकिन तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को छोड़कर सभी खिलाड़ियों ने 2 घंटे से अधिक के इस सत्र में भाग लिया।

# इंग्लैंड ने किया प्लेइंग 11 का ऐलान, 24 वर्षीय स्पिनर करेगा डेब्यू

**हैदराबाद**- इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ हैदराबाद के राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम में खेले जाने वाले पहले टेस्ट के लिए अपनी प्लेइंग इलेवन की पुष्टि कर दी है। मेहमान टीम 24 वर्षीय बाएं हाथ के स्पिनर टॉम हार्टले को पदार्पण का मौका मिला है, जबकि वीजा मिलने में देरी के कारण शोएब बशीर को मुकाबले से बाहर कर दिया गया है। वह अभी तक भारत में टीम में शामिल नहीं हुए हैं लेकिन श्रृंखला की शुरुआत के दौरान उनके देश पहुंचने की उम्मीद है। हार्टले ने अब तक अपने करियर में 20 प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं और 40 विकेट लिए हैं, जिसमें उनके नाम पांच विकेट हैं।

प्लेइंग इलेवन की बात करें तो, टॉम हार्टले के अलावा रेहान अहमद और जैक लीच लाइन-अप में अन्य दो स्पिनर हैं जबकि पूर्व कप्तान जो रूट का टीम में चौथा स्पिनर बनना तय है। दिलचस्प बात यह है कि मार्क वुड के रूप में केवल एक तेज गेंदबाज को सीरीज के शुरुआती मैच के लिए टीम में जगह मिली है जबकि जेम्स एंडरसन के नाम पर हैदराबाद टेस्ट के लिए विचार नहीं किया गया है।

कप्तान स्टोक्स अपने घुटने की समस्या के कारण विशेषज्ञ बल्लेबाज के रूप में खेलने के लिए तैयार हैं, जबकि जैक क्रॉली और बेन डकेट पारी की शुरुआत करना जारी रखेंगे जबकि ओली पोप तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करेंगे। रूट अपना पसंदीदा नंबर चौथा स्थान लेंगे जबकि दो विकेटकीपर जॉनी बेयरस्टो और बेन फोक्स क्रमशः पांचवें और सातवें नंबर पर बल्लेबाजी करेंगे। दिलचस्प बात यह है कि ईसीबी ने अपनी प्रेस विज्ञप्ति में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया है कि विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी कौन संभालेगा। लेकिन फॉक्स अब तक इस भूमिका के लिए सबसे संभावित उम्मीदवार दिखते हैं। बशीर और एंडरसन के अलावा अन्य खिलाड़ी ओली रॉबिन्सन और गस एटकिंसन हैं जो पहले टेस्ट में नहीं खेल पाएंगे।

**भारत के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए इंग्लैंड की प्लेइंग इलेवन**

जैक क्रॉली, बेन डकेट, ओली पोप, जो रूट, जॉनी बेयरस्टो, बेन स्टोक्स (कप्तान), बेन फॉक्स, रेहान अहमद, मार्क वुड, टॉम हार्टले, जैक लीच

# इंग्लैंड ने बैजबॉल खेला तो मैच डेढ़ या दो दिन में खत्म हो सकता है: सिराज

**हैदराबाद**- इंग्लैंड के खिलाफ बहुप्रतीक्षित टेस्ट सीरीज की पूर्व संध्या पर भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज का मानना है कि अगर मेहमान टीम अपने इरादे (बैजबॉल रणनीति) पर अड़ी रही तो मैच डेढ़ या दो दिन में खत्म हो सकता हैं। इंग्लैंड ने आखिरी बार 12 साल पहले भारत में टेस्ट सीरीज जीती थी, जहां एलिस्टर कुक कप्तान थे और स्पिनर ग्रीम स्वान और मोंटी पनेसर के साथ केविन पीटरसन ने 2-1 की जीत में प्रमुख भूमिका निभाई थी। 2021 के दौरे में इंग्लैंड ने चेन्नई में शुरुआती टेस्ट जीता था, लेकिन अगले तीन मैट हारकर भारत से श्रृंखला 3-1 से हार गई।

2012 में इंग्लैंड से 2-1 से हारने के बाद भारत 16 घरेलू टेस्ट श्रृंखलाओं में अजेय है। इस बीच बेन स्टोक्स-ब्रेंडन मैकुलम नेतृत्व समूह के तहत इंग्लैंड ने अभी तक एक भी टेस्ट श्रृंखला नहीं हारी है। सिराज ने जियोसिनेमा पर कहा, अगर इंग्लैंड भारतीय परिस्थितियों में बैजबॉल खेलता है, तो मैच डेढ़ या दो दिन में खत्म हो सकता है। यहां हर बार हिट करना आसान नहीं है क्योंकि गेंद कभी-कभी मुड़ती है और अन्य मौकों पर सीधी जाती है। इसलिए मुझे लगता है कि यहां बैजबॉल को देखना मुश्किल होगा। लेकिन अगर वे इसे खेलते हैं, तो यह हमारे लिए अच्छा होगा क्योंकि मैच जल्दी खत्म हो सकता है।

केपटाउन में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत के आखिरी टेस्ट में, जो इस प्रारूप के इतिहास का सबसे छोटा मैच भी है, सिराज ने प्रोटियाज बल्लेबाजों को 6/15 के शानदार स्पैल से ध्वस्त कर दिया। इसके बाद इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट की तैयारी को ध्यान में रखते हुए उन्हें अफगानिस्तान के खिलाफ टी20ढ्ढ से आराम दिया गया।

### रनों पर नियंत्रण रखना मेरा लक्ष्य

सिराज ने कहा, भारत के उनके पिछले दौरे पर, मैच जल्दी खत्म हो रहे थे। उस श्रृंखला में (2021 में) मुझे लगता है कि मैंने दो मैच खेले। इनमें से एक की पहली पारी में मैंने पांच ओवर फेंके और जो रूट और जॉनी बेयरस्टो के विकेट लिए। इसलिए मैं जितने भी ओवर फेंकूं, उसमें रनों पर नियंत्रण रखना मेरा लक्ष्य होगा। अगर मुझे विकेट मिलते हैं तो ठीक है, लेकिन मुझे धैर्य रखना होगा और बल्लेबाजों पर दबाव बनाना जारी रखना होगा। मैं हैदराबाद में अपने सभी प्रशंसकों का इंतजार कर रहा हूं। खेल के लिए आएं। हम उनसे बहुत प्यार करते हैं और उनके समर्थन की आशा करते हैं।

### निरंतरता को प्रदर्शन का श्रेय दिया

सिराज ने खेल की विभिन्न परिस्थितियों और प्रारूपों में अच्छी तरह से ढलने के लिए अपने प्रदर्शन में निरंतरता को भी श्रेय दिया। उन्होंने कहा, मैं नई गेंद से गेंदबाजी करता हूं, इसलिए मेरी लाइन और लेंथ वही रहती है। मैं चीजें नहीं बदलता, चाहे वह सफेद गेंद हो या लाल। आपको पांच-छह मीटर की लैंथ में गेंदबाजी करनी होगी, क्योंकि नई गेंद के साथ आपको विकेट हासिल करने के लिए इसे पिच करना होगा। उन्होंने कहा, अगर गेंद स्विंग नहीं करती है, तो आपको लंबाई को थोड़ा समायोजित करना होगा। इसलिए मैं निरंतरता खोजने की कोशिश करता हूं और नई गेंद को उसी स्थान पर पिच कराता रहता हूं। चाहे वह नई गेंद हो या पुरानी, मैं इसी पर ध्यान केंद्रित करता हूं। उस निरंतरता ने मुझे अब तक विकेट लेने में मदद की है।

### मैदान के अंदर अपने स्वभाव पर बोले सिराज

मैदान के अंदर और बाहर अपने स्वभाव में अंतर के बारे में सिराज ने कहा, एक तेज गेंदबाज के रूप में मुझे गुस्सा आता है जब कोई मुझे चौका मारता है। मुझे ऐसा लगता है कि मैं उनका हेलमेट तोड़ दूं या अगली गेंद पर उन्हें आउट कर दूं। इसलिए मैं यह सुनिश्चित करता हूं कि मैं हमेशा उत्साहित रहूं और बल्लेबाज को डर महसूस कराऊं। 25 जनवरी को हैदराबाद में पहले मैच के बाद भारत और इंग्लैंड श्रृंखला के अन्य मैच विशाखापत्तनम (2-6 फरवरी), राजकोट (15-19 फरवरी), रांची (23-27 फरवरी) और धर्मशाला (7-11 मार्च) में खेलेंगे।

## वेस्टइंडीज से भिड़ने के लिए ऑस्ट्रेलिया ने टी20 टीम की घोषणा की

**नई दिल्ली**- क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने बुधवार को आगामी तीन मैचों की श्रृंखला में वेस्टइंडीज के खिलाफ 14 सदस्यीय टी20आई टीम की घोषणा की, जो 9 फरवरी से शुरू होगी। बल्लेबाजी ऑलराउंडर मिशेल मार्श को कप्तान बनाया गया है जबकि ग्लेन मैक्सवेल की वापसी हुई है। टेस्ट और वनडे फॉर्मेट से संन्यास ले चुके डेविड वॉर्नर को टी20 टीम में शामिल किया गया है। वॉर्नर के अलावा टिम डेविड और मार्कस स्टोइनिस को भी टीम में रखा गया है। फरवरी के अंत में न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20आई श्रृंखला से पहले अपने कार्यभार को प्रबंधित करने के लिए पैट कमिंस, मिशेल स्टार्क और स्टीव स्मिथ को आराम दिया गया है। 2022 में आरोन फिंच के टी20आई से संन्यास लेने के बाद ऑस्ट्रेलियाई चयनकर्ताओं ने अभी तक 20 ओवर के प्रारूप में अपने स्थायी कप्तान की पुष्टि नहीं की है। दक्षिण अफ्रीका पर 3-0 की जीत के दौरान मार्श ने ऑस्ट्रेलियाई टीम का नेतृत्व किया। हालांकि विकेटकीपर बल्लेबाज मैथ्यू वेड ने भारत दौरे के दौरान टीम की कमान संभाली। तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड को भी 50 ओवर की श्रृंखला से आराम देने के बाद कैरेबियाई टीम का सामना करने के लिए टी20 टीम में शामिल किया गया है। चूंकि हेजलवुड इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 की नीलामी के दौरान अनसोल्ड रहे, इसलिए वेस्टइंडीज और न्यूजीलैंड के खिलाफ श्रृंखला 33 वर्षीय खिलाड़ी के लिए विश्व कप से पहले 20 ओवर के प्रारूप में खेलने का आखिरी मौका होगा।

## संक्षिप्त समाचार

### लट्टू, हाथी-घोड़े से खेलेंगे 5 साल के रामलला

#### गर्भगृह में रखे गए हैं सोने-चांदी से बने कई खिलौने

**अयोध्या (एजेंसी)।** वनवास के बाद भगवान राम के महल लौटने का दृश्य तुलसी कुछ यूं खींचते हैं, 'होहिं सगुन सुभ बिबिधि बिधि बाजहिं गगन निसान। पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान।' (विविध प्रकार के शुगन हो रहे हैं, आकाश में नगाड़े बज रहे हैं। नर-नारियों को अपने दर्शन से धन्य कर भगवान राम अपने महल में चले।) शताब्दियों की प्रतीक्षा के बाद सोमवार को अयोध्या का दृश्य यही था। सोमवार को रामलला अपने भव्य महल में स्थापित हुए। परिसर विभिन्न वाद्ययंत्रों की ध्वनि से गूंज उठा तो आकाश से हेलिकॉप्टरों के जरिए पुष्प भी बरसे। रामलला को जिन आभूषणों और वस्त्रों से सजाया गया है, उनका निर्माण अध्यात्म रामायण, वाल्मीकि रामायण, श्रीरामचरितमानस और आलवन्दार स्त्रोत में वर्णित राम की शोभा के अनुसार हुआ है। आभूषण लखनऊ के एक ज्वेलर्स अंकुर आनंद ने तैयार करवाए हैं। पीतांबर धोती और लाल रंग का पटुका या अंगवस्त्रम वाराणसी से आया है। इन पर सोने की जरी व तारों से वैष्णव मंगल चिह्न- शंख, पद्म, चक्र और मयूर अंकित हैं। इन्हें अयोध्या धाम में रहकर ही दिल्ली के डिजाइनर मनीष त्रिपाठी ने बनाया है। खेलने के लिए खिलौने भी रखे गए हैं। खिलौने- रामलला यहां पांच साल के बालक के रूप में विराजमान हैं, इसलिए उनके खेलने के लिए चांदी का झुनझुना, हाथी, घोड़ा, ऊंट, लट्टू और खिलौना गाड़ी भी गर्भगृह में उनके पास रखी गई है। मुकुट- इसे किरीट भी कहा जाता है। सोने के मुकुट में माणिक्य, पन्ना व हीरा जड़ा है। बीच में सूर्य अंकित है। मुकुट के दाईं ओर मोतियों की लड़ियां पिरोई गई हैं। कुंडल- मयूर आकृति का यह आभूषण भी सोना, हीरा, माणिक्य और पन्ने से बना है। कंठा- गले में पहनाए गए अर्धचंद्राकार आभूषण में मंगल का विधान रचते पुष्प व सूर्यदेव बने हैं। कंठे के नीचे पन्ने की लड़ियां बनी हैं। रंग-बिरंग फूलों की आकृति वाली वनमाला भी धारण करवाई गई है। हृदय पर मणि- रामलला ने हृदय पर कौस्तुभमणि धारण की है, जिसे एक बड़े माणिक्य और हीरों के अंलकरण से सजाया गया है। यह माना जाता है कि भगवान विष्णु व उनके अवतार इस मणि को धारण करते हैं। स्वर्ण वैजयंती माला भी पहने हैं, जिस पर कमल, चंपा, पारिजात और तुलसी का अंकन है। पदिक- नाभिकमल के ऊपर यह हार पहनाया गया है। इसे पंचलड़ा भी कहते हैं, हीरे व पन्ने की इसमें पांच लड़ियां हैं, जिसके नीचे अलंकृत पेंडेंट लगा है। कमर में रत्न जनित करधनी है, जिसमें छोटी-छोटी पांच घंटियां भी लगी हैं। दोनों बाहों में रत्नजणित भुजबंद और कंगन भी पहने हैं। अंगुलियों में मोतियों की लटकन वाली अंगूठियां हैं। पैरों में छड़ा व पैजनियां हैं। चरणों के नीचे कमल है, जिस पर सोने की माला सजाई गई है। धनुष-बाणः बाएं हाथ में सोने का धनुष और दाएं हाथ में बाण है।

दिल्ली में पुरानी कार वालों के लिए गुड न्यूज

# अब पुरानी कबाड़ में दीजिए, नई पर मिलेगी छूट

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** यदि आप दिल्ली में रहते हैं और आपके पास 15 सा पुरानी पेट्रोल कार या 10 साल पुरानी डीजल कार है तो आपके लिए गुड न्यूज है। दिल्ली सरकार ने कबाड़ हो चुके वाहनों को स्क्रैप करने के लिए प्रोत्साहित करने का फैसला किया है। इसके अंतर्गत दिल्ली सरकार ने बेहतर उत्सर्जन मानकों वाले उनके नए गाड़ियों पर रोड टैक्स में 50,000 रुपये तक की सब्सिडी देने का फैसला किया है। अधिकारियों ने कहा कि ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ने वाहनों को स्क्रैप करने पर एक मसौदा नीति तैयार की है। इसे सुझाव आमंत्रित करने के लिए जल्द ही जनता के सामने रखे जाने की संभावना है। अधिकारियों ने कहा कि नीति को फिलहाल मंजूरी के लिए दिल्ली सरकार के वित्त विभाग

को भेजा गया है। इसकी वजह है कि इसमें सब्सिडी के रूप में सार्वजनिक धन का खर्च शामिल है। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने कहा कि अपनी समय सीमा पूरी कर चुके बड़ी संख्या में वाहन शहर की सड़कों पर चल रहे हैं। ये वाहन पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। परिवहन विभाग ने पहले ऐसे वाहनों को जब्त करना और उन्हें कबाड़ियों के पास भेजना शुरू कर दिया था। हालांकि, दिल्ली हाई कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद इस कवायद को रोकना पड़ा। कोर्ट के निर्देश पर अब सरकार ने वाहनों की स्क्रैपिंग पर पॉलिसी का ड्राफ्ट तैयार कर लिया है। एक अधिकारी ने कहा, कॉमर्शियल और प्राइवेट वाहनों पर छूट के अलग-अलग स्लैब हो सकते हैं। नियमों के मुताबिक, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 15 साल पुराने किसी भी पेट्रोल वाहन और 10 साल पुराने डीजल वाहन को चलने की अनुमति नहीं है। सांख्यिकी पुस्तिका - 2023 के अनुसार, 2021-22 और 2022-23 में राजधानी में लगभग 55 लाख वाहनों का रजिस्ट्रेशन रद्द किया गया था। हालांकि, केवल 1.4 लाख वाहनों को स्क्रैप किया गया, जबकि मालिकों ने 6.3 लाख वाहनों को एनसीआर से बाहर रजिस्टर्ड करने के लिए ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट से अनापत्ति प्रमाण पत्र लिया था। एक अधिकारी ने कहा कि यह दर्शाता है कि लोग अभी भी अपने पुराने वाहनों को रखे हुए हैं, या तो उन्हें बेधड़क चलाया जा रहा है। इससे वायु गुणवत्ता संबंधी चिंताएं बढ़ रही हैं। इसके साथ ही ऐसी गाड़ियां आवासीय क्षेत्रों या पार्किंग स्थलों में खड़ी की जा रही हैं। अधिकारी ने कहा कि नई नीति लोगों को पुराने और प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों को हटाने और नए वाहन खरीदने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए लाई जा रही है। अधिकारियों ने कहा कि लोगों को अपने वाहनों को स्क्रैप करने पर %जमा प्रमाणपत्र% जारी किया जाएगा। इसे रोड टैक्स में छूट का लाभ उठाने के लिए नया वाहन खरीदते समय रजिस्ट्रेशन कागजात के साथ संलग्न करना होगा। ये सर्टिफिकेट कुछ वर्षों तक वैध रहेगा। अधिकारियों ने कहा कि रोड टैक्स में रियायत केवल उसी श्रेणी के वाहनों के लिए दी जाएगी जिन्हें स्क्रैप किया जाएगा।

# हरियाणा रोडवेज के ड्राइवर को बस में आया हार्ट अटैक

#### कंडक्टर ने थामा स्टीयरिंग और बचाई 20 यात्रियों की जान

**करनाल (एजेंसी)।** हरियाणा के करनाल जिले में नैशनल हाइवे पर मंगलवार रात को एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। दरअसल चंडीगढ़ से पलवल की ओर जा रही हरियाणा रोडवेज की बस के ड्राइवर को चलती बस में हार्ट अटैक आ गया। जिसके बाद बस में अफरा तफरी मच गई। लेकिन वहां पर परिचालक ने सुझबुझ का परिचय दिया। उसने बस का स्टीयरिंग थामा और उसे साइड पर लगा दिया। बस परिचालक की सूझबूझ से एक बड़ा हादसा होने में टल गया। इसके बाद घटना की सूचना तुरंत पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और ड्राइवर को स्थानीय अस्पताल में दाखिल करवाया गया। बस परिचालक नरेंद्र कुमार ने बताया कि मंगलवार के रात करीब साढ़े 11 बजे हरियाणा रोडवेज पलवल डिपो की बस सवारियों को लेकर फरीदाबाद के लिए रवाना हुई थी। जैसे ही अल सुबह करीब 2 बजे बस घरौंडा सीनियर सेकेंडरी स्कूल के सामने ओवर ब्रिज पर पहुंची तो अचानक ही बस ड्राइवर प्रताप की तबियत बिगड़ गई है। देखते ही देखते प्रताप चलती बस में ड्राइवर सीट पर ही बेहोश हो गया। परिचालक नरेंद्र ने बताया है वह उसके समीप ही कंडक्टर सीट पर बैठा था। जैसे ही बस का संतुलन बिगड़ा और बस डिवाइडर पर चढ़ गई तो बस में बैठी सवारियों में अफरा तफरी मच गई। हादसे के समय करीब 20 सवारियां बस में मौजूद थी। उसने सूझबूझ का परिचय देते हुए स्थिति को संभाला और प्रताप का हालत देखते हुए झट से बस का स्टीयरिंग थाम लिया। उसने चलती बस को समान्य हालत में लाते हुए बस सवारियों की मदद से प्रताप को ड्राइवर सीट से बाहर निकाला और तुरंत पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही डायल 112 की गाड़ी मौके पर पहुंच गई। बस को साइड में लगाकर बेहोश अवस्था में चालक प्रताप को घरौंडा के सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। बस में बैठी सवारियों को अन्य बस के माध्यम से गतन्वय तक पहुंचाया गया। जहां डॉक्टरों ने उसका इलाज शुरू कर दिया और अब बस चालक की हालत ठीक बताई जा रही है।

# अब लता की आवाज में सुनें 'मेरे राम आएंगे' भजन

#### सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा 'एआई' से बना यह मनमोहक गाना

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** सोशल मीडिया पर इन दिनों स्वर कोकिला स्वर्गीय लता मंगेशकर की आवाज में मेरे राम आएंगे वायरल हो रहा है। इसके पहले की आप कुछ और सोचें, हम बता दें कि यह आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (AI) की मदद से तैयार किया गया है लेकिन यह मनमोहक आवाज में यह गाना लोगों को बहुत पसंद रहा है। टेक्नोलॉजी की मदद से आज की तारीख में क्या संभव नहीं है। रामलला की मूर्ति का एआई वीडियो पिछले दिनों सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा था। उनकी मूर्ति का तैयार किया गया जीवंत स्वरूप लोगों को पसंद आया। वहीं अब स्वर कोकिला स्वर्गीय लता मंगेशकर की आवाज में मेरे राम आएंगे गाना हर तरफ छा गया है। इस गाने को आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की मदद से तैयार किया गया है। यह मनमोहक गीत सोशल मीडिया तेजी से वायरल हो रहा है। इस गाने की इतनी मधुर आवाज है कि आप भी इसे एक बार सुनकर दोबारा सुने बिना नहीं रह पाएंगे। वैसे तो एआई की मदद से बनाए गए कई वीडियोज हमें स्क्रॉल करते हुए दिख जाते हैं लेकिन ये वाकई बेहद अलग और खास है। लता मंगेशकर भले ही अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनके गाने हमें हमेशा उनके होने का एहसास कराते हैं और यह रीक्रिएशन भी कुछ ऐसा ही है। पहली बार में सुनकर शायद आपको विश्वास भी ना हो कि यह गाने का एआई वर्जन है। इस गाने को अब तक 65 हजार व्यूज मिल चुके हैं और यह आंकड़ा काफी तेजी से आगे बढ़ रहा है। गाने को यूजर्स जमकर लाइक भी कर रहे हैं। यू-ट्यूब पर अपलोड किए गए इस गाने पर कई लोग कॉमेंट भी कर रहे हैं। एक शख्स ने लिखा है- जीवंत हो गई अमर लता मंगेशकर की मधुर वाणी, धन्यवाद बहुत बहुत धन्यवाद आपका। एक और यूजर ने लिखा है-एआई उनकी आवाज की एसेंस तो कॉपी कर सकती है लेकिन वो इमोशनल नोट्स नहीं कॉपी कर सकती है खासकर उनके आवाज की मिठास।

## छात्रा ने अपने प्रेमी संग रची खुद के किडनैपिंग की साजिश

**भागलपुर (एजेंसी)।** बिहार में प्यार, अपहरण और फिरौती से जुड़ा चौंकाने वाला मामला सामने आया है। जिला नवगछिया में ये हैरान करने वाला केस सामने आया है। यहां एक लड़की ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर खुद के अपहरण की साजिश रच डाली। फिर अपने नाना से 10 लाख रुपये की फिरौती मांगने लगी। जिस पर पुलिस ने कार्यवाही करते हुए साजिश में शामिल लड़की और उसके प्रेमी सहित उसके दो अन्य दोस्तों को गिरफ्तार कर लिया जिसके बाद पूरे मामले का खुलासा हुआ। गिरफ्तार तीनों युवक नवगछिया के श्रीपुर के आयुष कुमार, आशीष कुमार और गौरव कुमार है। पूरा मामला नवगछिया थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 19 में रहने वाले अशोक ने 20 जनवरी को नवगछिया थाने में आवेदन दिया। उन्होंने बताया कि उनकी नतिनी सुबह 10 बजे बनारसी लाल कॉलेज के लिए निकली थी। वो शाम 7-00 बजे तक घर नहीं लौटी तो उसकी खोजबीन शुरू की। पहले कॉलेज गए वहां कुछ पता नहीं चला। इसके बाद जिस कोचिंग में वह पढ़ती है, वहां गए और पूछताछ की। कोचिंग संचालक ने बताया कि वो कोचिंग नहीं आई थी। इसके बाद सगे-संबंधियों से पूछताछ की गई। जब कुछ पता नहीं चला तो नवगछिया थाने में गुमशुदगी का आवेदन दिया। अशोक ने बताया कि 21 जनवरी को अपहर्ताओं ने उनकी नतिनी के मोबाइल से फोन किया और 10 लाख रुपये फिरौती देने की मांग रखी। अगर इसकी सूचना पुलिस को दी तो हत्या करने की धमकी भी दी गई। उन्होंने जब पूछा कि रुपए कहां पर देना तो अपहर्ताओं ने कहा कि इसकी सूचना बाद में देंगे। मामले की गंभीरता को देखते हुए नवगछिया एसपी सुशांत कुमार सरोज ने तत्काल एक टीम का गठन किया और आरोपियों के संभावित ठिकानों पर टीम ने छापेमारी की।

# दिल्ली में 22 साल के युवक की चाकू मारकर हत्या

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली से सनसनीखेज खबर सामने आई है। यहां आनंद पर्वत क्षेत्र में 22 साल के लड़के की दिनदहाड़े चाकू मारकर बेरहमी से हत्या कर दी गई। आरोपी मृतक के पड़ोस में रहता है और डिलीवरी का काम करता है। रिपोर्ट के अनुसार, आरोपी और मृतक के बीच तीखी बहस हुई थी। इसके बाद शख्स की हत्या कर दी गई। घटना की सूचना पाकर पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और जायजा लिया। पुलिस ने शव को बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। फिलहाल मामले में जांच की जा रही है। वहीं घटना की खबर से आस-पड़ोस के लोगों में दहशत है। रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। इसके साथ ही हत्या में इस्तेमाल हुआ चाकू भी बरामद कर लिया गया है। वहीं मृतक की पहचान कमल के रूप में हुई है। वह दिल्ली के पटेल नगर में पंजाबी बस्ती में रहता था। आरोपी का नाम सूरज है, वह डिलीवरी बॉय है। वह कमल का पड़ोसी था। आरोपी पुलिस की गिरफ्त में है। उसने पुलिस पूछताछ में खुलासा किया कि घटना के समय क्या हुआ था? आखिर उसने कमल की हत्या क्यों की। आरोपी सूरज ने पुलिस को बताया कि उसकी सूरज के साथ तीखी बहस हो गई थी। बहस बाद में गाली-गलौज में बदल गई। इसके बाद बात मारपीट शुरू हो गई। इस दौरान उसने आपा खो दिया और आवेश में आकर कमल पर चाकू से हमला बोल दिया। रिपोर्ट के अनुसार, आरोपी को फौरन पास के एक अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। फिलहाल पुलिस ने मामले में आरोपी सूरज के खिलाफ आईपीसी की धारा 302 के तहत मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने अपराध में इस्तेमाल किया गया चाकू भी बरामद कर लिया है। मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है।

# पाकिस्तान में चुनाव से पहले अल्पसंख्यक उम्मीदवारों को वोट न देने के फतवे जारी

इस्लामाबाद, एजेंसी। पूरी दुनिया जहां तकनीक और विकास के पीछे भाग रही है वहीं पाकिस्तान अभी भी धार्मिक मुद्दों में फंसा हुआ है । पाकिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों को निशाना बनाने वाली घृणित प्रसार शुरू होने से 8 फरवरी के आम चुनाव से पहले चिंताएं बढ़ गई हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार इस संबंध में कराची स्थित मदरसा द्वारा एक फतवा जारी किया गया वहीं, फेसबुक और एक्स प्लेटफार्मों पर फिर से एक पोस्ट सामने आया है जिसमें सुझाव दिया गया है कि मतदाता अल्पसंख्यकों के मुकाबले मुस्लिम उम्मीदवारों को प्राथमिकता देते हैं।

द न्यूज इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार फतवा जामिया उलूम इस्लामिया न्यू टाउन द्वारा जारी किया गया था। इसे जामिया बिनोरी टाउन

के नाम से जाना जाता है, जो गुरु मंदिर क्षेत्र के पास स्थित है। इस धार्मिक स्कूल को शहर के सबसे प्रभावशाली मदरसों में से एक माना जाता है। अल्पसंख्यक अधिकार कार्यकर्ता चमन लाल ने फेसबुक पर बिना तारीख वाले फरमान की एक तस्वीर साझा करते हुए कहा, %एक फतवा जारी किया जाता है कि दस लाख से अधिक अल्पसंख्यकों की आबादी से वोट लेना जायज है, लेकिन आज एक फतवा जारी किया गया है कि आम चुनाव में अल्पसंख्यक उम्मीदवारों को वोट देने की अनुमति नहीं है।

फतवा इस सवाल के बाद जारी किया गया क्या इस्लामी कानूनों के तहत गैर-मुस्लिम उम्मीदवार को वोट देने की अनुमति है? प्रश्न में आगे कहा गया कि एक प्रमुख राजनीतिक दल ने बेहतर मुस्लिम उम्मीदवार की उपस्थिति में सामान्य सीट के लिए एक हिंदू को नामांकित किया था, भले ही गैर-मुसलमानों के लिए आरक्षित सीटें थीं. जनता जानना चाहती है कि क्या इस स्थिति में किसी गैर-मुस्लिम को वोट देना इस्लामी दृष्टिकोण से स्वीकार्य है या नहीं, या क्या कोई तीसरा विकल्प है?

## श्रीलंका ने किया इनकार, तो मालदीव ने दे दी चीन के जासूसी जहाज को इजाजत

**माले, एजेंसी।** चीन का एक जासूसी जलपोत मालदीव सरकार की अनुमति मिलने के बाद ईंधन भरने के लिए मालदीव के एक बंदरगाह पर लंगर डालेगा। चीन इसे एक रिसर्च और सर्वे का काम करने वाला जहाज बताता है। लेकिन अमेरिका और भारत सहित कई देशों का मानना है कि ये एक जासूसी जहाज है जो चीन के पड़ोसी देशों पर नजर रखता है। मालदीव के विदेश मंत्रालय ने कहा कि चीन की रिसर्च शिप 'शियांग यांग होंग 3' मालदीव के जलक्षेत्र में रहते हुए कोई रिसर्च कार्य नहीं करेगा। हालांकि भारतीय रक्षा प्रतिष्ठान के सूत्रों ने कहा कि भारत जहाज की आवाजाही पर कड़ी नजर रख रहा है। मालदीव के विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि चीन की सरकार ने 'पोर्ट कॉल' के लिए आवश्यक मंजूरी के वास्ते राजनयिक अनुरोध किया था। 'पोर्ट कॉल' का अर्थ है- यात्रा के क्रम में किसी जहाज

का बंदरगाह पर कुछ देर रुकना। बयान में यह भी कहा गया कि मालदीव हमेशा से मित्र देशों के जहाजों का स्वागत करने वाला गंतव्य रहा है और शांतिपूर्ण उद्देश्यों से असैन्य और सैन्य जलपोतों की मेजबानी करता रहेगा। इसमें कहा गया, ''इस तरह के पोर्ट कॉल न केवल मालदीव और उसके साझेदार देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों का विस्तार करते हैं, बल्कि मित्रवत देशों से आने वाले जहाजों का मालदीव के लोगों द्वारा स्वागत करने की सदियों पुरानी परंपरा को भी प्रदर्शित करते हैं।'' चीनी जहाज को अनुमति भारत और मालदीव के बीच संबंधों में तनाव के बीच दी गई है। मालदीव के नए राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने सत्ता में आने और पदभार संभालने के बाद अपनी पहली विदेश यात्रा के तहत चीन की यात्रा की थी। परंपरागत रूप से, मालदीव के राष्ट्रपति अपनी पहली विदेश यात्रा के तहत भारत की यात्रा करते रहे हैं। घटनाक्रम से अवगत अधिकारियों ने मंगलवार को बताया कि सोमवार को इस शिप ने इंडोनेशिया में सुंडा जलडमरूमध्य के माध्यम से हिंद महासागर क्षेत्र में प्रवेश किया। इसके बाद से भारतीय नौसेना चीनी जहाज पर नजर रख रही है। जहाजों की आवाजाही पर नजर रखने वाली निजी वेबसाइट 'मरीन ट्रैफिक' के अनुसार आठ साल पुराना चीनी जहाज आठ फरवरी को माले के एक बंदरगाह पर लंगर डाल सकता है।

बाइडन को भी प्राइमरी जीतने का भरोसा

# न्यू हैंपशर में रिपब्लिकन-डेमोक्रेट खेमे का मुकाबला रोचक

**वॉशिंगटन, एजेंसी।** अमेरिका में इस साल के अंत में राष्ट्रपति चुनाव का प्रमुख मुकाबला होगा। इससे पहले प्राइमरी और कॉकस चरण में प्रत्याशियों की किस्मत का फैसला हो रहा है। रिपब्लिकन प्रत्याशी के रूप में ट्रंप ने न्यू हैंपशर प्राइमरी में जीत हासिल की। एक रिपोर्ट के मुताबिक पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बाद बाइडन को भी प्राइमरी में जीत हासिल करने का पूरा भरोसा है। अमेरिकी मीडिया के शुरुआती अनुमानों के मुताबिक समर्थकों को एकजुट रखने के लिए बाइडन ने अनौपचारिक रूप से राइट-इन अभियान चलाया।

अमेरिकी सियासत में दो दिग्गजों की सीधी टक्कर

सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक बाइडन के राइट-इन अभियान से पहले डेमोक्रेट खेमा हताश होने लगा था। न्यू हैंपशर में चुनावी अभियान के प्रति बाइडन की कथित उदासीनता, कम उत्साह और तुलनात्मक रूप से नाम की कम चर्चा को लेकर डेमोक्रेट खेमा शर्मनाक हार की आशंका से जूझ रहा था, लेकिन अब तस्वीर बदल चुकी है। बाइडन प्राइमरी में जीत की औपचारिक घोषणा के बाद पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप को सीधी टक्कर देंगे।

**81 साल के बाइडन की जीत प्रतीकात्मक होगी:** सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक न्यू हैंपशर में बाइडन 21 उम्मीदवारों की सूची में शामिल नहीं थे। रिपोर्ट्स के मुताबिक इसका कारण डेमोक्रेट गुट में आंतरिक पार्टी संघर्ष के कारण उन्होंने प्राइमरी के साथ-साथ परिणामों के लिए भी पंजीकरण नहीं कराया। इसके बावजूद 81 साल के बाइडन की जीत को प्रतीकात्मक माना जाएगा। पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप से मिल रही सीधी और मजबूत टक्कर के बीच डेमोक्रेट खेमा न्यू हैंपशर प्राइमरी के परिणाम का स्वागत करेगा।

**आंतरिक कलह के कारण डेमोक्रेट खेमा चिंतित; अब बदल चुके हैं समीकरण?:** अमेरिकी चुनाव से पहले हुए कुछ सर्वे और स्थानीय मीडिया की रिपोर्ट्स के मुताबिक ट्रंप इस साल के अंत में चुनाव से पहले बाइडन के मुकाबले बेहतर स्थिति में दिख रहे हैं। काफी बड़ी संख्या में जनता बाइडन से असंतुष्ट भी दिख रही है।

इन कारणों से डेमोक्रेट खेमा चिंतित था और उसका मानना था कि बाइडन को पर्याप्त समर्थन नहीं मिलेगा। चिंता बढ़ने के बीच बाइडन के समर्थकों ने ग्रेनाइट स्टेट में राइट-इन अभियान को बढ़ावा देना शुरू किया। खुद बाइडन न्यू हैंपशर में प्रचार करने नहीं पहुंचे। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक उत्तरी वर्जीनिया में बाइडन और उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने चुनाव प्रचार की शुरुआत की। दोनों ने गर्भपात के अधिकारों का समर्थन करते हुए रैली की मेजबानी की थी। दक्षिण कैरोलिना में मिला समर्थन भी बाइडन को मिली बढ़त का अहम कारण है।

**चुनाव से पहले सर्वे में हैरान करने वाले नतीजे:** मिशिगन-जॉर्जिया दो अहम राज्य हैं। दोनों राज्यों में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, वर्तमान राष्ट्रपति बाइडन के मुकाबले मजबूत स्थिति में हैं। सीएनएन के सर्वेक्षण में पाया गया है कि दोनों राज्यों की बहुमत आबादी राष्ट्रपति बाइडन के काम से खुश नहीं है। एसएसआरएस की तरफ से कराए गए सर्वेक्षण के मुताबिक बाइडन के कार्यकाल में उनके प्रदर्शन, नीतियों और तत्काल कार्रवाई जैसे पहलुओं पर बड़ी आबादी के विचार नकारात्मक हैं। बाइडन के पास ट्रंप की तुलना में 2020 से भी कम समर्थक हैं। सीएनएन के मुताबिक, ये आंकड़े दोनों उम्मीदवारों के लिए संभावित चुनौतियों का संकेत देते हैं।

## श्रमिकों को ले जा रहा विमान टेक-ऑफ के बाद दुर्घटनाग्रस्त, छह की मौत; बढ़ सकती है हताहतों की संख्या

**ओटावा, एजेंसी।** उत्तरी कनाडा में मजदूरों को खदान में ले जा रहा एक छोटा यात्री विमान उड़ान भरने के तुरंत बाद ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में छह लोगों की मौत हो गई। सूत्रों के अनुसार, इस हादसे में एक व्यक्ति की जान बच गई है। हालांकि, व्यक्ति की हालत के बारे में फिलहाल कोई जानकारी नहीं दी गई है।

**उड़ान भरने के तुरंत बाद ही विमान दुर्घटनाग्रस्त:** विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद सेना और संघीय पुलिस मौके पर पहुंचीं। बचावकर्मियों ने मलबा बरामद किया। ट्रेंटन, ओंटारियो में संयुक्त बचाव समन्वय केंद्र ने कहा कि सुबह के 8-50 बजे उड़ान भरने के तुरंत बाद ही विमान से संपर्क टूट गया था। शहर के एक अस्पताल ने बताया कि उन्होंने अपने सामूहिक प्रोटोकॉल को सक्रिय कर दिया है। जबकि, आर्कटिक क्षेत्र के प्रमुख कोरोनर गार्थ एगरबर्गर ने कहा कि मृतकों की गिनती जारी है। उन्होंने इसके अलावा कोई अन्य जानकारी नहीं दी है।

जेटस्ट्रीम ट्विन टर्बोप्रॉप एयरलाइनर का संचालन करने वाली नॉर्थवेस्टर्न एयर ने बताया कि यह एक चार्टर विमान था, जो श्रमिकों को खदान तक ले जा रहा था। रनवे से 1.1 किलोमीटर दूर ही विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। फिलहाल फोर्ट स्मिथ से सभी विमानों को रोक दिया गया है। इस हादसे की जांच के लिए कनाडा के परिवहन सुरक्षा बोर्ड ने एक टीम तैनात किया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129